

स्वर्गवासी साधुचरित श्रीमान् डालचन्दजी सिंघी



जन्म

वि. स. १९२१, मार्ग वदि ६

स्वर्गवास

वि. स. १९८४, पौष सुदि ६

सिं घी जै न ग्र न्थ मा ला

*****[ग्रन्थांक ५]*****

महाभारत - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्वरूप सु कृ त की र्ति क ह्यो लि न्या दि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह



SINGHI JAIN SERIES

*****[NUMBER 5]*****

SUKṚTA KIRTIKALLOLINI

AND

other panegyric and historical records describing the good deeds
of the great minister Vastupal of Gujarat by various authors

क ल क चा नि या सी
साधुचरित-श्रेष्ठिर्वयं श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त
प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथारत्मक-इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूढ, -राजस्थानी आदि भाषा भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन
वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशित सत्येष्ट जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यारसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिन विजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररी डॉयरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

ऑनररी फाउंडर-डायरेक्टर

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर (राजस्थान)

ऑनररी मेंबर जर्मन ओरिएण्टल सोसायटी, जर्मनी, भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना
(दक्षिण), गुजरात साहित्यमहा, अहमदाबाद (गुजरात), विद्वेश्वरानन्द वैदिक
शोध प्रतिष्ठान, होशियारपुर (पञ्जाब) इत्यादि ।

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

व्यवस्थापक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षा पीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

प्रकाशक-व. द. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, नं. ७

मुद्रक-गुणवन्द देववन्द, महोदय प्रिटींग प्रेस, भावनगर.

महामाल्य - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्वरूप
उदयप्रभाचार्यादि - अनेक - कविविरचित
सु कृ त की र्ति क लो लि न्या दि
वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह

ॐ

संपादनकर्ता

अनेकग्रन्थभाण्डागारोद्धारक - विविधदुर्लभग्रन्थसंशोधक

जिनाभमप्रकाशकारि - प्रतिष्ठानप्रवर्तक

आगमप्रभाकर - मुनिप्रवर - श्रीपुण्यविजय सूरि ।



प्रकाशनकर्ता

अधिष्ठाता, सिं घी जै न शा स्त्र शि क्षा पी ठ
भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ॐ

विद्यमान २०१६]

प्रथमावृत्ति

[विलम्ब १९९१]

ग्रन्थांक ५]

गोपिचन्द्र श्रुति

[मूल्य रु० ६/६०]

SINGHI JAIN SERIES

३३ अथावधि मुद्रितग्रन्थ नामावलि ३३

- १ मेष्टुजाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि
मूल संस्कृत ग्रन्थ.
- २ पुरातनप्रबन्धसंग्रह बहुविध ऐतिहासिकपरिपूर्ण
अनेक प्राचीन लिख्य सुवय.
- ३ राजशेखरसूरिरचित प्रबन्धकोश.
- ४ जिनप्रभसूरिकृत विविधतीर्थवर्णन.
- ५ मेघविजयोपाध्यायकृत देवानन्दमहाकाव्य.
- ६ यशोविजयोपाध्यायकृत जैतवर्कभाषा.
- ७ हेमचन्द्राचार्यकृत प्रमाणसीमांसा.
- ८ महाकलदेवकृत अक्षरद्वयमन्थरी.
- ९ प्रबन्धचिन्तामणि - हिन्दी भाषांतर.
- १० प्रभावचन्द्रसूरिरचित प्रभावचरित.
- ११ सिद्धिचन्द्रोपाध्यायरचित भाग्यचन्द्रगणितरित.
- १२ यशोविजयोपाध्यायरचित शानविन्दुमकरण.
- १३ हरिपेयाचार्यकृत बृहत्कृपाकोश.
- १४ जैनपुस्तकप्रशिक्षसंग्रह, प्रथम भाग.
- १५ हरिमन्दसूरिरचित धर्माध्यायन. (माहृत)
- १६ दुर्गादेवकृत प्रष्टसमुच्चय. (प्राकृत)
- १७ मेघविजयोपाध्यायकृत दिग्विजयमहाकाव्य.
- १८ कवि बच्चल रहमानकृत सन्देशरासक. (अपभ्रंश)
- १९ मर्वुहिरकृत शतकप्रयागि सुभाषितसंग्रह.
- २० शास्त्राचार्यकृत न्यायावधारणार्थिकचूचि.
- २१ कवि धाहिररचित पटमसिरीचरित. (अप०)
- २२ महेधरसूरिकृत भाणवर्धनीकहा. (प्रा०)
- २३ श्रीमदबाहुआचार्यकृत मद्रबाहुसंहिता.
- २४ जिनधरसूरिकृत कथाकोषप्रकरण. (प्रा०)
- २५ उदयप्रभसूरिकृत धर्माध्यायमहाकाव्य.
- २६ जयसिंहसूरिकृत धर्मापदेशमाहा. (प्रा०)
- २७ कोऊलसूरिरचित रत्नावली कथा. (प्रा०)
- २८ जिनदत्ताचार्यकृत. (प्रा०)
२९. ३० ३१ स्वर्णसूरिरचित पटमचरित.
भाग १, २, ३ (अप०)
- ३२ सिद्धिचन्द्रकृत काव्यप्रकाशतण्डन.
- ३३ दामोदरपरिवृत कृत उक्तिव्यक्तिप्रकरण.
- ३४ मित्रमित्र चिह्नकृत कुमारपालचरितसंग्रह.
- ३५ जिनपालोपाध्यायरचित खरतराष्ट्र बृहद्गुणवलि
- ३६ उद्योतनसूरिकृत कुवलयमाला कथा. (प्रा०)
- ३७ गुणपालमुनिरचित अंबुवारीष. (प्रा०)
- ३८ पूर्वाचार्यरचित जयपामन-निमित्तकाव्य. (प्रा०)
- ३९ भोजनूपतिरचित व्यासमहर्षी. (संस्कृत कथा)
- ४० धनसारगणीकृत-भर्तृहरिसातकप्रदीपिका.
- ४१ कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र-सटीक. (कविप्रयत्न)
- ४२ विश्वसिलेखसंग्रह विश्वसिलेख-विश्वसिलेखी
आदि अनेक विश्वसिलेख समुच्चय.
- ४३ महेन्द्रपरिवृत नर्मदासुवर्णिका. (प्रा०)
- ४४ हेमचन्द्राचार्यकृत-छन्दोऽनुशासन.
- ४५ वस्तुपालगुणवर्णनात्मक काव्यद्वय
कीर्तिकौमुदी तथा सुकृतसंकीर्तन
- ४६ सुकृतकीर्तिकौमुदी आदि वस्तुपालप्रशिक्षसंग्रह.

Shri Bahadur Singh Singhi Memoirs Dr. G. H. Bühler's Life of Hemachandrāchārya. Translated from German by Dr. Manilal Patcl, Ph. D.

- 1 स. बाबू श्रीबहादुरसिंहजी सिंघी स्मृतिग्रन्थ [भारतीयविद्या भाग ३] सन १९४५.
- 2 Late Babu Shri Bahadur Singhji Singhi Memorial Volume
BHARATIYA VIDYA [Volume V] A. D. 1945.
- 3 Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and its Contribution
to Sanskrit Literature. By Dr. Bhogilal J. Sandesara,
M. A., Ph. D. (S.J.S.33.)
- 4-5 Studies in Indian Literary History. Two Volumes.
By Prof. P. K. Gode, M. A. (S. J. S. No. 37-38.)

३३ संप्रति मुद्र्यमाणग्रन्थनामावलि ३३

- १ विविधगण्ठीय पद्यावलि-संग्रह.
- २ जैनपुस्तकप्रशिक्षसंग्रह, भाग २.
- ३ जयसोमरचित मंत्रीकर्माचन्द्रवंशप्रबन्ध.
- ४ गुणप्रभाचार्यकृत विजयवर्णन. (बौद्धकाव्य)
- ५ रामचन्द्रकविरचित-महाराजमन्दारनाथकथा
- ६ लक्ष्मणभाषाचार्यकृत पराशरपञ्चकलाज्ञानबोधवृत्ति
- ७ मयूरसूरिकृत मूलमुद्रियप्रकरण-सटीक.
- ८ कुवलयमाला कथा, भाग २
- ९ सिद्धिलिख्यरचित मन्त्रांतरप्रकरण.

विपयानुक्रम

किञ्चित् प्रास्ताविक

१ वस्तुपालधर्मगुरु नागेन्द्रगच्छीय श्रीउदयप्रभस्वरि विरचित		
मुक्तकीर्ति कल्लोलिनी, पद्य सं. १७९	पृ.	१-१६
२ उदयप्रभस्वरिकृत वस्तुपालस्तुति, पद्य संख्या ३३	"	१७-२०
३ मलधारगच्छीय श्रीनरचन्द्रस्वरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. २६	"	२१-२३
४ मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रप्रभस्वरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. १०४	"	२४-२९
५ नरेन्द्रप्रभस्वरिरचित द्वितीय प्रशस्ति, पद्य सं. ३७	"	३०-३३
६ श्रीजयसिंहस्वरिविरचित वस्तुपाल-तेजःपाल प्रशस्ति, पद्य सं. ७७	"	३४-३९
७ वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १३	"	४०
८ नरनारायणानन्दकाव्यप्रान्तलिखित वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १८	"	४१-४३
९ उपदेशतरङ्गिणीग्रन्थगत वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य १	"	४३
१० गिरनारतीर्थस्य वस्तुपालप्रतिष्ठित नेमिनाथप्रासादप्रशस्ति क्रमांक १	"	४४-४६
११ " " क्रमांक २	"	४६-४८
१२ " " " ३	"	४८-५०
" " " ४	"	५०-५३
१३ " " " ५	"	५३-५५
१४ " " " ६	"	५५-५८
१५ गिरनारतीर्थस्थित अन्य प्रकीर्ण लेख ४	"	५८
१६ अर्बुदाचलतीर्थस्य ल्घुवसहिकागत लेखसंग्रह	"	५९-७५
१७ तारणदुर्गस्य लेख	"	७५
१८ शशुंजयपात्रस्थित लेख	"	७५-७६
१९ अणहिलपुरस्थित शिलालेख	"	७६
२० अर्बुदाचलस्थित अन्यलेख	"	७६-१
२१ स्तंभतीर्थीय शिलालेख	"	७६-२
२२ गणेशग्रामगत शिलालेख	"	७६-३
२३ नगरग्रामगत शिलालेख	"	७६-४
२४ वस्तुपालतीर्थपात्रा लेख	"	७७
२५ उदयप्रभाचार्यकृत उपदेशमालाकर्णिक वृत्तिगत वस्तुपालवर्णन	"	७८-८०
२६ सोमेश्वरकविकृत मुरयोत्सवकाव्यगत वस्तुपालवंशवर्णन	"	८१-८७
२७ वस्तुपालविरचित नरनारायणानन्द काव्यगत प्रशस्त्यात्मकवर्णन	"	८८-९०
२८ वस्तुपालविरचित आदिनाथ स्तोत्र	"	९१-९२
२९ " नेमिजिनस्तव	"	९३
३० " अम्बिकादेवीस्तोत्र	"	९४

३१ महामात्य वस्तुपालकृत आराधना	पृ.
३२ वस्तुपाल संबन्धित ग्रन्थान्तपुष्पिकालेख	" ९१
३३ विजयसेनस्वरि रचित रेवंतगिरि रास	" ९९
३४ पाल्दणपुत्रकृत आद्युत्सव	" १०१

परिशिष्ट

१ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि प्रशस्ति पद्यानुक्रमणिका	" १११
२ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि रचनागत विशेषनामानुक्रमणिका	" १२८

किञ्चित् प्रास्ताविक

*

प्राचीन महागुजरातके महामात्य वस्तुपाल तेजपाल (दोनों बन्धु) के नाम बहुविश्रुत है। इनके जीवन वृत्तान्तके विषयमें इंग्रजी, जर्मन, गुजराती एवं हिन्दीमें बहुत कुछ लिखा गया है। इन सबमें विशेष रूपसे उल्लेखयोग्य इंग्रजी ग्रन्थ डॉ. भोगीलाल सडेसरा, एम्. ए., पीएच्. डी. (डायरेक्टर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा युनिवर्सिटी) का लिखा हुआ 'लिटरेरि सर्कल ऑफ महामात्य वस्तुपाल एण्ड इट्स कोन्ट्रीब्युशन टु संस्कृत लिटरेचर' (Literary circle of Mahāmātya Vastupāla and Its contribution to Sanskrit Literature) है, जिसमें इस विषय पर बहुत ही प्रमाणभूत एवं गंभीर अव्ययनपूर्ण विवेचन किया गया है। सिंधी जैन ग्रन्थमालाके ३३ वें ग्रन्थके रूपमें, कोई ९-१० वर्ष पहले हमने इसे प्रकाशित किया। इसके पूर्व ही, सन् १९४९ में, हमने इसी ग्रन्थमालाके चतुर्थ ग्रन्थके रूपमें, वस्तुपालके मुख्य धर्मगुरु आचार्य उदयप्रभ सूरिका बनाया हुआ संस्कृत काव्यात्मक बड़ा ग्रन्थ 'धर्मान्मुदय महाकाव्य' प्रकाशित किया, जिसका संपादन विद्वद्बर्ष्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज और इनके दिवंगत गुरुवर्य श्री चतुरविजयजी मुनिमहाराजने किया है।

इस 'धर्मान्मुदय महाकाव्य' के प्रास्ताविक वक्तव्यमें, हमने वस्तुपाल मंत्रीके जीवनवृत्त और तत्कालीन इतिहास पर विशिष्ट प्रकाश डालनेवाली, तथा उस मंत्रीके समयमें विद्यमान एवम् उससे संबंधित जिन विद्वानोंने काव्य, प्रबन्ध, प्रशस्ति, रास आदि जो रचनाएँ की हैं, उनका संक्षिप्त परिचयात्मक निर्देश किया था और साथमें यह भी सूचित किया था कि—हम भविष्यमें वस्तुपाल विषयक यह सब फुटकल ऐतिहासिक साहित्य, संकलित कर, एक या दो भागोंमें, प्रकट करना चाहते हैं। हमारे इस विचारको मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजने भी बहुत पसन्द किया और इन्होंने खयं इसका संपादन कार्यभी सहर्ष स्वीकार किया। प्रस्तुत संग्रह उसी विचारके फल स्वरूप तैयार हुआ है।

इस संग्रहमें वस्तुपाल विषयक जितने भी प्रशस्त्यात्मक प्रबन्ध, शिलालेख, ग्रन्थपुष्पिकारं एवम् रास आदि कृतियाँ मिल सकीं, उन सबका एकत्र समावेश कर दिया गया है। आशा है कि ऐतिहासिक तथ्योंकी खोज करने वाले अम्यासिधोंके लिये यह बहुत उपयुक्त संकलन सिद्ध होगा।

इस संग्रहका संपादन कार्य तो प्रायः सन् १९५० में पूरा हो गया था। इसका मुद्रण कार्य भावनगरके एक प्रेसमें कराया गया था; पर बादमें इसके सब छपे फर्में बर्द्धमें भारतीय विद्या भवनम 'मगवा लिये गये थे। स्थान बगैरहकी ठीक सुविधा न होनेसे अनेक वर्षों तक ये फर्में इधर उधर घूमते-फिरते रहे और फिर हमारा भी स्थानान्तरण होता रहा। इससे, उक्त धर्मान्मुदय महाकाव्यके प्रास्ताविकमें उल्लिखित कथनानुसार हम इसे शीघ्र प्रकाशित करनेमें असमर्थ रहे। पर हर्षका विषय है कि इतने वर्षोंके बाद भी, अब यह संग्रह समुचित रूपसे प्रकाशमें आ रहा है। पूर्व पुरुषोंके गुणकीर्तनात्मक पुष्प कभी धासी नहीं होते। जब भी वे गुणप्राहकोंके हाथोंमें उपस्थित होते हैं तब शिरोधार्य ही होते हैं।

इसके संपादन कार्यके विषयमें मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजके प्रति, उक्त धर्मान्मुदय काव्यके प्रास्ताविक वक्तव्यके अन्तमें, जो अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव हमने प्रकट किया है—वही यहाँ पुनरुल्लिखित करना चाहते हैं कि—“इस संग्रहका संपादन करके इस ग्रन्थमाला के प्रति अपना जो विशिष्ट ममत्व भाव प्रदर्शित किया है और उसके द्वारा सौहार्दपूर्ण सहकार प्रदान कर मुझको जो उपकृत किया है, उससे सौजन्यमूर्ति परमब्रह्मास्पद मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराजका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।”

इस संग्रह के साथ ही इसका समानविषयक एक अन्य संग्रह प्रकट हो रहा है जिसमें सोमेश्वर विरचित कीर्ति कौमुदी तथा अरिसिंह कविकृत सुकृत संकीर्तन काव्य संकलित है। संपादन कार्य भी इन्हीं मुनिवरने किया है। पहले ये दोनों संग्रह एक ही ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित जानेकी कल्पना रही थी, पर पीछेसे इसके साथ डॉ. ब्यूहलर आदिके लिखित उन ग्रन्थोंके संबन्धके निबन्ध भी उसमें सम्मिलित करनेकी कल्पनासे उसको अब पृथक् ग्रन्थके रूपमें प्रकट किया जा रहा है

अनेकान्तविहार, अहमदाबाद.
काल्पनी पूर्णिमा, सं. २०१७
सा. २, मार्च, १९६१.

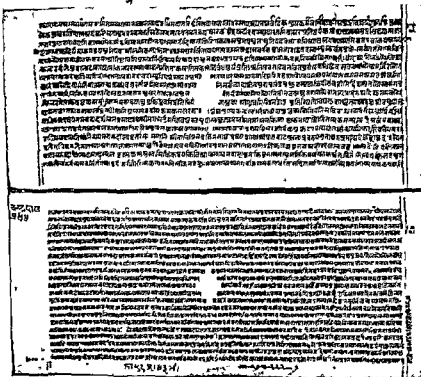
}

— मुनि जि न वि ज य

१

— आभार प्रदर्शन —

प्रस्तुत वस्तुपाल प्रशस्त्यात्मक संग्रह ग्रन्थके प्रकाशन ध्येयमें भारत सरकारकी ओरसे आधा हिस्सा सहायताके रूपमें मिला है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति अपना साभार कृतज्ञभाव प्रदर्शित करना चाहते हैं।



अनुसन्धानमयस्थित - देहलसंयमनमनजरोत्पत्त्य वस्तुपालप्रशस्तिग्रन्थ की
प्रति के आण्टन पर

प्रथमं परिशिष्टम् ।

नागेन्द्रगच्छभूपामणिभिः श्रीमद्भुदयप्रभाचार्यैर्विरचिता

—चस्तुपालान्वयप्रशस्तिरूपा—

सुकृतकीर्तिकलोलिनी ।



पञ्चजिनस्तुतिरूपं मङ्गलम्

चिन्तातीतफलप्रदः स दिग्गुत्त श्रेयो पुष्पादिप्रभुर्भोजुर्जन्मनि यस्य कल्पतरुः सर्वेऽप्युपादानताम् ।
नेतृं चेत् कथमन्यथा वसुनतीमस्मिन्नलङ्घयति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जग्मुर्जगच्चक्षुषाम् ॥ १ ॥
पापं पङ्कजयन् मुदं कुमुदयन् मोहं तमःस्तोमयन्, बुद्धिं तोयंययन् नतिप्रणयिनां चन्द्राश्मयन् लोचनम् ।
पीयूषप्रतिमल्लनिर्मलगवीप्रक्षालितक्ष्मातलरुतापञ्चापदपास्तयेऽस्तु जगतः श्रीमान् मृगाङ्गो जिनः ॥ २ ॥
श्रीनेमिर्नवनीलनीरजरुचिः श्रेयांसि निःश्रेयसश्रीविश्रान्ततनुस्तनेषु कृतिनां सौभाग्यमङ्गीगुरुः ।
सज्जः कज्जलकालिमा त्रिजगतीलीलावतीनेत्रयोर्देहेद्युतिपानचिह्नवदसावद्यापि विद्योतते ॥ ३ ॥

परमपदपुराणद्वारभूतो विमूल्यै, स भवतु भवभाजां पार्श्वनाथो जिनेन्दुः ।

यदुपरि परिणामं तोरणसम्पन्नानां, कलयति महद्देवतुर्भोगिनेषुः फणाली ॥ ४ ॥

छात्रोत्तेजितनोरभीरभिनमोगर्भं सर्गभीकृतच्छायास्य च्छविभिः सुरस्य शिरसि स्वर्णद्युतिः शैशवे ।
वीक्ष्यैव क्षणतः प्रदक्षिणविधिपद्मेषु वैमानिकप्राम्गारेषु सुपर्वपर्वततुलां वीरः श्रयन् वः श्रिये ॥ ५ ॥

सरस्वत्याः स्तवनम्

पुण्यैकहेतुं रसिनीरजन्मप्रभापट् रूपचितप्रभावैः ।

श्रीवर्द्धमानस्य जिनेश्वरस्य, वाचः क्रमौ वक्त्रमपि स्मरामि ॥ ६ ॥

लीलासञ्चरणं च नूपुररणत्कारश्रियं च स्वयं, श्रोतुं साधु निषेव्यते खगकुलोच्छंसेन हंसेन या ।

किञ्चलकमसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सैतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥ ७ ॥

कविस्तुतिः

जीयासुः कवयो नवोत्तमगुणप्रभामिरामश्रियः, सर्वे शास्त्रतरङ्गिणीपरिवृद्धोल्लासैकचन्द्रोदयाः ।

येषां कीर्तिरुदारवैभवमवत्प्रीदमवन्धावलीकल्लोला भुवनेषु पञ्चमपयोराशिश्चिं ग्राहते ॥ ८ ॥

१ मदं मुद्रिते ॥ २ 'यदयन्' मुद्रिते ॥ ३ 'हेतुं रं' मुद्रिते ॥ ४ सदा मं मुद्रिते ॥

चापोत्कटवंशीयराजवर्णनम्

राजा श्रीवनराज इत्यभिधया चापोत्कटः कोऽप्यभूत्, गोत्रेण क्रियया च कश्चन वनाद् वीरः समभ्युत्थितः ।
सूर्येणापि जितेन यस्य महसा बाल्येऽपि दोलतरुच्छाया नाम न नामिता दिशि दिशि क्रोधारुणं धावता ॥९॥
सूर्या-चन्द्रमसौ कदाऽप्युदयतश्चेत् पश्चिमायां ततो, राज्यं स्यादिह सन्धयेति सुतया देशं समुद्राह्वयन् ।
येनास्यां दिशि वर्धमानमहसा राज्ञा च खरेण च, प्राप्तिनाभ्युदयं महोदयपतिः पूर्णप्रतिज्ञः कृतः ॥ १० ॥

भूपा भुवोऽणहिलपाटकनामधेया, येन व्यधायि किल गूर्जरराजधानी ।

यत्रोदयववनवाद्भुतभोगभाभ्यश्रीणां नृणां बहुवृणं त्रिदशोक्तोऽपि ॥ ११ ॥

एकाऽपि प्रमदा मदालसवपुर्वत्र प्रपापालिका, विभ्राणा करकैरवेण करकं पूर्णं जलैरुज्ज्वलैः ।

रत्नस्तम्भमवलज्जगतिः कृतप्राज्ञलीनं, यूनो वीक्ष्य मृदुस्मितेन तनुते लज्जबिलक्षस्थितीन् ॥ १२ ॥

अस्मिन्नुन्नतवेदममौलिषु भवान् भावी सखेदः सखे !, चक्रप्रस्वलनाकुलीकृतस्थस्तस्मादितो गम्यताम् ।

भिन्नान्तस्तमसः सुवर्णकलशाश्चैत्यालिचूलाजुपः, संज्ञां चक्रुर्धीरकेतनकरैर्यत्रेति मित्रं प्रति ॥ १३ ॥

स्फूर्जद्गूर्जरमण्डलावनिवधूवक्त्रोपमेऽस्मिन् पुरे, चैत्यं किञ्च निशेपकं व्यरचयत् पश्चात्सराहं नृपः ।

यस्योच्चैः कलशश्चकास्ति रुचिभिः किञ्चिद्विमित्ताम्बरश्यामत्वव्यपदेशकेशपदवीसीमन्तसीमामणिः ॥ १४ ॥

धात्रीधुरीणभुजनिर्जितभोगिराजः, श्रीयोगराज इति भूरमणस्ततोऽभूत् ।

यस्य प्रतापतरिणस्तरवारिमेघमूर्च्यन्तरेण नवकीर्तिजलं वर्षत् ॥ १५ ॥

आसीदीशो दोष्मदादित्यरत्नादित्यो रत्नादित्य इत्यस्य पट्टे ।

तीव्रं तेजोवद्विमहाय यस्यावर्षत् खड्गः शत्रुसंवर्तकाब्दः ॥ १६ ॥

जातः करीन्द्रोच्चुरवैरिसिंहः, श्रीवैरिसिंहस्तदिलविलासी ।

यत्कीर्तिकुल्या स्तुतिकैतवेन, चिकीड लोकाननकाननेषु ॥ १७ ॥

श्रीशेमराज इति तद् विरराज राजा, येनोद्भूतेऽपि भुवने कृश एव शेषः ।

विस्मृत्य नृत्यदुरगीभरगीयमानतत्कीर्तिपानरसिको रसनं मुधायाः ॥ १८ ॥

राजा चापुण्डराजस्तद्, भूमण्डलमण्डयम् । सत्तर्प विधे यस्याऽऽज्ञा, नरेन्द्रैरप्यलङ्घिता ॥ १९ ॥

चौलुक्यवंशीयनरपतिवर्णनम्

आहङस्तद्वज्रनि क्षितिनेता, यस्य बाहुरिह नृजनराहुः ।

एककालगिलितौ रिपुतेजः-कीर्तिमूर्त्य-शशिनी न मुमोच ॥ २० ॥

नम्रारिन्दुमुखीमुखेन्दुविजयस्मेरकाम्गोरुहः, श्रीभूमिभुवनैकभूषणममूर्त् तद्गर्विभुर्भूभटः ।

यत्कीर्तिर्गंगेनेऽपि पुष्पनिकरः स्वर्गेऽपि दुग्धोदधिः, क्षमावण्डेऽपि हरस्मिते विलसति श्वश्रेऽपि चन्द्रप्रभा ॥ २१ ॥

पीनश्रीर्भुजपन्नमोऽजनि यशोवार्धार्जजुम्भे मुहुः, कम्पं खड्गलता ततान परितो जज्वाल त्रेजोऽनलः ।

यस्य धुण्णविपक्षवर्गवनितानिःश्रासवतोर्मिभिर्जेतुः केतुचलाऽप्यमृदविचला चित्रं जयश्रीरसौ ॥ २२ ॥

स्वस्तीयः क्षयति स्म तस्य पदवीं चौलुक्यलक्ष्मीशिरोमाणिक्यं हिमवद्विजिष्णुमहिमा श्रीमूलराजो नृपः ।

रेजे यस्य तमोरिपुस्त्रिपुरुषप्रासादकेतुच्छलादाकाशेऽपि विकाशिकाशविशदा कीर्तिलिमागो नदी ॥ २३ ॥

१ छुनया कां ॥ २ च शरैः सुदिते ॥ ३ जेत्ये सुदिते ॥ ४ 'त्' पद्मविभुं कां ॥

स्वैकान्तसिन्धुपतिलक्षसमुद्भूतश्रीकोटिर्यदीयतरवारिवारितौजाः । ।

कीर्त्याऽहसद् दिवि हरिं सुर-दैत्य-शेषक्षुब्धैकसिन्धुकलितैकमसिञ्चयं तम् ॥ २४ ॥

तेजःसूजितदीपदीपिनि मुधाशोभैर्यशोभिः शुभे,

विश्वच्छन्ननिवाससन्ननि वशी भूमिं मुनक्ति स्म यः ।

शत्रुस्त्रीनयनोदबिन्दुजतृणस्तोमेन रोमाञ्चितां,

सेनाभिः परिकम्पिनीं परिवृद्धो योद्धा नवोदामिव ॥ २५ ॥

पाण्डवः पाखण्डिवेषं वहति नवहतिव्रातसम्पातभीरुः,

कीरः कर्णाटवीरस्त्यजति रणमुवं व्याकुलो मालवेन्द्रः ।

वाच्यं किञ्चिल कान्तीश्वरचरितमसावालुरः कस्तुरङ्गः,

क्षमाचक्रान्तिभीमे प्रसरति सततं यत्प्रतापप्रभावे ॥ २६ ॥

मेजे तेजोगगनगहने यस्य पिङ्गसुलिङ्गभ्रान्ति बालारुणमणिरुचं प्राप कीर्यङ्गनायाम् ।

ईशो भासामपि दिवि दिवा किञ्च खद्योतपोतच्छायामायात् प्रतिनृपघटादुर्यशोदुर्दिनेषु ॥ २७ ॥

युद्धोद्भामरमण्डलप्रदलितोद्गण्डारिमुण्डोर्द्धेतिक्तीडाखण्डितकाण्डमण्डपसुरप्रत्यक्षदोर्हम्बरः ।

चण्डांशुशुतिचण्डिमा तदभवच्चामुण्डराजः क्षमाजनिर्यस्य विभात्यखण्डविभुतापाखण्डमाखण्डलः ॥ २८ ॥

रोदःक्षीरोदनीरैरखिलदिगवलानव्यनिर्भूतचिरै-

दिग्भागस्फारहारैरमरपतिपुरकोटपुष्पोपहारैः ।

क्षोणीचन्द्राश्मशलैरपि भुजगजगच्चन्द्रिकाचक्रवालैः,

फुल्लकाशप्रकाशैस्त्रिभुवनमभितो भाति यत्कीर्तिहासैः ॥ २९ ॥

मेरुध्वत् परिकम्पते जलपतेर्मुञ्चन्ति चेद् धीचयो, मर्यादां द्युतिमर्यमा त्यजति चेदुर्वी दिवं याति चेत् ।

तद् भज्येत परैरसाविति सतां सन्धा मुधा यो व्यधात्, सङ्खक्षोभविधूर्णितावनिरजःकृतेऽपि तत्पादौ ३०

खेलस्सङ्गपङ्क्तिवेष्टितमुजावलिर्भुवो वल्लभः, श्रीमान् बल्लभराज इत्यजनि तद् यत्तेजसा ताडितम् ।

शीतं स्फीतमभूत् तमश्च जगतः प्रत्यर्थिसार्थं गतं, तेदं चेदिह कम्प-कालिमगुणौ कस्मादकस्मादिमौ ! ॥ ३१ ॥

धम्रं सिन्धुरमुमया वसुधया भूमिं भटौपैर्दिवं, सप्तक्षितरजोभरेण पिदधे सोऽयं जगज्जम्पनः ।

यः श्रीमालवभूपमालफलकप्रस्वेदबिन्दुच्छलप्रत्यप्रप्रथितप्रशस्तिविकसद्दोर्विक्रमोपक्रमः ॥ ३२ ॥

तस्माल्लेखमुधाजनं समजनि श्रीदुर्लभो मल्लिकाफुल्लोत्फुल्लयशा विशामधिपतिर्जीमूतपूतोजतिः ।

येनोच्चैस्तरवारिवारितपरक्षमानुप्रतापाम्निना, विश्वाश्वासकरेण सूरमहसामन्तर्दधे मण्डलम् ॥ ३३ ॥

कैराग्नौर्जं मेजे सततविततं यस्य कमला, प्रियारगादागादनु दनुजमेवा स्वयमसिः ।

यशःसूनुर्नूनं तदजनि तयोर्मज्जकथासदर्थः कन्दर्पद्विपमपि रुपाऽधो व्यधित यः ॥ ३४ ॥

तस्माद् भस्मीकृतरिपुनृपः क्षापतिः शौर्यसीमा, भीमः श्रीमानजनि यजनैर्यस्य नश्यतमोभिः ।

प्रासस्तृप्तिं दिवि दिविपदो नेन्दुमास्वादयन्ते, लोकः शङ्कामिति समतनोत् कीर्तिभिर्विपलव्यः ॥ ३५ ॥

१ 'स्वकीतसि' का० ॥ २ 'मुद्भूत' मुद्रिते ॥ ३ 'फाञ्जीभ्य' मुद्रिते ॥ ४ 'द्रतिः' मुद्रिते ॥

५ पयमिदं उदयप्रभोयवच्छुपालस्तुतौ दशमपयतयाऽपि दश्यते ॥

यत्रारिक्षप्रगोत्रक्षयकरणरणाद्वैतवैतण्डिकेऽपि,

क्षमापालः क्रुद्धकालादिव निरगुरसैर्यत्सदादेन वेगात् ।

तावन्ही नम्रदेहाः कर्परिमलनैर्मानयन्तो नयन्तो,

मूर्ध्नोऽप्युद्धं लघीयस्त्रिदशगृहगुहागर्भगुप्ताः प्रसृप्ताः ॥ ३६ ॥

सेवालन्ति पयःसमुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनमः, सारङ्गान्ति शशाङ्कति धुमुवने दागन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति पदपदन्त्यमुलताखण्डं सुधाकुण्डति, श्वभ्रान्तर्मुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यर्थिदुष्कीर्तयः ॥ ३७ ॥

तत्कामश्रीरजनि जगतीकामुकः कर्णदेवः, किं वर्ण्यन्ते सुकृतमुकृता यस्य शुद्धान्तवध्वः ! ।

अस्वप्नीभिर्मनुजमुदशो बहुमन्यन्त धन्यमन्या ध्यानव्यसनजनितैस्वप्नयद्रोगभाजः ॥ ३८ ॥

कान्तं यं वीक्ष्य यान्तं प्रणयमयरुपा स्वप्नलब्धं प्रबुद्धा-

स्तद्बुद्ध्या न्यस्तदस्ता लिखितरतिपतेरञ्चले चञ्चलाक्षयः ।

मूर्च्छालाक्षित्रशालामुवि भवति विमुक्तयमित्यसहस्त-

स्तथा हन्ति स्म मूर्तः स्वपरिभवभवन्मानभूमिर्मनोभूः ॥ ३९ ॥

कान्ते कृष्णेऽभिभूते जगदवनपुषा बाहुना विग्रहेण, क्षिप्ते सूतावनग्रे पितरि जलपतौ निजिते सैन्यपूरैः ।

बन्धो दोषाकरे तु प्रथममपि मुसालोकमग्नप्रभाये, लक्ष्म्यास्तेनेह तेने हरणमुख्यशोदौत्यदत्तस्पृहायाः ॥ ४० ॥

मौक्तिकघुतिजलोज्ज्वलमन्तर्भूतिं कुम्भयुगलं कलयद्भिः ।

योऽजरोधविधुरैर्मिलितान्धैर्विरिमिः करिकुलैश्च सिपेवे

॥ ४१ ॥

अर्थव्यर्थितदुस्सहदुर्विधिलिपिर्द्विदकुम्भिकुम्भच्छिदासिद्धः श्रीजयसिंहदेवनृपतिः श्रीवेश्म तस्मादगत् ।

सङ्ग्रासक्षमदृतावनीधवनवस्वर्वासिसन्नुष्टये, चक्रे यः कृतचक्रवालमवनीशको न शकश्चिये ॥ ४२ ॥

पञ्चा पञ्चमपास्य पङ्कजनितं यस्मारिकेतावलीरोलम्भप्रविरोलदकुलिदलं मेजे कराम्भोरुहम् ।

शेषं बाधुवधं विमुञ्च्य सचलं दोर्नागमागादसिः, कृष्णोऽपि मियमेलकामिषममृत तत्तीर्थमेतद्भुजः ॥ ४३ ॥

न्यस्यावस्य शिरसि विरसं क्रन्दतां पादभेषां, राज्यं ग्राह्यं द्रुतमिति रणे यः प्रतिज्ञां प्रतेने ।

एतत्पादोपरि तु परितः स्वं परित्यस्य मौलि, प्रीतिरन्तः प्रतिनृपतिभिः प्रत्युत प्रापि लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

बाह्वभ्रजिन्नबाह्विजिन्नचरणशुष्णक्षमामण्डलमोक्षलोदकदम्बदम्बरपरिच्छिन्नाम्बरे सङ्गरे ।

यत्कोक्षेयकदण्डमण्डितरिपुक्षमापालमालावृतिव्यासक्ता न परं पुरन्दरपुरीनार्यः स्वकार्यक्षमाः ॥ ४५ ॥

शोषः सैष जवाद् यशोजलनिधौ शान्तिः प्रतापानले, शत्रूणां शिरसि च्युतेऽपि हसितं नृचं कबचेष्वपि ।

सत्यं सङ्गरसङ्गरस्य महिमा सोत्साहमन्त्रस्थितेर्वेस्योर्ध्वः करवाल एव स कथं सिद्धो न सिद्धाधिपः ॥ ४६ ॥

विद्वौजमि गते भयादनिविद्वौजसि स्वर्गिर्नि, तदीयदिशि यः स्फुरन्निद मत्तो-यशःक्षमारदौ ।

जरोपयदहो ! पयःपतिनटोऽधुनाऽप्यन्वहं, ततोऽप्युदयतो नवौ रवि-निशाधवौ पल्लवौ ॥ ४७ ॥

रक्ष्यां रक्षिष्यमशमे दिशमपि श्यामे सदुज्ये यमे, यद्भृत्यैरभिभूतदक्षिणककुब्भामौर्द्ध्वौ भाविभौ ।

मास्म द्राक्षन्दि दुःसहैरिति नताः पाराय वारानिषेर्भुजः सेतुभुवं ततः कपिमयाच्छुद्धोम रक्षोमरः ॥ ४८ ॥

१ पयसिर्दे उदयजनीयवस्तुगालमुनी जटमयपतेनापि पतेने ॥ २ घुषिपिने उदयप्रभीयवस्तुगालमुनी ॥

३ 'नितं रूपं' च ० ॥ ४ 'त्यस्तदस्तां' मुद्रिते ॥ ५ 'भुर्मेमिलिताङ्गे', मुद्रिते ॥ ६ 'अधिष्ण्य' मुद्रिते ॥

७ 'विमिः' मुद्रिते ॥

विलुप्तशः पार्श्वं निजतनुविनाशाय वरुणः, शुचा मेजे चित्रत्यपरहरितो यत्र विभुताम् ।
 किमन्यच्चन्द्रार्काविह दिशि गतौ यस्य च यत्रः-प्रतापाम्यामम्भःपतिपयसि डीनौ निपततः ॥ ४९ ॥
 यस्मिन्नुत्तरदिग्गते बलचलचूर्णावलीमिः स्थलीभूवं मेति नदीपतिर्द्वुतमयं मेरोः परेणागमत् ।
 तेने किञ्च निकेतनं घनपतिः कैलाशशैले सुखप्राङ्मन्यमना मनागपि न चामुञ्चत् तटं शूलिनः ॥ ५० ॥
 तेजोवह्निहस्ताष्टदिग्नृपसभिज्जानन्यूपोपमैर्नदक् कोऽपि पतिः क्षितेरिति दिशामूर्द्धाङ्गुलीसन्निभैः ।
 आलानप्रतिमैर्दिगीशकरिणां दिग्मण्डपोत्तम्भनस्तम्भस्तोमनिभैश्च यस्य विजयस्तम्भैर्दिगन्ता वसुः ॥ ५१ ॥

क्षेपं शार्ङ्गधरस्य शोभरमणिं शूलायुधस्य द्विपं,

यज्जालस्य रदं परश्वधमृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भेटो विधैकधामा यशो,

नामा[SS]यस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्मं जरद्वक्षणः ? ॥ ५२ ॥

अस्य त्रिक्रमविक्रमस्य न मुदे श्लाघा जगज्जाङ्घ्रिकी,

लक्ष्यानामपि कष्टमष्टककुभां जेताऽयमेतावती ।

क्षोणीकम्पिनि धूतधूलिनि बले यस्याहि विश्वेश्वरः,

शोपो नाम ननाम धाम मुमुचे भानुर्नभोमूषणम् ॥ ५३ ॥

क्रान्तशक्रबलो भग्नभोगिलोकः क्षितिं जयन् । येन चर्चरदैत्येन्द्रः, पुरीपरिसरे हतः ॥ ५४ ॥

दृष्टोऽभून्मुशलध्वजः स्वकुशलध्यानेन जिष्णुः स्मयभ्राजिष्णुर्मुदितः समुद्रशयनो रुद्रोऽपि मुद्रामुद्रा ।

उत्क्षिप्ते किल चर्चरस्य शिरसि क्रूरस्य विश्वत्रयीजेतुर्येन तदा विधुन्तुदधिया भीतस्तु शीतद्युतिः ॥ ५५ ॥

संजज्ञे नृपतिशतैः कृतांश्चिसेवः, क्षमापालस्तदनु कुमारपालदेवः ।

निर्वीराविभवमुचाऽपि येन मुष्टा, निर्वीरा रिपुवमुचा नितान्तपुष्टा ॥ ५६ ॥

सैन्यप्रकम्पितधराविधुरात्मकेषु, पौतैरलङ्घ्यसलिलेषु धुनीधवेषु ।

श्रीजैनचैत्यरचनेन शिलोच्चयेषु, यस्याजनिष्ट चरणः शरणं रिपूणाम् ॥ ५७ ॥

यस्य सन्निधौ सदा हयहेतोः, लाघमुद्भवलयं दलयद्भिः ।

सिच्यते मुचिरसञ्चितशोकैर्वैरिभिर्नयनवारिभिरेव ॥ ५८ ॥

दासवर्तिन इवाऽऽस्यसमुत्थश्चासनाशिततृणासु विपक्षाः ।

प्रातरश्रुसलिलेन यदीयद्वारमूमिषु रजः स्यगयन्ति ॥ ५९ ॥

अग्रे हम्मीरवीरश्चिरमजिरमहीपादपः पादपद्म-

क्रीडाभृङ्गः कलिङ्गः सदनवदनगो भेदपाटः कपाटः ।

अन्ध्रः कर्णाट-लाटौ कुरु-मरु-मुरला वङ्ग-गौडा-ङ्ग-चौडाः,

क्रोडस्तम्भाः समायामिति नृपतिकुलैराकुलैरावृतो यः ॥ ६० ॥

कथ्यन्ते न महीभृतः कति महीयांसो महीशेखराः, माहात्म्यं स्तुमहे तु हेतुनिगमादेतस्य चेतोहरम् ।

मर्यादामतिलक्ष्यन् रसलसद्यद्वाहिनीवाहितोऽर्णोराजः स जगाम जाङ्गलमहीभागेषु भग्नोन्नतिः ॥ ६१ ॥

१. पद्यमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतौ सप्तमपद्यत्वेनापि वर्तते ॥ २ 'टो निस्सीमधामा उदयप्रभोय-
 वस्तुपालस्तुतौ ॥ ३ कीतदा' का० ॥

दर्शं दर्शमसद्यदर्शनकचं कल्पान्तश्चिन्त्यन्तकप्रक्रीटद्रसनासनामिमभितो यत्त्वङ्गुलेनां युधि ।
वित्रस्तस्य चमूचैः सह तथा प्राग्विधलक्ष्मा मुजः, प्रस्वेदाम्बु जगाल जाङ्गलमुबोऽभूवक्षन्पा यथा ॥६२॥

क्षीणत्वं दाक्षिणात्या व्यरचयदमुचन्मालयी बालवीक्षा-

दुःस्तादशूणि हूणी शुचमवित दधौ जाङ्गली नाङ्गलीलाम् ।

कुञ्जाऽऽसीत् कन्यकुञ्जा शिरसि सुतमरात् कौङ्कणी कङ्कणानां,

वृन्दं खेदाद् विभेदावनिमृति चलिते यात्रया यत्र जैत्रे ॥ ६३ ॥

कोदण्डं स्वकरे कुरुर्न कुरुते सज्जं गलङ्गङ्गलस्तो वेत्ति नितम्बतो न वसनं कीरो न वीरोचितः ।

युद्धक्षीणिषु दक्षिणः क्षितिपतिर्न क्षोददक्षोदयद्वाहुर्मृत्युसहस्रचक्षुषि मुहुर्वस्मिन् घनुर्धुन्वति ॥ ६४ ॥

जगद्धन्यम्भन्यः प्रबलजलदुर्गाऽर्जुनमही, यदीयैरुद्यद्भिर्बलपरिवृढैः पौरुषदृढैः ।

हयोत्सातक्षीणीविततरजसा सिन्धुपरिखां, स्थलीकृत्य कीडासमिति शमितः कौङ्कणपतिः ॥ ६५ ॥

पदं विजयसम्पद्रामजयपालदेवोऽखिलद्विषन्पतिमृत्युमर्थ बभूव भूवल्लभः ।

राज सुराजवज्रगति यस्तनुद्विभ्रितप्रियाचयविलोचनाम्बुजसहस्रनेत्राश्रितः ॥ ६६ ॥

यस्मिन् पदमति वेदमनोऽङ्गणमुवि आन्तेऽपि मच्चद्विषे, नेशुर्नाऽऽशु नृपा व्यपायरुनयः सेतामयव्रीहया ।

शोकश्यामतमानिमानपि पुनः प्रेक्ष्य द्विषो नापिषद्, दग्धक्षमारुहसण्डसण्डनविधौ कुर्वन्ब्रजामिव ६७

आजन्मत्रासहेतुथमसमदहृदः कण्टकाः कण्टकदु-

द्रोणीचीलृत्त्वचोऽपि स्सरुदुपलशिलामोगमुग्नांद्भ्योऽपि ।

अङ्गुष्ठं नर्तयित्वा मृतपदमभवन् यस्य सेनामयानां,

निःस्वानध्वानजैत्रत्वरतुरगमृतां पश्यतामप्यदृश्याः ॥ ६८ ॥

तमहृतमहं वद्धा वप्सा समं न समानये, यदि तदवनीनेता नेति प्रणीतरणो रिपुः ।

किमपि न पुनः कर्तुं मर्तुः स यस्य शशाक तलियतममुचत् प्राज्यं राज्यं सतामचलं वचः ॥ ६९ ॥

वीरधवलवंशवर्णनम्

मूलं कीर्तितेताततः समजान् श्रीमूलराजो नृपस्तत्पट्टं करकैलिकन्दुककलक्ष्मागोलको बालकः ।

यस्मै दण्डमसण्डहर्षकृतये हम्भीरभूमिरुहप्रस्वेदप्रभवं समर्पितवती मातेव कौलुहलात् ॥ ७० ॥

सन्तापं यत्प्रतापस्य, तुरुष्कैरसहिष्णुभिः । आपादमस्तकं चक्रे, ध्रुवं बासोऽवगुण्ठनम् ॥ ७१ ॥

रिपुर्वीनेत्राम्गोषयरयनदीमातृकयथा, विद्यामीदृशो भीमः समभवदुदात्तस्तदनुजः ।

अलव्यार्थिस्तोमः पुरनृप विमच्चार्येषु फलप्रदेषु प्रदेपं विरचयति दानैरकरसिकः ॥ ७२ ॥

संलीनानामनुवदकं तीरविधान्तनीरसीतुल्यानां यदरिमुदृशां दिक्षु रेजुर्मत्तानि ।

उत्कृष्टोतः सह बहुविधैरेव रत्नाकरोऽयं, रात्रौ रत्नान्यतनुत बहिः सोमनामानि मन्ये ॥ ७३ ॥

धामां धाम कुमारपालपरणीपालप्रसादास्पदं, चौतुक्तयो धवलान्नभूर्गस्मतिः श्रीमीमपल्लीपतिः ।

अर्णोराजर्तुषो व्यचच नृपतिं मामेतदीयः पिता, गलैवं लवणप्रसादनृपतौ दामाभारनेष व्यधात् ॥७४॥

१ 'गर्जनेमयेवर्दी' मुद्रिते ॥ २ 'व्ययाय' मुद्रिते ॥ ३ 'दामाभार' मुद्रिते ॥ ४ 'यो
न्यय' मुद्रिते ॥

यत्तद्ब्रह्मदण्डयमुनाम्भसि मेदपाट-चन्द्रावतीपुरपती त्रिदिवाय मग्नौ ।
 चक्राम चक्रमवनेरथ पूर्णमणोर्राजस्य तस्य तनयो लवणप्रसादः ॥ ७५ ॥
 घोरारण्यविलङ्घनैरतिघनै रीणाऽप्यरीणामहो !, राजिर्वाजिविजित्स्वरगतिर्विब्रस्य यस्याऽऽह्वे ।
 स्वामात्यक्रमकर्ममर्मरवानाकर्णयन्ती गता, प्राणत्राणवनावनावपि भिया मित्रा न विश्राम्यति ॥ ७६ ॥
 कोपाग्निज्वलितस्तदस्थवल्कुत्कारविस्फारिता, निर्भग्नाश्चरणेन काचकुतप्रपाया तिकाया द्वियाम् ।
 तदुष्कीर्तिमिपद्रवज्वमपीचक्रेण चक्रेऽम्बरं, श्यामं यस्य यशःपयोभिरभितः प्रक्षालितं निर्मलैः ॥ ७७ ॥
 किं वण्यो लवणप्रसादनृपतिः ? पाणौ कृपाणच्छलं, कालं बालमहो महोभरजितादादायै मूरादपि ।
 यो मुष्टिप्रहलालितं प्रतिपदं कोपारुणः कम्पयन्, दिग्नेता रिपुमुण्डमोदकचयैरुच्चै रूचं नीतवान् ॥ ७८ ॥
 नताशेषद्वेषक्षितिपकृतपूजः प्रतिपदं, तनूजस्तस्याऽऽस्ते भुजगजगदीशघृतियशाः ।
 अधीशो धीराणां धवलकुलधौरेयधवलः, श्रियां सौधं धीमान् धवलचरितो वीरधवलः ॥ ७९ ॥

देशोऽरण्यप्रदेशो नगरनगरसा कन्दरा मन्दिराली,
 तूली धूलीनिवेशस्तृणमृतकबरीधानमेवोपधानम् ।

कायच्छायाऽनुगच्छी प्रसिदिनमशनं कन्दमूलं दुकूलं,
 वल्कं दारिद्र्यकल्कं सचिव इति शुचिर्यद्विषां राज्यलक्ष्मीः ॥ ८० ॥
 न किं स हरितुल्यतास्तुतिपु लज्जते ? यज्जितैररातिनिवर्हेहागिरिगुहागृहेकस्पृहेः ।
 विजित्य मृगवैरिणो निजपुरे नियुक्तः स्वयं, गृहोपवनमूलां विरचयन्ति रक्षां किल ॥ ८१ ॥
 दूरं दुर्लभितेन यस्य महसा शङ्केऽम्बरं त्याजिता, कीर्तिर्वीरमहीमृतां तव भवद्वैलक्ष्यकृष्णच्छविः ।
 गूढक्षमाधरकुञ्जपुञ्जसदनोत्सङ्गे तमश्छद्मना, चक्रे नाशविनाशमेव रुदतीवाप्पोपमैर्निर्झरैः ॥ ८२ ॥

अन्तर्व्योम श्रवन्ती मधुरमधु विधुच्छन्नश्रुचच्छन्दं दि-

वपत्रं नक्षत्रलक्षच्छलजलकणिकं भानुमद्भापरागम् ।

भ्रान्तध्वान्तद्विरेफजमजरगिरिव्याजकिञ्चलकमेत-

ह्रीलां नीलाम्बुजस्य श्रयति वियदहो ! यद्यस्तोयराशौ ॥ ८३ ॥

अभासतादृशगुणां युवति नितम्बस्तम्ब-स्तनस्तवकमारमृतोऽहसन् याः ।

प्राप्तासु यस्य पृतनासु पुरे रिपूणां, सास्त्रासकाललसिता हसितास्तयाऽपि ॥ ८४ ॥

प्रतिदिनमपि रौद्रैर्यस्य तप्तः प्रतापैरिति समिति समेतः संभवियोऽसिदण्डे ।

जिगमिपुरिरवर्गः स्वर्गमग्रे तडागं, हिममयमिव मेने भानुमानन्दमानः ॥ ८५ ॥

यस्य न्यक्षितचापचपलचलनाराचवीचीचयव्यस्तत्रस्तसमस्तसैनिकजनव्यालो रुशोकाकुलाः ।

खेदस्वेदमयं पयःकणगणं भाले दधुर्भीरुपु, व्यक्तं मौक्तिकपट्टबन्धनमिव प्रत्यर्धिपृथ्वीभुजः ॥ ८६ ॥

कुन्दे युद्धेषु यस्मिन् रिपुनृपनिकरः केशव-व्योमकेश-

ब्रह्मादीनां पदाब्जैरपि मनसि धृतै रक्षितो न क्षतेभ्यः ।

रक्षसात्मानमात्मकमकमलयुगप्राप्तवेगप्रसादा-

देताम्नो देवताम्नः कथमिव भुवने नापिकोऽभूत् प्रभावैः ? ॥ ८७ ॥

यत्स्रक्षतकुम्भिकुम्भविगलरकीलालकलोलिनीपङ्क्तिर्व्यक्तयशोमहीरुहमहो । निर्मूल्यन्ती द्विषाम् ।
 तेषामेव महोदवानलभरं शान्तिं नयन्ती ययौ, मुक्तामण्डलमण्डिताऽम्बुधिमगात् तेनैव रत्नाकरः ॥८८॥
 यदोर्मण्डलकुण्डलीकृतधनुःप्रोद्धीनकाण्डावलिन्यासत्रासपराः परं प्रियतमा नेशुर्द्विषां वक्षसः ।
 तासामप्युरसो रसोत्तरंलसद्दुःखातुराणामयं, कन्दर्पः करकोटिकुट्टनदराद् दूरेण तूर्णं ययौ ॥ ८९ ॥
 प्रत्याकारच्छलगुरुदरीनिःसृतः श्यामकान्तिः, सर्पन् सर्पश्रियमकलयद् यस्य पाणौ कृपाणः ।
 यं ज्वालोक्ष्य प्रस्रभरयशोराशिनिर्मोकभाजं, द्वेविक्षीणीपरिवृद्धमहोद्रीपकः प्राप शान्तिम् ॥ ९० ॥
 युद्धपर्वणि कदापि न दृष्टं, यस्य पृष्ठममुह्यशिकुरुमैः ।
 सप्रतिज्ञमिव वीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वगभाजि ॥ ९१ ॥
 कुण्डलप्रतिमितस्वभुजाभ्यां, यश्चतुर्भुज इव प्रतिभाति ।
 चारुचक्रमनुबन्धि दधानो, बाणयुद्धजितकामविपक्षः ॥ ९२ ॥
 यत्पदाम्बुजयुगं रणधूलीधूसरं चिकुरमार्जसिकाभिः ।
 मार्जयन्ति विनता रिपुनार्यः, धीनिकेतमिव हस्तधृताभिः ॥ ९३ ॥

यद्दानप्रभवप्रभूतकनकप्राभारसारस्फुरन्नेपथ्यप्रचयप्रकम्पितरुचः प्रेक्ष्य द्विजौनां प्रियाः ।
 विन्ध्योद्भासमयाद् घटोद्भवमुनेर्योग्योऽप्युपेतो न यलोपामुद्रिकया तिरस्कृतिगिरा तस्मादुपालम्ब्यते ॥९४॥
 यस्मिन् दाननिदानकाश्चनचयस्तेरत्करे कर्णिकोच्चालस्तालदलं न बाञ्छति जनः प्राणप्रियाप्रीतये ।
 तस्मान्मूलपथेऽखिले फलगलन्मैरेयसिक्कोलसत्तृण्याभिस्तृणराज एष समभूत् तथ्याभिधानस्ततः ॥९५॥
 श्रुमन्निप्रतिबिम्बतोरणदलं प्रौढप्रतापच्छलप्रोघदीपमदभ्रशुभ्रयशसा लिप्तं सुधास्पार्द्धना ।
 पचासभ्य विभाति वीरधवलक्षोणीयसङ्गं पुरो, युद्धकुण्डविरोधिरोधिपरिस्ताविस्फारधारजलम् ॥९६॥
 उपार्जि विमुत्ताऽद्भुता वसुमती च नीता यशं, क सम्प्रति महामती धृतभरे भवेयं सुखी ? ।
 अनेन गदितैरिति स्फुटसभाजनैर्भाजनैः, श्रियामिति सभाजनैः शुचिविचारमूचे वचः ॥ ९७ ॥

वस्तुपालवंशवर्णनम्

वंशोऽयं प्रथितोऽतिः प्रभवति प्राग्वाट इत्याह्वया, पुण्यः पुण्यसुधारसेन शुचिना सोद्रेकसेकक्रियः ।
 दिव्यामन्मरलम्बिनीं सुचरितप्रासादमासादयन्, कीर्षिं केतनकौतुकेन तनुते यः स्वर्धुनीस्पद्भिनीम् ॥९८॥
 अचिद्भो यदि तत्कृतो गुरुगुणश्चेन्निर्जलस्तत् कुतस्तेजस्वी यदि धीमतां हृदि गतधूडामणिश्चेत् कुतः ! ।
 वंशोऽस्मिन्नजनिष्ट विष्टपचमत्कारिति कीर्तिप्रभाशुभ्रो मौक्तिकरत्नवन्नवनवश्रीमण्डितश्चण्डपः ॥ ९९ ॥
 चण्डप्रसाद इति तस्म सुतस्ततोऽभूद्, यत्कीर्तिर्गिर्षवलितेऽम्बरमिचिभागे ।
 लीलां ललौ लिपिरमस्य रशाश्रवन्धोः, क्रीडारयः प्रकटमेकरयाश्रयोभी ॥ १०० ॥
 समजनि जिनसेवानित्यद्देवाकटवृक्षः, प्रगुणगुणगणश्रीस्तस्य कान्ता जपश्रीः ।
 जगति घनतमोभिः कदमले मानसान्तः, किल विलसति यस्याः शुद्धहंसो विवेकः ॥ १०१ ॥

१ पयसिर्द उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुती पश्ययन्याऽपि विषये ॥ २ °जातिप्रियाः मुदिते ॥ ३ °मुनिर्वीर्यं
 को० ॥ ४ °तापोच्छलप्रो° मुदिते ॥ ५ °तीयनं नो यशो का० ॥

माधुर्यधुर्यमधुरोभगुणैकशोभनिष्कम्पसम्पदलिनीनलिनीवनश्रीः ।

॥ १०१ ॥

धूरस्ततस्तनुभवोऽनुभवोपमुक्तमाग्यप्रभावविभवो नयभूर्भवू

॥ १०२ ॥

स श्रीमानुदयाचलोज्ज्वलरुचिर्मेघं दधानो जने, धूरः क्रूरतमःसमुच्चयभिदाशूरः कथं वर्ण्यते ? ।

अन्योन्यव्यतिपङ्गसङ्गतरुचि व्योमच्छले पल्लवे, तेजःकीर्तिमिषेण चक्रमिधुनं सयोजयामास यः ॥ १०३ ॥

आता वातायन इव विद्यां तस्य निःसीमकीर्तिस्तोमः सोमः समजनि जनालोकनीयः कनीयान् ।

देवो देवेष्विव जित्पतिर्मानसे मानसेनाद्, यस्यावश्यं नृपतिषु पतिः सिद्धराजो रराज ॥ १०४ ॥

विश्वानन्दकरः सदा गुरुचिर्जीमूतपूतोन्नतिः, सोमः कोऽपि पवित्रचित्रविकसद्देवशधर्मोन्नतिः ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिकुहरे यः स्वातिवृष्टिप्रजैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनीभूषणम् ॥ १०५ ॥

एतस्य विकसद्भारामस्याजनि वल्लभा । सीताऽऽभूतनयाऽप्येषा, न कुशील्वसन्मतिः ॥ १०६ ॥

आशाराज इति व्यराजयदथ क्षमाखण्डमाखण्डल-

क्रीडासिन्धुरपश्यतोहरयशःस्तोमेन पुत्रस्तयोः ।

श्रीमान् सोमसमुद्भवो निजमवेऽम्भोधौ गिरीशान् गुरुन्,

सेतुकृत्य तिरोदधे स्वकुलजाहङ्कारमुष्णद्युतः

॥ १०७ ॥

यस्तीर्थानां प्रकरमकरोल्लोकनिर्माणकर्मालङ्कर्मिणो विधिरधिगतः सोऽभुजन्माङ्गजन्मा ।

आम्यामुच्चैस्तदपि विजितं यो विजिन्येति चित्ते, भक्तिं धीमानकृत जननीपादयोरादरेण ॥ १०८ ॥

दद्यालोकेऽर्थिलोके सुरसुरभिरिव प्राजते यस्य बाणी,

चेतोवृत्तिश्च चिन्तामणिरिव फलदः कल्पशास्त्रीव पाणिः ।

स्तुत्योऽसौ कस्य न स्यादमरगिरिसमः धूर-सोमप्रसर्प-

चेजःपुञ्जामितश्रीर्लसितसितयशोदग्भजम्भारिकुम्भी ?

॥ १०९ ॥

तस्य प्रिया मुदमधच पिनाकपाणेर्देवी कुमारजननीव कुमारदेवी ।

इन्दुः सदा रिपुरजीयत पङ्कजश्रीसर्वस्वदानमुदितेन मुखेन यस्याः

॥ ११० ॥

किन्तस्मान्तस्मरौरेकवरला कल्पद्रुमफलाङ्गजश्रेणामिन्दनमूर्तिरुत्तमातिशयोक्त्येवन्द्रुष्टिः ।

शश्वद्विधविनाशतत्परनिवाधः कारभागीरथी, या मुक्ताफलनिर्मलद्युतिगुणामिव्यक्तिशुक्तिर्वभौ ॥ १११ ॥

चत्वारस्तनया नयाहृतिरसाः कंसारिदोर्विक्रमा, गोदावर्य इवोज्ज्वला दुहितरः सप्त प्रसूतास्तयोः ।

आमद्वादशतां यदीयवर्दनैर्लेभे मुधादीधितिर्बद्धस्पर्द्ध इवाखिलाकैरवतोच्छेदाजगन्मोदयन् ॥ ११२ ॥

लावण्याङ्ग इति युतिव्यतिकरः सत्याभिधानोऽभवद्, शङ्के शङ्करकोपसम्भ्रमभरादासीदनङ्गः स्मरः ।

१ उत्तरार्धमिदं उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती सप्तविंशतितमपद्येऽपि दृश्यते । २ 'वृष्टिं मुहुः', कृत्वा मौक्तिकनिर्मलं निजयशो दिक्कामिनीमण्डनम् उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती । ३ 'वलन्म' मुदिते । ४ यः श्रीसोम' कां ।

५ पद्यमिदमुदयप्रभान्ना निर्दिष्टं पाठ्येन प्राचीनलेखसंग्रह माग्य २ गत ४३ संख्यगिरिनारसत्कशिलेखे दृश्यते । तथाहि-

लावण्याङ्ग इति युतिव्यतिकरः सत्याभिधानोऽभवद्,

भ्राता यस्य निशानिशान्तयिकसङ्घन्द्रप्रकाशाननः ।

शङ्के शङ्करकोपसम्भ्रमभरादासीदनङ्गः स्मरः,

साक्षादङ्गमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गाङ्गनामिलेषु ॥ ४ ॥

सर्वाङ्गं सुमगोऽयमित्यनिमिषलैण्येन बाल्ये हृतः, त्यक्त्वा गूढलयं सुरेन्द्रसदसि कीडातति निर्गमे ॥११३॥

महृदेव इति देवताविषयश्रीरगूत् तदनुभविभूतिभूः ।

धर्मकर्मविषयावशो यशोराशिदासितसितद्युतिद्युतिः

॥ ११४ ॥

रैक्तः सद्गतिभावभाजि चरणे स्मेरास्पपङ्केरुहमकीडत्परमेष्ठिबाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलधिर्मलमानसेन समग्रं कापि श्रयन् पङ्क्तिं, विश्वे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः ॥११५॥

आस्ते तस्य सुधारहस्यकवितानिष्ठः कनिष्ठः कृती, बन्धुर्बन्धुरबुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिषः ।

ज्ञानाम्भोरुहकोटरे भ्रमरतां सारङ्गसाम्यं यशःसोमे शीखिलां च गस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ ॥११६॥

हैस्ताम्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुधैः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यहुद्धिः कल्पितोरुद्धिपगहनपरक्षोणिभृद्द्विसम्प-

होपासुद्राधिपैश्च स्फुरति लसदिनस्फारसञ्चारहेतुः

॥ ११७ ॥

तदिमं मौलिषु मौलिं, कुरूपे पुरुषे ! सकलसचिवानाम् ।

क्षितिधव ! तत्तव दोष्णोर्बिष्णोरिव भवति विश्रामः

॥ ११८ ॥

श्रुत्वेति मुदितहृदयः, पुण्यप्रागरुम्यलभ्यसम्भगिरिम् ।

अनयोरनयोऽज्ञितयोर्धरणिधवं व्यथित धरणिधवः

॥ ११९ ॥

सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः सुजनजनमनःपद्मोघोष्णधामा,

श्रीतेजःपालनामा स्फुरति मतिलतास्थानकैल्पद्रुवृक्षः ।

पाठारम्भाय लक्ष्म्या दुहितुरिव दधत् पट्टिकां वर्ण्यवर्णां,

मुक्तादभ्रैर्गम्भीरिमगरिमगुणैर्यैः पयोराशिरासीत्

॥ १२० ॥

दिग्धात्रोत्सववीरवीरघवलक्षोणीधवाध्यासितं,

प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।

भाति आतुरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न श्याम्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ?

॥ १२१ ॥

यत्कीर्तिप्रसरे. परस्परपरिस्पृष्टोर्द्ध्वदिप्युभिर्दूरं दारितमेतदम्बरमिह अर्धं भुगे मण्डले ।

राशीभावचरिष्णुमीन-मकराद्याकीर्णमर्पितव्याजादङ्गनमञ्जुलच्छवि न कैः प्रत्यक्षमुपेक्ष्यते ॥१२२॥

नीता वशं विषमवारिगुणेन बाहुस्तम्भे धृता कनकशृङ्खलिकाभियोगात् ।

श्रीर्येन सिन्धुरवधूरिव गूरिवर्षादानप्रमोदितघनोदितमार्गजलिः

॥ १२३ ॥

१ श्रीडां ततो निं वा० ॥ २ पयमिदमुदयप्रमनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिना-
रमन्वशिलालेखे दृश्यते । पूर्वापं च तत्र पाठभेदेन वर्तते—रयतः सद्गतिभावभाजि चरणे श्रीमहृदेवोऽपरो,
यद्गता परमेष्ठि० ॥ ३ पयमिदमुदयप्रमनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिनारसत्कशिलालेखे
अष्टमपद्यतया वर्तते ॥ ४ 'धिपस्फुर' गिरिनारशिलालेखे ॥ ५ 'मोत्पुष्ण' मुद्रिते ॥ ६ 'कपूरधरा'
४० ॥ ७ पयमिदं उदयप्रमोदयवस्तुपालस्तु श्री एकादशपद्यतया, प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ लेख ४३ मध्ये उदय-
प्रमनाम्ना द्वीपपद्यतया च वर्तते ॥ ८ पुन्यं आ' उदयप्रमोदयवस्तुपालस्तु ॥ ९ 'श्रुलब्ध्याजयोगात्' वा० ॥

धाम्नि स्वर्धामशैलं प्रियवचसि सुधामानने धामिनीशं,
कण्ठे वैकुण्ठशङ्खं भुजशिखरयुगे जग्मभित्कुम्भिकुम्भौ ।

पुण्योत्पन्नस्य यस्य स्वयनसमचमत्कारिरूपस्य पाणौ,
प्रत्यक्षं कल्पवृक्षं जगति जनयतश्चातुरी भातु धातुः ॥ १२४ ॥

लावण्यद्रवकूपरूपसुभगे निःशेषचेतस्विना-

मन्तर्वासिनि चाग्वशंवदमधौ राजप्रसादोज्ज्वले ।

एतस्मिन् सुमनोमनोरमगुणैर्विश्वं च विश्वत्रयं,

वश्यङ्कुर्वति सोऽपि सम्प्रति पदभ्रष्टो मनोभूरभूत् ॥ १२५ ॥

अम्भोदभ्रमभाजि दुर्जनजने श्यामायमानद्युतौ,

तन्वाने भुवनेषु दुस्तमतमःस्तोमं कुकीर्तिच्छलात् ।

लब्धोच्चश्रनराममार्गणमुत्सल्यातश्रुतिद्वारत-

स्तूर्णं मानसमानशे सुमनसां हंसोज्ज्वलैर्यदुणैः ॥ १२६ ॥

मूलस्थूलहरितकरिस्थिरपदं शुभ्रप्रभं भूमिभृदग्मस्तम्भमरं नमःसुरसरद्विधाजध्वजभाजिनम् ।

उत्तुङ्गं जगतीतलेऽतुल्यशःप्रासादमासाद्य यश्चिन्तातीतफलप्रदोऽवनिजने देवोऽस्तु सेवोन्मुखे ॥ १२७ ॥

इन्दुर्विन्दुरपां सुरेश्वरसरिङ्घिण्डीरपिण्डः पति-

भासां विद्रुमकन्दैलो विभु नमः श्रीवत्सलक्ष्मा किल ।

कैलास-त्रिदशेभ-शम्भु-हिमवत्प्रायास्तु मुक्ताफल-

स्तोमः कोमलवाल्काऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी ॥ १२८ ॥

गैर्जलिर्जरकुजरे मुरजति प्रौढोर्मिभिर्नृत्यति, क्षीराब्धौ कलहंसिकाकलकलैर्गङ्गाजले गायति ।

श्यामाकामुकपारिषार्धकयुतो विश्वत्रयीसम्पदक्रीडानाटकसूत्रधारपदवीं यत्कीर्तिपूरो ययौ ॥ १२९ ॥

उद्धूतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमच्चन्द्रस्य चिद्रूपता-

माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाव्ययमन्यात्मनः ? ।

दुःस्थानां प्रतिभूर्भूतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,

दृक्पातैर्वितथैवं येन कविता काऽपि श्रीलोकीकवेः ॥ १३० ॥

यत्कीर्तेः स्वैरभैरावणमदसमदभ्रान्तनृत्तालिगीर्त-

स्फूर्जद्गजैर्निनादस्फुरदुरुमुरजोह्लासितायाः सितायाः ।

नित्यं नृत्तं सृजन्त्याः शिरसि मुरगिरेक्षारुचारीप्रचार-

स्पष्टप्रभ्रष्टहाराबलिगलितमणिभ्रान्तिमायान्ति ताराः ॥ १३१ ॥

१ 'भूमिजित्कु' मुद्रिते ॥ २ पद्यमिदमुदयप्रमनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह माग २ मध्ये ४३ मंख-
गिरिनारसत्तलशिलालेखे सप्तमपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ३ 'नृत्तः किल विभुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः गिरिनार-
शिलालेखे ॥ ४ इत आरभ्य त्रीणि पद्यानि उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ क्रमशः १२-१३-१४ पद्यतया वर्तन्ते ॥
५ 'चण्डस्य उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ६ 'नृतीय चिदधौ भा' मुद्रिते ॥ ७ 'य काचन लिपिर्येन
निवेदीकवेः उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ८ 'गीतैः स्फूर्' मुद्रिते ॥ ९ 'जगद्भूषणनिभिरिय समुह्लासि'
उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ १० नृत्यं सृ' उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥

अस्मद्वोवैकमित्रं त्वमसि निधि शशी कीडया पीडयेन्नः,
 शङ्के पङ्केरुहैः श्रीरिति गदितुमिव प्रीतिमुक्ता निमुक्ता ।
 तत्तस्या यस्य ताम्रः कुपित इव करो दानशोभी यशोभि-
 र्भृत्यैश्चक्रे तदेन्दुं त्रिजगति स यथा लक्ष्यते नेक्षितोऽपि ॥ १३२ ॥
 जाता कृष्णपदात् प्रिया जलनिषेदुंष्कर्मभिर्निम्नगा,
 बह्वेवं परिभाव्य यत् किल दधौ झम्पां पुरा वै भवे ।
 तन्मन्येऽस्य कराप्रसम्भृतजनिर्भूत्वा गुणश्रेयसी,
 कीर्तिः ख्यातिमवाप्य काऽप्यभिनवा गङ्गेयमुज्जृम्भते ॥ १३३ ॥
 भैरुर्विषमयं विधाय कितवः कोऽन्येति मासुन्मना-
 स्तेनामुं विजये । निवारय यतो मे नीलकण्ठः प्रियः ।
 जरुणन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीकृते सर्वत-

सौलोक्त्रेऽपि पिनाकिना सश्वपथं प्रत्याविता पार्वती ॥ १३४ ॥

क्षीराब्धिर्लुठति क्षितौ फणपतिः स्फारस्फुरत्स्फूत्कृतिर्गङ्गा निम्नमुखी करोत्यलिवधूलौकै रवं कैरवम् ।
 अन्तः सन्ततमङ्कपङ्कमिषतश्चन्द्रोऽपि तद्रोपितग्लानिर्दानिवरस्य यस्य यशसा तूर्णं हृते वैभवे ॥ १३५ ॥
 प्रतीता नीतीवास्तुपरि परिपकेन रमते, मतिर्देवे सेवा सकलकरणैकान्तकरणम् ।
 अहो ! यस्यावश्यं शठरिपुहठमाणहरणं, रणं दोने दानं सपदि विपदेकक्षयल्यः ॥ १३६ ॥
 कौपाटोपपरैः परैश्चलचमूरङ्गचुरङ्गक्षतक्षोणिक्षोदवशादशोपि जलधिर्धैः स्तम्भतीर्थे पुरे ।
 स्वेदाम्भस्तटिनीवटाघटनया श्रीवस्तुपालम्फुरस्तेजस्तिमगर्भस्तिरुततनुमिस्त्वेवैव सम्पूरितः ॥ १३७ ॥
 यः प्रत्यर्थिक्षितिपतिकरिच्छेदमेदस्विशक्तिमुक्तागौरैरवनिलयं कीर्तिर्धूरैरपूरि ।
 तं वरुणन्तं उपि विधुरयामास संश्रामसिंहं, निखिणो यत्करपरिचितः कृष्णसारोऽपि चित्रम् ॥ १३८ ॥

एषातः सङ्ग्रामसिंहो वा, शृङ्गो वा सिन्धुराजसूः ।

संयुध्य गज्यमानोऽस्य, युद्धे सत्याभिधोऽभवत् ॥ १३९ ॥

भमः शङ्ख इति स्वैरौदिविपदामास्त्रिप्य लक्ष्मीमुख,
 लक्ष्मीशः किल शङ्खलक्ष्मणि करे चिक्षेप चक्षुश्चलम् ।

वीर्यां लसमवीक्ष्य शङ्खममलं यस्य स्वयं विस्मयं,

यच्छलन् कदमलसिन्धुराजतनुभूकीर्यां कृताभीकृतः ॥ १४० ॥

असौ कीर्तीः स्वका मन्त्री, कामं श्रीणि जगन्त्यनु । वस्तुपालोऽरिसामन्तयशसामन्तकोऽक्षिपत् ॥ १४१ ॥

पैत्राभिरामहस्तेन, महस्तेन प्रतन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १४२ ॥

१ तत्प्रपद्या यस्य ताम्रः मुद्रिते ॥ २ गुणिमेयसी कां ॥ ३ पञ्चमिदं उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती
 नयमपयतयाऽपि वक्षते ॥ ४ 'एते निर्मरं, मैत्र्ये' उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती ॥ ५ पञ्चमिदमुदयप्रभानाम्ना निर्दिष्टं
 प्राचीनलेखनं यद् याम २ मध्ये ४१ गज्यगिरिनारसत्कशिलालेशे द्वितीयपद्यायाऽपि दृश्यते ॥ ६ 'भस्तिना
 प्रतनु' मुद्रिते ॥ ७ पञ्चमिदं उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती अष्टादशपद्यया वक्षते ॥

संयोजितेन मणिमण्डितशतकुम्भकुम्भत्विषा शुचिनखेन करद्वयेन ।

मौलिस्थितेन जिननाथसनाथमध्यप्रासादवद्दिनमुखे क्षणमीक्ष्यते यः ॥ १४३ ॥

मालिन्यं मुमुचे जगत्रयशुचेरकन्दुमन्दाकिनीसम्पर्कादपि यत्र दुर्दमतमःसम्बन्धबन्धकृतम् ।

आकाशेन तदप्यमुच्यत चिरं यत्तीर्थयात्रारजः, स्नात्रादृश्यतद्रात्वनिर्मलमिलत्कीर्तिद्युतिद्योतिना ॥ १४४ ॥

मा भूम्भद्रवनेऽपि दुस्तरतमस्तोमस्तथा मात्म भूजेत्रेऽपि युमदां सदाविकसिते सम्मीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गमिरजःसमुच्छ्रयमयाद् दम्भोलिपाणिर्महीमम्भोभृद्विरसीपिचत् प्रीतिदिनं यत्तीर्थयात्रोद्यमे ॥ १४५ ॥

यद्विकुम्भिकुलाद्रिकोल-कमठ-व्यालेश्वरैः खेचराः,

कष्टादेव दधुस्तलं तदवनेर्विष्णुश्रुत्वभिर्भुजैः ।

तत् सन्नाहभुजेन वीरघबलो मुद्राङ्गुलीलील्या,

तेजःपालकरस्तदेव सवलः स्यातो बलिन्योऽप्यसौ ॥ १४६ ॥

सहोऽधिरोहहि रैवताद्रौ, वस्त्रापथस्थानतपोधनानाम् ।

ददौ यदौचित्यधियाऽपि किञ्चित्, कालेन नीतं करतां तदेतैः ॥ १४७ ॥

यात्रापर्वणि रैवतक्षितिधरे प्रीतोऽत्र मन्त्रीधर-

स्तेजःपाल इदं निशम्य जनतोऽथाऽऽह्वयतांस्तापसान् ।

सादं द्रम्भसहस्रयुगमुचितं दत्तोत्तमर्णवजात्,

तद्गामं परिमोचयन् करममु सन्त्याजयामासिवान् ॥ १४८ ॥ युग्मम् ॥

किञ्चेतेन गुणैः यशाद्गुचिमि कृष्टः सुराष्ट्रपतिः,

पित्रोः पुण्यकृते जिनेश्वरकरं श्रीमीममिहोऽमुचत् ।

तीर्थारक्षकहेतवे तु कृतिना देवादितो दापिता,

सेयं पञ्चशती सुराष्ट्रपतये तस्मै पुराऽभ्यर्चनम् ॥ १४९ ॥

वभूव गोत्रैकगुर्भारीयानेषामशेषागमपारद्वया ।

नागेन्द्रगच्छे स महेन्द्रस्वरिमहेन्द्र-नागेन्द्रयशा मुनीन्द्रः ॥ १५० ॥

कर्मसाक्षिभवतापपीडनं, क्रीडित शमरसौषपल्लवे ।

क्षालिताविलमद स्म दन्तिवद्, यं त्यजन्ति सल्ल कश्मलालयः ॥ १५१ ॥

पन्था ग्रन्थाटवीना मुनिरजनि ततः कोऽपि कल्याणवह्न्याः,

कन्दः कन्दर्पदर्पद्रुमवनदहनप्रान्तिषूः शान्तिस्वरिः ।

प्रत्यग्रशुल्यदुर्गार्णवनवलहरीकल्पजल्पेन यस्मिन्,

जल्पाके कोविदेशे मतिगकृत कृती को विदेशे न गन्तुम् ? ॥ १५२ ॥

आनन्दचन्द्रा-ऽमरचन्द्रवरी, तत्पटलक्ष्मीशुचिगुणानौ ।

अन्तःस्फुरद्ग्लसपलभूतगुरुकामाग्नोजनवावभूताम् ॥ १५३ ॥

१ यद्यपि उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतो एतेनविदायपनयाऽपि वर्तते ॥ २ त्रेषु युसदां सदाविकसिते-
प्यामील उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतो ॥ ३ मुच्यते वा० मुक्षिते य ॥ ४ प्रतिपदं यं उदयप्रभोयवस्तुपाल-
स्तुतो ॥ ५ शपेभ्यरा. य० ॥ ६ वहाद्रेन भुजेन मुक्षिते ॥ ७ प्राशोऽय मुक्षिते ॥

दन्तौ धर्ममतव्रजस्य दुरितक्षोणीरुहच्छेदने,

गच्छव्योमतलस्य सोम-तरणी मोहान्धकारव्यये ।

सम्यक्त्वक्षितिपस्य दुर्दमरिपुत्रंशे मुजौ शासना-

रण्यस्थौ प्रतिवादिकुम्भदलने यौ व्याघ्र-सिंहौ श्रुतौ ॥ १५४ ॥

श्रीमास्ततोऽजनि मुनिः स तदीयपट्टश्रीपट्टवन्धमुकुटो हरिभद्रधरिः ।

एकत्र सोम-शतपत्रगुणौ सुखाग्रे, शश्वद्विवोधमधुरौ समवासयद् यः ॥ १५५ ॥

नृणां यत्पदपद्मयोर्भुवि भवत्यौन्नत्यहेतुर्नेतिर्भालन्यस्तरजोव्रजो वितनुते सर्वप्रकर्षोदयम् ।

आधत्ते च नखेन्दुदीधितिभरः पञ्चाकरोल्लासनं, स्तौमि श्रीहरिभद्रधरिसुगुरोस्तस्याद्भुतं वैभवम् ॥ १५६ ॥

जयति विजयसेनसुरिखरीकृतसुकृतस्तदयं तदीयपट्टे ।

जितजगदपि भन्मथो न यस्य, व्यधित तनुप्रतिपन्थिनोऽपि तापम् ॥ १५७ ॥

ईन्दुः पत्रावलम्बं व्यधित कुबल्ये दुर्मदात्मा प्रपेदे.

गैर्जिः पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं वारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे यशसि विवैमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १५८ ॥

यस्मादभ्युदयं भजेन्ननु जनो धर्मस्य तस्याप्यसौ,

दूराद् दूरतरं चरत्यनुदिनं संवर्धमानः श्रिया ।

दुर्दैवव्ययमानवैभवभरस्तादृक्षलक्ष्मीकृते,

तस्यैवामिमुखं हि धावति सुषामानुर्यथा भास्वतः ॥ १५९ ॥

दोषोन्मुद्रणमुद्रितेऽपि दिवसारभास्मिन्तेऽपि स्थिते,

भाग्याम्बोरुहि निर्विशेषितमनःसन्तोषपोपस्थितिः ।

अन्तः सन्ततधर्मनिर्मलमधुस्वादैकतानाशयः,

साधुर्माधुकरी बिमर्ति विरलो वृत्ति जनः कश्चन ॥ १६० ॥

आयुर्वयुहतोर्मिवत् तरुणिमा धूर्मिभ्रमत्कम्बुवत्,

कम्बुपसवदम्बुबुद्बुदकवल्ग्वक्ष्मीलवोऽप्यन्वहम् ।

सद्यो बुद्बुदबिन्दुमेदकणवत् तोषोऽपि दोषादिक-

क्रूराहनिधौ कुकर्मजलधौ साक्षादिव भेक्ष्यते ॥ १६१ ॥

ईदृगरूपगुरुपदेशविशदस्वाभाविकस्वच्छधी-

स्तेजःपालनिजानुजानुचरितः श्रीवस्तुपालः कृती ।

शुभादभयशःप्रसूनसुमगश्रीवल्लिकन्दोपमां,

धर्मस्थानपरम्परां रचयितुं धत्तेतमामुद्यमम् ॥ १६२ ॥

१ पदमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतौ सप्तदशपद्यनयाऽपि निरीक्ष्यते ॥ २ गार्जेन् प० का० मुद्रिते ॥ ३ प्रच्छ-
मरे उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतौ ॥

मज्जन्तीमवनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधर-

माम्भारं रचयाञ्चकार यमसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुभगः प्रेक्षामृदङ्गस्वनै-

र्गजन् विश्वजैथी जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो मूलै

॥ १६३ ॥

स्तम्भनपुरचैवतगिरिदैवतचैत्ये प्रपञ्चिते येन ।

शत्रुञ्जयजिनपुरतस्तीर्थत्रयगतिकलं कुरुतः

॥ १६४ ॥

शत्रुञ्जये भवपयोधितसार्थतीर्थे, येनेन्द्रमण्डपमखण्डपदं व्यधायि ।

तस्मादुरःकरधृताद्भुतकुम्भशक्त्या, तीर्त्वा तमोजलमयन्ति जना जिनामे ॥ १६५ ॥

अस्मिन्नाभिभ्रुवः प्रभोस्तनुभवश्चक्री स चक्रे पुरा,

चैत्यं श्रीभरतः परे तु सगरक्ष्मापालमुख्या व्यधुः ।

देवो दाशरथिः पृथासुतपतिः प्राग्वाटभूर्जविडिः,

शैलादिपन्नपः स वाग्भटमहामन्त्री च तस्योद्धृतिम् ॥ १६६ ॥

व्यातन्वत्तमरेन्द्रमण्डपमयं श्रीदैवत-स्तम्भना-

लङ्कारप्रभुनेमि-पार्श्वसहितं तीर्थेऽत्र शत्रुञ्जये ।

प्राग्वाटान्वयवार्धिवर्धनविधुधर्माश्रमन्त्रीशिता-

श्लाघ्यः सङ्घपतिः सतां विजयते श्रीवस्तुपालोऽधुना ॥ १६७ ॥

किं चित्रं यदि यत्सवत्सलतया स्वच्छाश्ममूर्तिच्छला-

दत्राऽऽखण्डलमण्डपे सुरपुरादभ्याययुः पूर्वजाः ।

एतस्य प्रतिपन्नसूनुपदवीभाजोऽपि येनाद्भुत-

मीत्या वासमिह व्यधाद् विषिपुरं त्यक्त्वाऽपि चाग्देवता ॥ १६८ ॥

श्रेष्ठे काञ्चनपट्टिकं जिनपतेराद्यस्य भामण्डल-

श्रीतुल्यं पुरतोऽपि सत्यपुरभूवीरावतारं मुद्रा ।

कुम्भान् पद्म च पद्मपातकतमश्चण्डद्युतीन् मण्डपे,

धीशुश्रुञ्जयदन्तिदाननदवचके तढागं च यः ॥ १६९ ॥

चक्रे च यो घवलके विमलाद्रिचैत्यं, पञ्चासरं च पुरि गूर्जरकर्णिकायाम् ।

तत्केतुकैतवकरद्वयनतनेन, शुभप्रभां नमसि नतयति स्म कीर्तिम् ॥ १७० ॥

प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशस्तीर्थेशं मुनिमुग्रतम् । योऽश्वावतारतीर्थस्य, मन्दिरं विदधे हृत्ती ॥ १७१ ॥

प्रामे शासनदधे च, विदधे योऽर्कपालिते । तढागं सामगराकारमालयः प्रपगा सह ॥ १७२ ॥

व्यानान् पीषधालानां, नासत्यरुचिनेष्टितः । यः पापीपधनालानां, योगि श्रीमानकारयन् ॥ १७३ ॥

१ यमिदं उदयप्रभोपस्तुतस्तुती एवमिदं जिनमप्यनयाऽपि इत्यनेन ॥ २ यदसौ उदयप्रभोपस्तुतस्तुती ॥
३ यो विमाति भुयने धीपमेगन्धद्विपः उदयप्रभोपस्तुतस्तुती ॥

येन स्तम्भनकाधिदैवतजिनप्रासादमुद्धृत्य तं,
तत्तेने किमपि प्रपाद्वयमपि श्वेतांशुशुभ्रप्रभम् ।

यत् पश्यन्ति पुरो जिनेश्वरपदानुध्यानयात्राधना,
धीमन्तो निजमूर्तिकीर्तिसुकृतं चञ्चद्भया(द्धजा)डम्बरम् ॥ १७४ ॥

श्रीमालवेन्द्रसुमटेन सुवर्णकुम्भानुत्थारितान् पुनरपि क्षितिपालमन्त्री ।
श्रीवैद्यनाथसुरसन्ननि दर्भवत्यामेकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यधत् ॥ १७५ ॥

तत्रैव वीरधवलक्षितिवल्लभस्य, मूर्ति तदीयमुदशोऽपि च जैत्रदेव्याः ।
स्वीपानुजस्य च निजस्य च मल्लदेवमन्त्रीश्वरस्य च चकार स गूपमन्त्री ॥ १७६ ॥

नृत्यन्त्या व्योमरञ्जे क्रमकटकझणत्कारतारं युगझा-
रञ्जचक्राङ्गनादं सचिवकुलपतेर्वस्तुपालस्य कीर्तः ।

खेदप्रस्वेदबिन्दुश्रियमियमयते पद्धतिस्तारकाणां,
यावत् तावत् पताकाघलचलनविधिं चैत्यमाला विधत्ताम् ॥ १७७ ॥

इमामकृत सद्गुरोर्विजयसेनसूरिप्रभोः, क्रमाम्बुजरजोमृजा विमलमानसोल्लासभृत् ।
प्रशस्तिमुदयप्रभः प्रभवदद्भुतप्रातिभप्रभावभरभासुरः सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीम् ॥ १७८ ॥

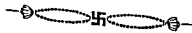
यक्षस्य च कपर्दिनः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ १७९ ॥

॥ समाप्ता सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीसंज्ञकेयं प्रशस्तिः ॥

॥ कृतिरियं पण्डितपुण्डरीकश्रीमदुदयप्रभस्य ॥

॥ सङ्ख्या ग्रन्थाग्रं ४०० ॥ शुभं भवतु ॥

॥ लेखकपाठकयोश्च कल्याणमस्तु ॥



१ श्रीवैद्यनाथपरिवेदमनि दर्भवत्यां, यान् दुर्मेदी सुमटघर्मनृपो जहार ।

तान् विंशतिं सुतिमतस्पर्शयकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥

नरेन्द्रप्रभिवस्तुपालप्रशस्ती ॥

द्वितीयं परिशिष्टम्

नागेन्द्रगच्छमण्डनश्रीउदयप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालस्तुतिः ।

पीयूषादपि पेशलाः शशधरज्योत्स्नाकलापादपि, स्वच्छा नूतनचूतमञ्जरिभरादप्युल्लसत्सौरमाः ।
वाग्देवीमुखसामसूक्तविशदोद्गारादपि प्राञ्जलाः, केषां न प्रथयन्ति चेतसि मुदं श्रीवस्तुपालोक्तयः ॥ १ ॥
चेतःकेतकगर्भपत्रविशदं वाचः सुधाबन्धवः, कीर्तिः कार्तिकमासमासलशशिज्योत्स्नावदातद्युतिः ।
आश्चर्यं क्षितिरक्षणक्षणविधौ श्रीवस्तुपालस्य यत्, कृष्णत्वचरितैरपास्तदुरितैलेकिषु मेजे भुजः ॥ २ ॥
श्रीवस्तुपालमन्त्रीन्दोर्द्रुमः किं गुणगौरवम् ? । यस्य निष्प्रतिमानस्य, तुलनायाः कथा वृथा ॥ ३ ॥

सूरो रणेण चरणप्रणतेषु सोमो, दक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।

॥ १ ॥ नीतौ गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च प्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ ४ ॥

मृगणपुमृगणपक्षैर्मालपट्टेषु लब्धा, विधिविहितकुवर्णश्रेणिकी याचकानाम् ।

विरचयति सुवर्णश्रेणिमूषाममीपां, भ्रुवमिति नववेधा वस्तुपालः सुमेधाः ॥ ५ ॥

युद्धपर्वणि कदाऽपि न दृष्टं, यस्य पृष्ठमसुदृढिकुरन्वै ।

॥ १ ॥ सप्रतिशमिव वीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥ ६ ॥

शङ्खं शार्ङ्गधरस्य शैलरमणि शूलायुधस्य द्विप,

वज्रास्त्रस्य रद परश्वधभृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भटो नि सीमधामा यशो,

नामाऽऽयस्य हहा ! जहार तु कुतो युग्य जरद्भक्षणः ? ॥ ७ ॥

सेवालन्ति पय समुद्रति दिशामन्तेषु मध्येतम,

सारङ्गान्ति शशाङ्गान्ति धुंविपिने दानन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति मृदपदन्त्यनुलताखण्डं सुधाकुण्डति,

॥ १ ॥ श्रमन्तर्भुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यर्थदुष्कीर्तयः ॥ ८ ॥

भर्तुर्वैपगय विषाय कितवः कोऽप्येति मामुन्मना—

स्तेनासुं विजये ! निवारय यतो मे नीलकण्ठ प्रिय ।

१ पयमिदं धर्माभ्युदयदशमवर्गग्रान्ते, प्रबन्धकोशगतवस्तुपालप्रबन्धे पदपठितम् च “एव स्तुत केनापि कविना” इत्युल्लेखेन निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पयमिदं प्रबन्धकोशे वस्तुपालप्रबन्धे अष्टापञ्चाशत्तमं “कथितं” इत्युल्लेखेनोद्धृतं वर्तते ॥ ३ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या ९१ तमम् ॥ ४ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या ५२ तमम् ॥ ५ टो चिम्बेकधामा सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या ६ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या ३७ तमम् ॥ ७ सुभुवने सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या ८ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्प्लव्या १३४ तमम् ॥

जल्पन्तीति सती यदीयशसा शुभ्रीकृते निर्भरं,
त्रैलोक्येऽपि पिनाकिना सशपथं प्रत्यायिता पार्वती ॥ ९ ॥

कैराम्भोजं मेजे सततविततं यस्य कमला,
प्रियारागादागादनु दनुजमेत्ता स्वयमसिः ।

यशःसूनुर्नूनं तदजनि तयोरमजकथा-
सदर्पः कन्दर्पद्विपमपि रूपाऽद्यो व्यधित यः ॥ १० ॥

दिरैयात्रोत्सववीरवीरघवलक्षोणीधवाध्यासितं,
प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।

धुर्ये आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,
न श्लाघ्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ? ॥ ११ ॥

गर्जन्निर्जरकुञ्जरे सुरजति प्रौढोर्मिभिर्नृत्यति,
क्षीराब्धौ कलहंसिकाकलकलैर्गङ्गाजले गायति ।

श्यामाकामुकपारिपार्श्वकयुतो विश्वत्रयीसम्भद-
क्रीडानाटकसूत्रधारपदवीं यत्कीर्तिपूरो ययौ ॥ १२ ॥

उद्धूतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमर्चण्डस्य चिद्रूपता-
माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाब्धिग्रन्थात्मनः ? ।

दुःस्थाना प्रतिभूभृतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,
हृक्पातैर्वितथैव काचन लिपिर्येन त्रिवेदीकवेः ॥ १३ ॥

यत्कीर्तः स्वैरमैरावणमदसमदग्रान्तमृद्भालिगीत-
स्फूर्जद्गर्जामृदद्रध्वनिभिरिव समुल्लासितायाः सितायाः ।

नित्यं नृस्यं सृजन्त्याः शिरसि सुरगिरेश्वारुचारीप्रचार-
स्पष्टप्रमृष्टहारावलिगलितमणिग्रान्तिमायान्ति ताराः ॥ १४ ॥

यैर्नद्धाऽतिचलाऽवलाऽपि कमला गम्भीरिमाद्यैर्गुणै-
स्तैरेषाऽपि न नहते विमु दृढैः कीर्तिर्जगज्जाह्निकी ? ।

सञ्चिन्वेति यथा यथा गमयति प्रौढि परा यो गुणा-
नुदामैव तथा तथाऽभि[स]रति स्वैरं दिगन्तानसौ ॥ १५ ॥

'श्रीवामाभ्युजमानं परिणतं पद्माङ्गुलिच्छन्नतो,
जगमुर्दक्षिणपञ्चगान्मयता पद्मापि देवद्रुमाः ।

१ "कृते स्वयंतस्त्रैलो" गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या ॥ २ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या ३४ तमम् ॥ ३ पद्यमिदं गुरुतकी-
र्तिज्ञोक्त्या १२१ तमम्, तथा उदयप्रभानामैव निर्दिष्टं प्राचीनलेखग्रन्थभाग २ लेख ४३ मध्ये तृतीयम् ॥ ४ भाति ध्या-
गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या प्राचीनलेखग्रन्थभाग २ च ॥ ५ इत आरभ्य प्रीणि पद्यानि गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या कमरा १२९-
१३०-१३१ तमानि ॥ ६ "अन्द्रस्य गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या ॥ ७ "च येन कविता काऽपि मिलोकी कवेः गुरुतकी-
र्तिज्ञोक्त्या ॥ ८ "आनिनादस्फुरदुगुरुजोद्भासि" गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या ॥ ९ नृत्तं नृ" गुरुतकीर्तिज्ञोक्त्या ॥
१० पद्यमिदं पद्माभ्युदयगन्तमयन्ते प्रवचकोद्यतस्तुभालप्रबन्धे पठितमं च "इतरस्तु" इत्युद्देशेनोक्तिरितं वर्तते ॥

वाञ्छापूर्णाकारणं प्रणयिनां जिह्वैव चिन्तामणि-

॥ १६ ॥

ईन्दुः पत्रावलम्बं व्यधित कुवलये दुर्मदात्मा प्रपेदे,

गजिं पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं बारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे यशसि प्रैष्टमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १७ ॥

पद्माभिरामहस्तेन, महस्तेन वितन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १८ ॥

मौ भून्मद्भुवनेऽपि दुस्तमतमःस्तोमस्तथा मास्म भूजेत्रेणुं द्युसदां सदाविकसितेऽगामीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गामिरजःसमुच्छ्रयमयाद् दम्भोलिपाणिर्महीमम्भोभृद्विरसीपिचत् प्रतिपदं यतीर्थयात्रोत्सव्रे ॥ १९ ॥

ध्वन्तः कज्जलमञ्जुलथि यदिदं शीतद्युतेर्वीर्यते, तन्मूढाः कवयन्ति लक्ष्म न वयं सुक्ष्मेक्षिकाकाङ्क्षिणः ।

यद्यात्रोत्सवमद्भुतं रचयता श्रीवस्तुपाल ! त्वया, शीतांशौ लिखितं स्तनाम तदिदं प्रत्यक्षमुद्दीक्ष्यते ॥ २० ॥

मैज्जन्तीमवनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधरप्राग्भारं रचयाञ्चकार यदसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुमगः प्रेक्षादृढस्त्वैर्गर्जन् विश्वजैर्यो विमाति भुवने श्रीधर्मगन्धर्विषः ॥ २१ ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद्दानसौरमवता भवता वितेने, नानेकपेन मदभेदुरिता सुखश्रीः ॥ २२ ॥

ईश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परप्रार्थनादेन्यमन्य-

स्तुच्छमिच्छां विधत्ते तनुहृदयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पदुर्मेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः करुणवृक्षः ॥ २३ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।

येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्येव शक्रहृदि शैलशिलाविशाले ॥ २४ ॥

शक्रे शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्स्नासपलं तव,

त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्भुतम् ।

यच्चादृढपाशवैशसकृतातद्वाभिषङ्गाः स्फुटं,

नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलस्पदम् ॥ २५ ॥

आशाम्यो नवपुष्पपेशलयशःतौरभ्यसम्भावनासंहृतैः सततं पतद्विरमितो राभार्थिभिः सेवितः ।

रक्तपत्रपवित्रया घनलसत्पुष्पाभूतैः सिक्तया, स्निष्टः श्रीलतया मदीरुह इव श्रीवस्तुपालः यमौ ॥ २६ ॥

१ तत्तु धर्माभ्युदयमहाकाव्ये ॥ २ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिकहोलिन्या १५८ तमम् ॥ ३ विष्टं गुरुतकीर्ति-
होलिन्याम् ॥ ४ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिकहोलिन्या १४२ तमम् ॥ ५ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिकहोलिन्या १४५ तमम् ॥
६ 'येऽपि द्युसदां सदाविकसिते सम्मील' गुरुतकीर्तिकहोलिन्याम् ॥ ७ प्रतिदिनं यं गुरुतकीर्ति-
होलिन्याम् ॥ ८ पद्यमिदं धर्माभ्युदयाष्टमसर्गान्ते वर्णते ॥ ९ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिकहोलिन्यां १६३ तमम् ॥ १०
यमसौ गुरुतकीर्तिकहोलिन्याम् ॥ ११ 'यौ जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो भूतले गुरुतकीर्तिकहोलिन्याम् ॥ १२
पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यैकादशसर्गान्ते विद्यते ॥ १३ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यपञ्चमसर्गान्ते वर्णते ॥

नेत्राणाममृताञ्जनं कथमिव श्रीवस्तुपालः॥कृती,

सोऽयं नास्तु धनोदयः परिलसद्भारिधर्मस्थितिः ।।

चके मार्गणपाणिशुक्तिकुहरे यः स्वातिवृष्टिं सुहुः,

कृत्वा मौक्तिकनिर्मलं निजयशो दिक्कामिनीमण्डनम्

॥ २७ ॥

श्रीवस्तुपाल ! क्षितिपालमुद्रां, भूमण्डलान्तः कति नैव दधुः ।।

दोषस्य दुष्टप्रभवस्य मन्त्रिन् ।, प्रभुर्भवानेव तु निग्रहाय

॥ २८ ॥

या प्रार्थना याचकवक्त्रवासादासादयद् दुर्भगतामतीव ।

दानाय सैवार्थिषु वस्तुपाल !, स्थिता तवाऽऽस्ये सुभगीवभूव

॥ २९ ॥

अत्यद्भुता सचिवपुङ्गव वस्तुपाल !, कौतस्कुती स्फुरति धर्मकला तवेयम् ? ।

यत् कर्हिचिद् विमुक्ततामुपनीय पृष्टा, पीठमि (नि ?) पश्यसि न मार्गणमण्डलस्य

॥ ३० ॥

त्रिजगति यशसस्ते तस्य विस्तारभाजः, कथमिव महिमानं ब्रूमहे वस्तुपाल ! ।

सपदि यदनुभावस्फारितस्फीतमूर्तिर्विंधुरगिलदरातिं राहुमाहुस्तमङ्कम्

॥ ३१ ॥

बाणे गीर्वाणगोष्ठीं भजति भैगवति ब्रह्मभूयं प्रपन्न,

न्यासे विद्यानिवासे कलयति च कला कैशकीं कालिदासे ।

माघे मोघां मघोनः सफलयति हैशं वोऽय वाग्देवतायाः,

सोऽयं धात्रा धरित्र्यां निवसनसदनं प्रस्तुतो वस्तुपालः

॥ ३२ ॥

वर्षीयान् परिलुप्तदर्शनपथः प्राप्त. परं तानवं,

रोहन्मोहतया तथा हृतपरिस्पन्दोऽतिमन्दोद्यमः ।

श्रीमन्त्रीधर वस्तुपाल ! भवतो हस्तावलम्ब चिराद्,

धर्मः प्राप्य महीं विहर्तुमधुना धत्ते पुनः पाटवम्

॥ ३३ ॥

॥ इति नागेन्द्रगच्छीयश्रीउदयप्रभसूत्रिकृता वस्तुपालस्तुतिः ॥



१ पयसास्तोत्रार्थमिदं सुहृदकीर्तिहोत्रिन्यां १०५ तमश्लोके ॥ २ 'वृष्टिप्रजैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनीभूषणम्' सुहृदकीर्तिहोत्रिन्याम् ॥ ३ पयमिदं धर्माभ्युदयचतुर्थसर्गप्रान्ते वर्तते ॥ ४ पयमिदं पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रद्वयवस्तुपालप्रबन्धे २४८ तमं सोमेश्वरदेशोक्तयोर्लिखितं वर्तते ॥ ५ मघयति पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ६ 'दायी का' पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ७ दशं चाद्य पुण्यनप्रबन्धसर्गप्रदे ॥ ८ पयमिदं धर्माभ्युदयचतुर्थसर्गप्रान्ते वर्तते ॥

तृतीयं परिशिष्टम्

मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिसूत्रिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

स वः श्रेयः शत्रुञ्जयशिखरशीर्षकमुकुटः, प्रदोषान्तध्वान्तव्यतिकरनिकाराम्बरमणिः ।

मवन्नान्तिश्रान्तिव्यपनयनदीप्तामृतसर सनाभिः श्रीनाभिप्रभवजिननाथः प्रथयतु ॥ १ ॥

श्रीप्राग्वाटकुलेऽत्र चण्डपमुताच्चण्डप्रसादादभूत्,

पुत्रः मोम इति प्रसिद्धमहिमा तस्याश्चराजोऽञ्जजः ।

तस्मात्तूष्णिग-मल्लदेवसचिवौ श्रीवस्तुपालस्तथा,

तेजःपाल इति श्रुतास्तनुमुवश्रत्वार एतेऽभवन् ॥ २ ॥

चेतः किं कलिकाल ! सालसमहो ! किं मोह ! नो हस्यते ;

तृष्णे ! कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विष्णौव ! मोघो भवान् ? !

नृमः किं नु सखे ! न खेलति किमप्यस्माकमुज्जृम्भितं,

सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य संवर्धितम् ॥ ३ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भजे न चक्षुष्यथे,

तस्थौ कामगयी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽस्मिन्नवलोक्य याचकचर्म तिष्ठेत् कोऽन्यस्ततः,

स्तुत्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुकृती दानैकवीरः कथम् ? ॥ ४ ॥

स श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, श्लाघ्यास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः ? ।

श्री-स्नारदा-मुकृतकीर्तिमयत्रिवेण्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गो यः ॥ ५ ॥

स्वच्छन्दं हरिशङ्करः स भगवान् यत्कीर्तिविस्फूर्तिभि-

र्विभ्रद् मस्मकृताभ्ररागमिव तद् भूतेशमृतं वपुः ।

सर्वाङ्गं घटितां गिरीश्वरसुता हुम्भाविपुत्रीं जवाद्,

व्यावृत्तां च सहस्ततालहसितैर्वैलक्ष्यमध्यापयत् ॥ ६ ॥

दायादा कुमुदावलिर्विचकिलश्रेणी सहाध्यायिनी,

सध्रीची सुरसिन्धुवीचिवितति.....की चन्द्रिका ।

१ पद्यमिदं नरचन्द्रसूरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये १९ संख्यगिरिनारशिलाकेले प्रथम-
पद्यतया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४२ संख्यगिरिनारसत्कशिलाकेले
प्रथमपद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ 'कथय' यस्य करुणं तिष्ठेत् कोऽन्यः स्वतः पुण्यः सोऽस्तु गिरिनारशिलाकेले ॥

शीतज्योतिःप्रकाशं तदनु ससुदितं तद्यशो येन तेने,
शश्वद्विस्तारिराकारजनिमहमहो ! विश्वतो विश्वमेतत् ॥ २१ ॥

चण्डांशोरपि चण्डतामगमयद् यस्य प्रतापोदयः,
शीतांशोरपि शीतमानममजद् यस्य प्रसादोत्सवः ।

ब्रह्मास्वादनतोऽपि तोषमपुपद् यस्यावदातं यशः—

स्तप्तोकोत्तरमस्य कस्य वचसां पात्रं चरित्राद्भुतम् ? ॥ २२ ॥

यस्मिन् धर्मं पुरस्कृत्य, विपद्भ्यो रक्षति क्षितिम् । जने जन्यमजन्यं च, द्वयमप्राप्यतां गतम् ॥ २३ ॥

तस्मिन् काञ्चनकोटिभिः प्रणयिनां दारिद्र्यमुद्राद्बुद्धिः,

व्यक्तं काञ्चनशैलखण्डनविधावाखण्डलः शक्तिः ।

आम्यत्येव निदेशतोऽस्य तदयं राज्ञा ससुरः सदा,

नक्षत्रैः परिवारितश्च परितोऽप्यद्याप्यसु रक्षति ॥ २४ ॥

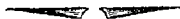
नभस्ये निर्वृष्टाः शरदि नहि व्यपन्ति जलदाः, फलघातैराचैर्न खलु फलवृक्षाश्च फलिनः ।

प्रदुग्धा वा गावः पुनरपि न दुग्धानि ददते, कदाऽप्येतस्योच्चैर्न तु वितरणे श्राम्यति मतिः ॥ २५ ॥

दीर्घः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः खेहं मुहुः सहरन्निन्दुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सुरः क्रूरकरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विनस्तत् केन प्रतिमं श्रुवीमहि महः श्रीवस्तुपालाभिषम् ॥ २६ ॥

॥ इति मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिकृता श्रीवस्तुपालप्रशस्तिः ॥



१ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखनग्रन्थे भाग २ मध्ये ३९ सख्यगिरिनारसत्त्वशिलालेखे चतुर्थं पद्यतया, पुरातनप्रबन्धसंग्रहगतवस्तुपालप्रबन्धे २१९ तमं सोमेश्वरदेवोक्तियोगिनिमित्तं च वर्तते ॥ २ 'क्रूरतर गिरिनारशिलालेखे पुरातनप्रबन्धसंग्रहे च ॥ ३ यवीमि सच्चिदं श्री' गिरिनारशिलालेखे ॥

चतुर्थं परिशिष्टम्

मलघारिथीनरेन्द्रप्रभत्तरिनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।



स मङ्गलं वो वृषभध्वजः क्रियाज्जावलीसंवलितसमण्डलः ।	
यदीयमङ्गं किल सर्वमङ्गलाशितं प्रमोदाय न कस्य जायते !	॥ १ ॥
समूलमुन्मूलयितुं सुरदुहः, सन्ध्यासमापौ चुलुकीकृतेऽम्भसि ।	
स्वयम्भुवा यः ससृजे मठाप्रणीः, समग्रशक्तिः स चुलुक्पथे [शैत्यभूत्	॥ २ ॥
तदन्वयाम्भोषिविबुधैर्विभूतविरोधिमूलोऽजनि मूलराजः ।	
न कापि दोषोक्तिरगस्तु यस्य, यश्चापकाशैर्विशदेऽपि विश्वे	॥ ३ ॥
य(त)स्यात्मभूः समभवद् मुञ्जदण्डचण्डश्चासुण्डराज इति राजकमौलिरलम् ।	
भूवल्लमस्तदनु वल्लभराजदेवस्तन्नन्दनो सुदसुदञ्चितवान् प्रजानाम्	॥ ४ ॥
तस्यानुजन्मा समभूत् परसीयुदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।	
बभूव भीमो रणभूमिभीमस्ततोऽपि सीमा जगतीपतीनाम्	॥ ५ ॥
तदात्मजः संयति लब्धवर्णः, कर्णोऽभवत् कर्णसमप्रतापः ।	
श्रीसङ्ग्रमाद् वीररसोऽपि यस्य, वभार शृङ्गारमयत्वमेव	॥ ६ ॥
सुसुप्तदीपोऽजनि वैरिवीरद्विपेन्द्रसिंहो जयसिंहदेवः ।	
नवेन्दुकुन्दघुतिभिर्धरित्री, यः कीर्तिमुक्तामिरलङ्घकार	॥ ७ ॥
अयं हि राकासुविलासकौतुकी, रिपुस्तदस्यास्तु विपर्ययोऽधुना ।	
इतीव यो मालवमेदिनीश्वरं, चकार काराविनिवेशदुःस्थितम्	॥ ८ ॥
ततोऽभवत् कीर्णलतालवालः, कुमारपालः क्षितिपालभास्वान् ।	
यस्य प्रतापः क्षितिशिरेऽप्यरीणां, स्वेदोदबिन्दून्पिकांश्चकार	॥ ९ ॥
उदग्रतेजःसुकृतैकमन्दिरं, धराधरेन्द्रः स गिरामगोचरः ।	
व्यधत्त यः शत्रुकुलत्रमण्डली, महीमदेशो च विहारभूषणाम्	॥ १० ॥
तस्मादभूदजपपाल इति क्षितीशः, प्रत्यर्धिपार्थिवकुलप्रलयाश्रयाशः ।	
श्रीमूलराज इति वैरिसमासराजजिज्याजविक्रमनयस्तनयस्तदीयः	॥ ११ ॥
बन्धुः कनीयान् विजयी तदीयः, श्रीमीमदेवोऽस्ति महीमहेन्द्रः ।	
प्रवासदायिन्पि वैरिवर्गो, बभूव यस्मिन् वनाभिलाषी	॥ १२ ॥

श्रियं चोलुक्यानां प्रकृतिमतिभेदेन विवशां, वशीकृत्याऽमुष्मिन्नसमविनिवेशा[म]कृत यः ।

स नेताऽर्णोराजः समभवद्विह्वान्वयवरे, वरेण्यश्रीशाखां.....णिरद्वैतमुभटः ॥ १३ ॥

भूयांस एव प्रथितप्रतापा, यशस्विनस्तस्य सुता बभूवुः ।

प्रदीप्यते तेषु जयी विनिद्ररुद्रप्रसादो लवणप्रसादः ॥ १४ ॥

अपास्य शौण्डीर्यमदं परेषां, यद्विक्रमो मानसमध्युवास ।

तदङ्गनानां च दृशो विकृप्य, बलान् विलासान् विदधेऽश्रुवारि ॥ १५ ॥

तन्नन्दनः कुमुदकुन्दनिर्भैर्यशोभिर्विधानि धीरधवलो धवलीकरोति ।

यद्विक्रमः कमनिरस्तसमस्तशत्रुर्मन्येऽथ ताम्यतितमामहितापश्यन् ॥ १६ ॥

चित्रं विवल्गन्नपि यत्प्रतापः, प्रचण्डमार्तण्डमहोमहीयान् ।

विरोधिवर्गस्य निसर्गसिद्धं, मुजामहोप्याणमपाकरोति ॥ १७ ॥

इतश्च—

प्राग्वाटवंशध्वजकल्पकीर्तिः, श्रीचण्डपः खण्डितचण्डिमाऽभूत् ।

उवाप्त यस्मिन् गुणवारिसायौ, चिराय लक्ष्मीप्रसुरेव धर्मः ॥ १८ ॥

गुणौघहंसालिसरोजपण्डथ्यण्डप्रसादोऽस्य सुतो बभूव ।

यत्कीर्तिसौरभ्यतरङ्गितानि, जगन्मुदेऽद्यापि दिगन्तराणि ॥ १९ ॥

पल्युर्नदीनानिव विध्वनन्दनो, बभूव सोमोऽस्य सुतः कलानिधिः ।

एकाऽपि..... ॥ २० ॥

आशाराजः शस्मयीस्तस्य सन्तुर्जज्ञे विज्ञश्रेणिसीमन्तरत्नम् ।

येनाऽऽतेने [न] क्वचिद् बालसङ्गश्चित्रं चक्रे नाप्यलीकप्रसक्तिम् ॥ २१ ॥

तस्याऽभवन्निर्मलकर्मकारिणी, कुमारदेवीति सधर्मचारिणी ।

अस्त सा नीतिरिवातिनाम्बितप्रदानुपायांश्चतुरस्तनूहान् ॥ २२ ॥

लूणिगः प्रथमस्तेषु, मल्लदेवस्ततोऽपरः । वस्तुपालः सुधीरस्मात्, तेजःपालोऽथ धीनिधिः ॥ २३ ॥

वंशध्रीमौलिप्रभिल्लं, मल्लदेवं कथं स्तुवे ? । यस्य धर्मधुरीणस्य, विवेकः सारथीयते ॥ २४ ॥

सरस्वतीकेलिकलामरालः, स वस्तुपालः किमु नाभिनवः ? ।

जिताः पदन्यासमनन्यतुल्यं, वितन्वता के कवयो न येन ? ॥ २५ ॥

दानं दुर्गंतवर्गसर्गललितव्यत्यासवैहासिकं, शौण्डीर्यं भुजदण्डचण्डिमकयासर्वद्वर्षं विद्विषाम् ? ॥

सुद्विष्यस्य दिगन्तभूतलमुजामाहृष्टिविधा श्रियां, कस्यासौ न जगत्प्रमात्यतिलकः श्रीवस्तुपालो मुदे ? ॥ २६ ॥

तेजःपालः सचिवतिलको नन्दताद् भाग्यभूमिर्यस्मिन्नासीद् गुणविटविनामव्यपोहः [प्ररोहः] ।

यच्छायासु त्रिभुवनवनेऽपि प्रगरुमं, प्रक्रीटन्ति प्रसमरमुदः कीर्तयः श्रीसहायाः ॥ २७ ॥

धन्यः स धीरधवलः शितिकैटमारिर्यस्येदमद्भुतमहो महिमप्ररोहम् ।

दीप्तोप्यदीधिति-सुधाकिरणप्रवीणं, मन्त्रिद्वयं किल विलोचनतामुपैति ॥ २८ ॥

मेक्ष्यास्येयं प्रभुमीति-विभूति-वपुरा-ऽऽयुषाम् । वस्तुपालः स्थिरे धर्मकर्मण्येव धियं दधौ ॥ २९ ॥

अगण्यपुण्योदयसत्यकाश्यपीमघौघनिधातनकर्मकर्मठाम् ।

सहैव सङ्गेन नमस्यकर्मणा, यस्तीर्थयात्रामकरोन्महामतिः

॥ ३० ॥

अभ्यर्च्य देवान् पथि साधुमण्डलीमाराध्य शुद्धाशन-पानकादिभिः ।

उद्धृत्य दीनानुपकृत्य धार्मिकान्, यो यात्रया प्राप पवित्रतां पराम्

॥ ३१ ॥

उद्धृत्य पञ्चासरजनवेदम, यस्तत्र संस्थाप्य च पार्श्वनाथम् ।

चकार चौलुक्पपुरे स्वकीर्तिसखीत्वमुखां वनराजकीर्तिम्

॥ ३२ ॥

श्रीयुगादिप्रभोर्वेदमन्युर्बुदाचलमूर्ध्नि यः । श्रेयसे मल्लदेवस्य, मल्लिदेवमतिष्ठिपत्

॥ ३३ ॥

विभ्राणं परितो जिनेन्द्रमवनान्युच्चैश्चतुर्विंशतिं, तापोतीर्णसुवर्णदण्डकलशालङ्कारतारश्रियम् ।

यः शत्रुञ्जयदेवसेवनमनाः शत्रुञ्जयाख्यं जिनप्रासादं धवलकृतामनि पुरे निर्मापयामासिवान् ॥ ३४ ॥

गोमहप्रोज्झितासूनां, देवभूयमुपेयुषाम् । राणभट्टारकाणां यस्तत्रागारमकारयत्

॥ ३५ ॥

वापै तस्य परः स्मेरपद्मां पीयूषवान्धवीम् । प्रपां चापतिमां विश्वप्रीतिदां यो व्यधापयत्

॥ ३६ ॥

पौषधशालाद्वितयं, यस्याऽऽस्ते तत्र मुनिभटाकीर्णम् ।

कलिशत्रुभीतिमहुरधर्मधराधीशदुर्गनिभम्

॥ ३७ ॥

पुरोत्तमे स्तम्भनकाभिधाने, निवेशने पार्श्वजिनेश्वरस्य ।

योऽकारयत् काञ्चनकुम्भदण्डमखण्डधर्मा शिखरं गरीयः

॥ ३८ ॥

नामेयं नेमिनाथं च, तदीये गूढमण्डपे । सरस्वतीं जगत्यां च, स्थापयामास यः कृती ॥ ३९ ॥

अकारयन्नगाकारं, प्राकारं परितोऽत्र यः । निद्राधदमनक्रीडाप्रवृत्तं च प्रपाद्वयम् ॥ ४० ॥

यश्चकार नवोद्धारधारी...द्रुतवैभवाम् । सुधासहचरिं तत्र, वापी व्याकोशपङ्कजाम् ॥ ४१ ॥

मृगुनगरमौलिमण्डनमृनिमुव्रततीर्थनाथमवने यः ।

देवकुलिकासु विंशतिमितासु हेमानकारयद् दण्डान्

॥ ४२ ॥

तस्य गर्भगृहोत्तरे, यस्सैलोक्यदिवाकरी । पार्श्वनाथ-महावीरौ, क्षान्तिधीरो न्यवीविशत् ॥ ४३ ॥

नगराख्ये महास्थाने, चैत्यमाद्यजिनेशितुः । येनोद्धृत्य समुद्भे, कीर्तिर्मरतचक्रिणः ॥ ४४ ॥

व्याघ्ररोत्य(पल्लव)भिधे ग्रामे, पूर्वजैः कारितं पुरा । येन तत्पुण्यवृद्धयर्थमुद्धृतं जिनमन्दिरम् ॥ ४५ ॥

निरीन्द्रग्रामे वोडाख्यवालीनाथस्य मन्दिरम् । विप्रसङ्गातपाताय, प्रजानामुद्धार यः ॥ ४६ ॥

स्थापयन् सीङ्गुलग्राममण्डने जिनवेशनि । यः श्रीवीरजिनं विश्वप्रभोदमदजीवयत्

॥ ४७ ॥

श्रीवैद्यनाथवरवेदमनि दर्भवत्यां, यान् दुर्मदी सुमटवर्मनृपो जहार ।

तान् विंशतिं शुक्तिमत्तपनीयकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥

श्रीवीरधवलमूर्तिर्जयतलदेव्याश्च मूर्तिरसमश्रीः । श्रीमल्लदेवमूर्तिः, स्वमूर्तिरनुजस्य मूर्तिश्च ॥ ४९ ॥

श्रीवैद्यनाथगर्भद्वारवहिर्भित्तिस्सम्भवे निलये ।

अन्तर्भक्तिनिमीलितकरकमलाः कारिता येन

॥ ५० ॥ युगम् ॥

१ श्रीमल्लेन्द्रसुमटेन सुवर्णकुम्भानुत्तरितान् पुनरपि श्रित्तिपालमन्त्री ।

श्रीवैद्यनाथवरवेदमनि दर्भवत्यामेकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यधत् ॥ १७५ ॥

उदयप्रभियायां युद्धतकीतिक्रान्तिनाम् ॥

। ' । स्वविरोधिनीं शुचिर्भुवमुमारश्चये च बदरकूपे च ।

यस्य प्रपां प्रपश्यन्, कलयत्यधिकाधिकं तापम् ॥ ५१ ॥

उद्धारानुजो यस्य, तीर्थे कासहृदामिधे । नामेयमवनं तुङ्गं, स्वयमम्बालयं पुनः ॥ ५२ ॥

स्तम्भतीर्थं नगोत्तुङ्गे, धाम्नि भीमेश्वरस्य यः । शातकुम्भमयं कुम्भं, केतने चाध्यरोपयत् ॥ ५३ ॥

तत्र लोलकृतिं दोलकालं धोतीं च मेसलाम् । यो वृषं च तुपारांशुकान्तिकल्पमकल्पयत् ॥ ५४ ॥

यः स्फुरन्मेदुरामोदे, तस्य गर्भगृहोदरे । मूर्ती न्यवेशयद् धीमानात्मनश्चानुजस्य च ॥ ५५ ॥

॥ ' । तस्य जगत्यां प्रीत्यै, ललितादेव्याः स्ववल्लभाया यः ।

सूत्रयति स्म पवित्रां, वटसावित्रीसदनसहिताम् ॥ ५६ ॥

किं च कारयता तत्र, तत्क्रविक्रयवेदिकाम् ।

॥ स्वस्य प्रकटिता येन, कृत्याऽऽकृत्यविवेकिता ॥ ५७ ॥

उद्धृत्य वैद्यनाथस्य, वेश्म योऽत्रैव मण्डपे । मूर्तिं श्रीमल्लदेवस्य, शस्यकीर्तिरतिष्ठिपत् ॥ ५८ ॥

पुण्यं प्रतापसिंहस्य, यः स्वपौत्रस्य वर्धयन् । तत्रैव रचयामास, ध्वस्तग्रीष्मातपां प्रपाम् ॥ ५९ ॥

प्रभूतमूतराजस्य, यशोराजस्य मन्दिरम् । रथं निर्मापयामास, कीर्तीनां वासवेश्म यः ॥ ६० ॥

असौ भुवनपालस्य, शिवाय शिवमन्दिरम् । अस्थापयत् समं रम्यैर्दशभिर्देवताल्यैः ॥ ६१ ॥

तज्जगत्यां च यः काम्यं, चण्डिकायतनं नवम् । वेश्म रत्नाकरस्यापि, निस्सपलमसूत्रयत् ॥ ६२ ॥

पञ्च पौषधशालाश्च, तत्र येन वितन्वता । पञ्चोत्तरविमानश्रीपात्रमात्मा व्यतन्यत ॥ ६३ ॥

पुण्यायाऽजयसिंहस्य, रोहड्यजिनधाम्नि यः । नामेयप्रतिमां तस्य, मूर्तिं च निरमापयत् ॥ ६४ ॥

इहैवाष्टपदोद्धारं, श्रीशालिगजिनालये । लक्ष्मीघर[स्य] पुण्यार्थमुपकारी चकार यः ॥ ६५ ॥

तत्रैकं राणकश्रीमदम्बडस्य तथाऽपरम् । पुण्यार्थं वैरिसिंहस्य, यस्तीर्थेशं न्यवीविशत् ॥ ६६ ॥

श्रीकुमारविहारेऽत्र, वृत्ररातिनतक्रमौ । पार्श्वनाथ-महावीरौ, प्रीत्या यः प्रत्यतिष्ठिपत् ॥ ६७ ॥

ग्रामेऽर्कपालितकनाम्नि जिनेश्वरस्य, वीरस्य मन्दिरमुदारमकारि येन ।

॥ ' । भूतेश्वेश्म च मनोहरमध्वनीना, सजीविनी तपनतापरिपुः प्रपा च ॥ ६८ ॥

येनैव वियच्छुम्बिवीचिवाचालकूलम् । कासारः कारयाश्चक्रे, क्षीरनीराधिवान्धवः ॥ ६९ ॥

मन्येऽस्मिन्मत्तामुन्देन वष्टुपे पीयूषवर्षैर्मुहुः, केनाप्येतदवश्यमम्बरसरित्स्त्रेहैः पूरितम् ।

व्यक्तं ब्रह्मसुतामरालकुलजैः कीर्णैर्मरालैरिदं, तेनैतस्य न वस्तुपालसरसः स्तोत्रं गुणानीदृगहे ॥ ७० ॥

वल्लभ्यां पुण्यलभ्यश्रीः, प्रासादो वृषमप्रमोः । येनोद्भे मुदा मल्लदेवस्य सुकृतश्रिये ॥ ७१ ॥

ललितादेव्याः पत्न्याः, सुकृताय जिनेन्द्रभवनभासि तटम् ।

तत्र नवकमलललितं, ललितसरः कारितं येन ॥ ७२ ॥

शशुञ्जयनगोत्तमै, श्रीयुगादिजिनेशितुः । कार्तस्वरमयं रम्यं, पृष्ठपट्टमतिष्ठिपत् ॥ ७३ ॥

तस्यैवाऽऽद्यविमोक्षैत्यप्रवेशे येन वामतः । सुव्रतस्वामिनं न्यस्य, भृगुकच्छविमूपणम् ॥ ७४ ॥

वीरं दक्षिणतः सत्यपुराधीशं निवेश्य च ।

तदन्ते भारती देवी, विद्याराध्या न्यवीयत ॥ ७५ ॥ युगम् ॥

तत्रैवाकारयद् धाम्नि, काञ्चनान् मण्डपत्रये । पौत्रप्रतापसिंहस्य, श्रेयसे कलशानसौ ॥ ७६ ॥

स्तोत्रं नामिनरेन्द्रनन्दनगुणान् गोत्रं च कीर्तिं समं, व्याहारं सचिवारविन्दतरणरेतस्य दानाम्बुधेः ।
यत्रोवास विकस्वरोमयमुखी प्रीत्यैव देवीन्द्रिा, तद् येनास्य विभोरकार्यत पुरो ह्वयपरणं तोरणम् ॥७७॥

अत्रैव शैले रचयाञ्चकार, मनोज्ञमाखण्डलमण्डपं यः ।

प्रयान्ति वैलक्ष्यमवेक्ष्य यस्य, लक्ष्मीं सहस्राक्षदृशोऽप्यवश्यम् ७८ ॥

तत्र रैवतकाधीशः, प्रमुश्च स्तम्भनेश्वरः । वस्तुपाले विष्टत्येव, प्रीतिमागत्य तस्थतुः ॥ ७९ ॥

श्रीवस्तुपालस्य कयाऽतिमक्त्या, नेमिः समाकृष्यत ? कौतुकं नः ।

इतीव तस्मिन्नवलोकना-ऽम्बा-प्रद्युम्न-शाम्बाः सममभ्युपेयुः ॥ ८० ॥

तत्राऽऽत्मस्वामिनो वीरघवलस्य धरापतेः । स्वर्दिपामद्विपारूढां, मूर्तिं स्थापयति स यः ॥ ८१ ॥

अत्रैव शत्रुञ्जयशैलमौलौ, नन्दीश्वरद्वीपगतान् जिनेन्द्रान् ।

तस्यानुजः स्थापयति स्म तेजःपालामिधानो यशसां निधानम् ॥ ८२ ॥

धर्मस्थानमिदं विलोक्य जगतामानन्दकन्दोदयप्रावृट्कल्पमनल्पसम्भ्रममरान् नन्दीश्वराख्यं जनः ।

तेजःपालयशसि मांसलरसं गायन् मुहुर्गायते, मन्ये नूतनवस्तुसंस्तववशोद्भूतां प्रभूतां मुदम् ॥ ८३ ॥

अनुपमदेव्यास्तेन, स्वप्रेयस्याः प्रभूतसुकृताय ।

आदिजिनेश्वरपुरतो, विदधेऽनुपमासरश्च नवम् । ॥ ८४ ॥

विशेषके रैवतकस्य गृभृतः, श्रीनेमिचैत्ये जिनवेदमसु त्रिषु ।

श्रीवस्तुपालः प्रथमं जिनेश्वरं, पार्श्वं च वीरं च मुदान्वयीविशत् ॥ ८५ ॥

तदन्तिके च निःशेषसुरा-ऽसुरनिषेविताम् । कारयामास यः काव्यकामधेनुं स्वरस्वतीम् ॥ ८६ ॥

येनाऽऽत्मनः स्वपत्न्याश्च, स्वस्य भ्रातुः कनीयसः । तद्गार्यायाश्च शैवेयचैत्येऽकार्यन्त मूर्तयः ॥ ८७ ॥

अम्बिकाभवने येन, मूर्तिः स्वस्यानुजस्य च । जगन्नेत्रमुधापृष्टिः, कारिता चारिमास्पदम् ॥ ८८ ॥

तदीये शिखरे नेमिं, चण्डप्रश्रेयसे च यः । मूर्तिं रम्यां तदीयां च, मल्लदेवस्य च व्यधात् ॥ ८९ ॥

चण्डप्रसादपुण्यं वद्वैयितुं योऽवलोकनाशिखरे ।

स्थापितवान् नेमिजिनं, तन्मूर्तिं स्वस्य मूर्तिं च ॥ ९० ॥

प्रद्युम्नशिखरे सोमश्रेयसे नेमिनं जिनम् । सोममूर्तिं तथा तेजःपालमूर्तिं च योऽतनोत् ॥ ९१ ॥

यः शाम्बाशिखरे नेमिजिनेन्द्रं श्रेयसे पितुः

..... तन्मूर्तिं च, कारयामास भक्तितः ॥ ९२ ॥

वस्त्रापथे जगत्यां, भवनाम्नः शूलिनो भवनमतुलम् ।

उद्धरति स्म विवेकी, तेजःपालस्तदनुजन्मा ॥ ९३ ॥

पुरतः कालमेघस्य, क्षेत्रपालस्य कारितः । अधिनोर्मण्डपस्तत्र, तेनैव मतिशालिना ॥ ९४ ॥

प्रीतो वस्त्रापथमुवि पुरा यद् ददौ तापसानां, सद्यः किञ्चित् तदिदमधुना प्रापितं तैः करत्नम् ।

प्रामोद्वारादमिलमपि तन्मोचयामास तेभ्यस्तेजःपालः सुकलकृतधीर्वस्तुपालानुजन्मा ॥ ९५ ॥

स्ववंश्यमूर्तिभिः श्रीमद्येमिनाथेन चान्वितः । सुसोद्घाटनकस्तम्भे, वस्तुपालेन निर्ममे ॥ ९६ ॥

अशाराजस्य पितुः, पितामहस्यापि सोमराजस्य । मूर्तियुगमत्र मन्त्री, व्यधापयत् तुरगष्टस्यम् ॥ ९७ ॥

द्वारे यत् किल दक्षिणामनुगतं यच्च प्रतीच्यां स्थितं,
यत् कौबेरदिगाश्रितं च सदनं श्रीनेमिनाथप्रभोः ।
कामं मण्डयति स्म तानि सचिवोत्तंसः स यैस्तोरणै-

र्दृष्टिस्तद्विभवं विभाव्य जगतो नान्यत्र विश्राम्यति ॥ ९८ ॥

गुरुः कुलेऽस्य नागेन्द्रगच्छव्योमार्यमाऽभवत् । श्रीमहेन्द्रप्रभः श्रीमान्, शान्तिस्वरिस्ततः श्रुतः ॥ ९९ ॥

आनन्दा-ऽमरसूरी, तदीयगच्छाब्धिकौस्तुभप्रतिमौ ।

तदनु हरिभद्रस्वरिः, शमरत्नमहोदधिः समभूत् ॥ १०० ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

वस्तुपालजिनबिम्बपद्मतिर्जृम्भते जगति यत्प्रतिष्ठिता ॥ १०१ ॥

अत्यद्भुतैः कृत्यशतैरजसं, योऽसाधयद्धर्ममतुल्यकर्म ।

श्रीवस्तुपालः सचिवावतंसः, प्रकल्पतां कल्पशतायुरेपः ॥ १०२ ॥

यो विद्वद्भिरप्येवं स्तूयते—

त्यागाराधिनि राघवेऽप्येककर्णेन भूरभूत् ।

उदिते वस्तुपाले तु, द्विकर्णा वर्णयतेऽधुना ॥ १०३ ॥

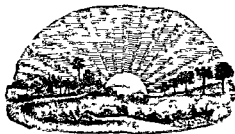
जज्ञे हर्षपुरीयगच्छतिलकः श्रीमन्मुनीन्दुप्रभु-

देवानन्दगुरुस्ततस्तदपरः सूरिश्च देवप्रभः ।

तच्छिष्यैर्नरचन्द्रसूरिगुरुभिर्दत्तप्रतिष्ठोदय-

स्तामेतामतनोत् प्रशस्तिमतुलं सूरिर्नरेन्द्रप्रभः ॥ १०४ ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरवस्तुपालप्रशस्तिः श्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविरचिता ॥



पञ्चमं परिशिष्टम् ।

मलधारित्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

स्वस्ति श्रीवह्निसालाय, वस्तुपालाय मन्त्रिणे । यद्यशःशशिनः शत्रुदुष्कीर्त्या शर्वरीयितम् ॥ १ ॥

शौण्डीरोऽपि विवेकवानपि जगन्नाताऽपि दाताऽपि वा,
सर्वः कोऽपि पथीह मन्थरगतिः श्रीवस्तुपालाश्रिते ।

त्वज्योतिर्दहनाहुतीकृततमःस्तोमस्य तिग्मध्रुतेः,

कः शीतांशुपुरःसरोऽपि पदवीमन्वेतुमुत्कन्धरः ?

॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य यशःप्रकाशे, विश्वं तिरोदधति धूर्जटिहासभासि ।

मन्ये समीपगतमप्यविभाव्य हंसं, देवः स [प]द्मवसतिश्चलितः समाधेः

॥ ३ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविधान्तमार्धिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

शून्येषु द्विपतां पुरेषु विपुलज्वालाकसालोदयाः,

खेलन्ति स्म दवानलच्छलमृतो यस्य प्रतापामयः ।

जृम्भन्ते स्म च पर्वगर्वितसितज्योतिःसमुत्सेकिते,

ज्योत्स्नाकन्दलकोमलाः शरवणव्याजेन यत्कीर्तयः

॥ ५ ॥

कुन्दं मन्दप्रतापं गिरिशगिरिरिपाहङ्कृतिः साश्रुविन्दुः,

पूर्णन्दुः सिद्ध.....विश्रुतिमा पाञ्चजन्यः समन्दुः ।

शेषाहिर्निर्विशेषः कुमुदमपमदं कौमुदी निष्प्रमोदा,

क्षीरोदः सापनोदः क्षतमहिम हिमं यस्य कीर्तेः पुरस्तात्

॥ ६ ॥

यस्योर्वीतिलकस्य किन्नरगणोद्गीतैर्यशोभिर्मुहुः,

स्मेरद्विस्मयलोलमौलिविपलचन्द्रामृतोज्जीविनाम् ।

सृष्टिर्नामवदीदृशी मम न मेऽप्य.....वाप्येति गां,

मुण्डभ्रमरिणद्वयावृशिरसां शम्भुः परं पिप्रिये (?)

॥ ७ ॥

राकाताण्डवितेन्दुमण्डलमहःसन्दोहसंश्रितादिभि-

र्यत्कीर्तिप्रकरैर्जगत्प्रयतिरत्कारैरुद्देवाकामिभिः ।

अन्योन्यानवलोकनाकुलिनयोः दौलतस्मजा-शूलिनोः,

क त्वं क त्वमिति प्रगल्भरमतं वाचो विवेकमिथः

॥ ८ ॥

बाढं प्रौढयति प्रतापशिविनं कामं यशःकौमुदीं, सामोदां तनुते सतां विकचयत्यास्यारविन्दाकरान् ।
 शत्रुस्त्रीकुचपत्रवह्निविविपिनं निक्षेपतः शोषयत्यन्यः कोऽप्युदितो रणाम्बरतले यस्यासिधाराधरः ॥९॥
 तत्सत्यं कृतिभिर्यदेव भुवनोद्धारैकधौरेयतां, धिमाणो मृगमच्युतस्थितिरिति प्रेमोत्तरं गीयते ।
 यत्र प्रेम निरर्गलं कमलया सर्वाङ्गमालिङ्गिते, केषां नाम न जज्ञिरे सुमनसामोर्जित्यवत्यो मुदः ॥१०॥

न यस्य लक्ष्मीपतिरप्युपैति, जनार्दनत्वात् समतां मुकुन्दः ।

वृषप्रियोऽप्युग्र इति प्रसिद्धिः, दधन्निनेनोऽपि न चास्य तुल्यः ॥ ११ ॥

स्वस्ति श्रीवलये, नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो—

रस्पष्टेऽपि दिशां यशः कियदिदं बन्धास्तदेताः प्रजाः ।

दृष्टे सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्तिं काञ्चन या पुनः स्फुटमियं विश्वेऽपि नो मास्यति ॥ १२ ॥

यस्मिन् विश्वजनीनवैभवमरे विश्वम्भरां निर्भरश्रीसम्भारविभाव्यमानपरमप्रेमोत्तरां तन्वति ।

प्राणिप्रत्ययकारि केवलमभूदेहीति संकीर्तनं, लोकानां न कदापि दानविषयं नाप्रार्थनामोचरम् ॥ १३ ॥

दृश्यन्ते मणि-मोक्तिकस्तवकिता यद्विद्वदेणीदृशो,

यजीवन्यनुजीविनोऽपि जगतश्चिन्ताश्मविस्मारिणः ।

यच्च ध्यानमुचः स्मरन्ति गुरवोऽप्यश्रान्तमाशीर्गिरः,

प्रादुपन्यमला यशःपरिमला श्रीवस्तुपालस्य ते ॥ १४ ॥

कौटीरैः कटक-ऽङ्गुलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः, कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यस्यापि विश्राणितैः ।

विद्वांसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञाभृतस्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमपि प्रत्याययाञ्चकिरे ॥ १५ ॥

तैस्तैर्येन जनाय काञ्चनचयैरश्रान्तविश्राणितैरानिन्ये भुवनं तदेतदभितोऽयैश्वर्यकाष्टां तथा ।

दानैकव्यसनी स एव समभूदत्यन्तमन्तर्यथा, कामं दुर्धृतिधामयाचकचम् भूयोऽप्यसम्भावयन् ॥ १६ ॥

आगो यद्वसुवारिवारितजगद्धारिद्यदावानलश्चेतः कण्टककुट्टनैकरसिकं वर्णाश्रमेष्वन्वहम् ।

सहामश्च समग्रवैरिविषदामद्वैतवैतण्डिकस्तन्मध्ये वसति त्रिधाऽपि सचिबोचंसेऽत्र वीरो रसः ॥ १७ ॥

आश्चर्यं वसुवृष्टिभिः कृतमनःकौतूहलकृष्टिभिर्मिस्मिन् दानवनाधने तत इतो वर्षत्यपि प्रत्यहम् ।

दूरे दुर्दिनसंकयाऽपि सुदिनं तत्किञ्चिदासीत् पुनर्येनोर्वीरलयेऽत्र कोऽपि कमलोत्थासः परं निर्मितः ॥ १८ ॥

साक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिव श्रेयोविवर्तैः सतां,

तेजःपाल इति प्रेतीतमहिमा तस्यानुजन्मा जयी ।

यो घटे न दशां कदापि कलितावयामविद्यामर्या,

यं चोपास्य परिस्पृशन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्वृत्तिम् ॥ १९ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे प्रथमपद्यतया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वितीयपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यगिरिनारसत्कशिलालेखे द्वादश-पद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ४ प्रसिद्धम् गिरिनारशिलालेखे ॥

सङ्ग्रामः कतुमिरत्र सततोद्दीपः प्रतापोऽनलः,

श्रूयन्ते स्म समन्ततः श्रुतिमुखोद्गारा वि[धी]नां गिरः ।

मन्त्रीशोऽयमशेषकर्मनिपुणः कर्मोपवेष्टा द्विषो,

होतव्याः फलवांस्तु वीरधवलो यज्वा यशोराशिभिः

॥ २० ॥

श्लाघ्यः स वीरधवलः क्षितिपावतंसः, कैर्नाम ? विक्रम-नयाविव मूर्तिमन्तौ ।

श्रीवस्तुपाल इति धीरल्लामतेजःपालश्च बुद्धिनिलयः सचिवौ यदीयौ

॥ २१ ॥

अनन्तप्रागल्भ्यः स जयति बली वीरधवलः, सशैलं साम्प्रोधि भुवमनिशमुद्धर्तुमनसः ।

इमौ मन्त्रिप्रष्ठौ कमठपति-कोलाधिपकलामदभ्रां बिभ्राणौ मुदमुदयिनीं यस्य तनुतः

॥ २२ ॥

युद्धं वारिधिरेष वीरधवलः क्षमाशक्रदोर्विक्रमः,

पोतस्तत्र महान् यशःशतपटाटोपो न पीनद्युतिः ।

सोऽयं सारमरुद्धिरश्चतु परं पारं कथं न क्षणाद्,

यत्राश्रान्तमरित्रतां कलयतः स्वावेव मन्त्रीश्वरौ

॥ २३ ॥

स्वैरं आम्र्यतु नाम वीरधवलक्षोणीन्दुकीर्तिर्दिवं,

पाताले च महीतले च जलवेरन्तश्च नक्तन्दिवम् ।

धीसिद्धाज्जननिर्मलं विजयते श्रीवस्तुपालाख्यया,

तेजःपालसमाह्वया च तदिदं यस्या द्वयं नेत्रयोः

॥ २४ ॥

श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालपशसामुचावचैर्वीचिभिः,

सर्वस्मिन्नपि लम्बिते धवलतां कलोलिनीमण्डले ।

गङ्गावेवमिति प्रतीतिविकलस्ताम्र्यन्ति कामं भुवि,

भ्राम्यन्तस्तनुसादमन्दितमुदो मन्दकिंनोपार्मिकाः

॥ २५ ॥

हृदो रोहण ! रोहति त्वयि गुरुः किं पीनतेयं ? शृणु,

भ्रातः ! सम्प्रति वस्तुपालसचिवव्यापैर्जगत् प्रीयते ।

तस्मास्त्येव ममार्यकुट्टनकथा प्रीतिदरीकिन्नरी-

गीतैस्तस्य यशोऽमृतैश्च तदियं मेदस्विता मेऽधिकम्

॥ २६ ॥

देवै स्वर्नाभ ! कष्टं, ननु क इव भवान् ? नन्दनोद्यानपालः,

खेदस्तत् कोऽयं ? केनाप्यहह ! हृत इतः काननात् कल्पवृक्षः ।

हुं मा वादीस्तदेतत् किमपि करुणया मानवाना मयैव,

प्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमुर्व्यास्तिलकयति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ २७ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रपुराणा निर्दिष्ट प्राचीनलेख्यस्य ह्यल २ पद्ये ४५ संख्यागिरिनारगस्थितलेखे दशम पद्यपाणि विद्यते ॥ २ 'नीयात्रिकाः गिरिनारगस्थितलेखे ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रपुराणा निर्दिष्ट प्राचीनलेख्यस्य भाग २ पद्ये ४१ संख्यागिरिनारगस्थितलेखे नवमपद्यतया, पुरातनप्रबन्धसंग्रहवस्तुपालप्रबन्धे माणिक्यवर्गी-उक्तिनरा २५६ तमे च वर्तते ॥

कर्णायास्तु नमो नमोऽस्तु बलये त्यागैकहेवाकिनौ, यौ द्वावप्युपमानसम्पदमित्यत्कालं गतौ त्यागिनाम् ।
माय्याम्नोधिमतः परं पुनरयं श्रीवस्तुपालश्चिरं, मन्ये धास्यति दानकर्मणि, परामौपम्यधौरेयताम् ॥ २८ ॥

व्योमोत्सङ्गरुधः सुधाधवलितः कक्षागवाक्षाङ्किताः,

स्तम्भश्रेणिविजृम्भमाणमणयो मुक्तावचूलोज्ज्वलाः

दिव्याः करुणमृगीदृशश्च विदुषां यत्त्यागलीलायितं,

व्याकुर्वन्ति गृहाः स कस्य न मुदे श्रीवस्तुपालः कृती ? ॥ २९ ॥

यद् दूरीक्रियते स्म नीतिरतिना श्रीवस्तुपालेन तत्,

काञ्चित् संवननौपधीमिव वशीकाराय तस्येशितुम् ।

कीर्तिः कौञ्जनिकुञ्जमञ्जनगिरिं प्राक्छैलमस्ताचलं,

विन्ध्योर्वीधर-शर्वपर्वत-महामेरुनपि प्राप्यति ॥ ३० ॥

देवः पङ्कजमूर्विभाव्य भुवनं श्रीवस्तुपालोद्भवैः,

शुभ्रांशुद्युतिभिर्द्यौर्भिरमितोऽलक्ष्यैर्बलक्षीकृतम् ।

करुणान्तोद्गतदुग्धनीरधिपयःसन्तापशङ्काकुलः,

शङ्के यत्सर-मास-वासरगणैः सख्याति सर्गस्थितेः ॥ ३१ ॥

चित्रं चित्रं समुद्रात् किमपि [नि]रगमद् वस्तुपालस्य पाणे-

यौ दानाम्बुप्रवाहः स खलु समभवत् कीर्तिसिद्धसवनन्ती ।

साऽपि स्वच्छन्दमारोहति गगनतलं खेलति क्षमाधराणां,

शृङ्गोत्सङ्केषु रज्ज्वमरमुवि मुहुर्गाहते खेचरोर्वीम् ॥ ३२ ॥

पुण्यारामः सकलसुमनःसंस्तुतो वस्तुपालः, तत्र स्मेरा गुणगणमयी केतकीगुल्मपङ्क्तिः ।

तस्यामासीत् किमपि तदिदं सौरभं कीर्तिदम्भाद्, येन प्रौढप्रसरमुद्भवा वासि[ता] दिग्विभागाः ॥ ३३ ॥

सेचं सेचं स खलु विपुलैर्वासनावारिपूरैः, स्फीतां स्फातिं [वि]तरणतरुर्वस्तुपालेन नीतः ।

तच्छायायां भुवनमस्तिलं हन्त ! विभ्रान्तमेतद्, दोलकेलिं श्रयति परितः कीर्तिकन्या च तस्मिन् ॥ ३४ ॥

श्रीवस्तुपालयशसा विशदेन दूरादन्योन्यदर्शनदरिद्रदृशि त्रिलोक्याम् ।

नामौ स्वयम्भुवि विशत्यपि निर्विशङ्कं, शङ्के स जुम्बति हरिः कमलामुखेन्दुम् ॥ ३५ ॥

स एष निःशेषविपक्षकलः, श्रीवस्तुपालः पदमद्भुतानाम् ।

यः शङ्करोऽपि प्रणयिप्रजस्य, विभाति लक्ष्मीपरिरम्भयोग्यः ॥ ३६ ॥

चीत्कारैः शकटप्रजस्य विकटैरधीयहेयारवैरारावै रवणोत्तरस्य बहलैर्बन्दीन्द्रकोलाहलैः ।

नारीणामय चक्षुरीभिरशुभमेतस्य विप्रत्यये, मन्त्रोच्चारमिवाचचार चतुरो यस्तीर्थया[त्रा]महम् ॥ ३७ ॥

॥ इति मलघाटिन्दीनरेन्द्रप्रमच्चरितता यस्तुपालप्रशस्तिः ॥

पष्ठं परिशिष्टम्

श्रीजयसिंहसूरिविरचिता

वस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ।

श्रेयः श्रीमुनिसुव्रतः स तनुतां यो मन्दरागस्तले, तन्वानः कमठाधिनाथममृतोद्धारकैधौरेयकः ।
निर्मल्यैनमधर्मकर्मलहरीपूरैरपारं भवाङ्गारं पुरुषोत्तमाय न तमां दत्ते स्म कस्मै श्रियम् ॥ १ ॥

यस्मै रश्मिभरो गभीरिमगुणकान्तेन कल्लोलिनी-
कान्तेनाञ्जनपुञ्जमञ्जिमजयी शङ्के स्वकीयोऽर्पितः ।

यस्यैव क्रमसेवनाय च मुदा मुक्तोऽङ्गभूः कच्छपो,
लेभे लान्छनतां स यच्छतु सतां श्रीसुव्रतो निर्वृतिम् ॥ २ ॥

आनन्दाय सुदर्शनाऽस्तु जगतां यस्या मुखेनामृतो, नम्राया मुनिसुव्रतकमनसादर्शमतिच्छन्दिना ।
आत्मद्वादशतां बहन्नहरहर्देवो हिमांशुर्महाकल्पानरूपपतङ्गपाटवतिरस्कारे चकारोद्यमम् ॥ ३ ॥

रक्षादक्षो दिवि दिविपदां कोऽपि सन्ध्यासमाधि,
ध्यातुर्धातुश्चलुकजलतः शौर्यराशिः पुराऽऽसीत् ।

मेहस्तङ्गप्रतिमिततया सम्मुखीनो बभूव,
भ्रूसंरम्भत्रसदमुहदो यस्य मुद्रे य एव ॥ ४ ॥

'वंदो विश्वत्रितयविद्रितः पर्वणां वेदम तम्माधौलुक्याल्यः समजनि समुन्मीलदौन्नत्यलीलः ।
सच्चूलप्रस्मितसितयशश्चेलतानातिरेकादेकच्छत्रामतनुत महीं मूलराजो महीन्दुः ॥ ५ ॥

कृत्वाऽथः कच्छपं सिन्धुराजप्रशोभशोमितः । अमन्दरोचितभुजोऽप्यभवद् यः श्रियः प्रियः ॥ ६ ॥

कीर्तिस्तोममुधामृतानि वसुधामण्डानि रेजुः सुधा-
कुण्डानीव नवत्रिविष्टपसदां स्वापानि यस्मिन् विभौ ।

रक्षानागचतुष्क्रिका इव सदा सेवासमायातपट्-
त्रिगद्राजकुलीयदक्षिणभुजव्याजेन येषां वसुः ॥ ७ ॥

तस्मादकरमलमिलजिज्जकीर्तिगुनिशुभ्रीरुनां निजमहोददनाशिदीप्ताम् ।
मूर्तिं हरस्य धरणीं रिपुराजमुण्डैधामुण्डराज इति राजयति स्म राजा ॥ ८ ॥

यत्तत्रवल्ली हरसिद्धिसिद्धप्रपेव रेजे समराटवीपु ।

मृत्युन्मुखैः साहसिभिर्यशोभः, कीर्तं निजाङ्गक्षतजेन यस्याम् ॥ ९ ॥

भूवल्लभस्तदनु वल्लभराजदेवः, ख्यातः क्षितौ समिति यः सितविभ्रमाभिः ।

हृष्यामदामनिरपूजि सुराङ्गनाभिः, शृङ्गारदैवतमिवेप्सितकान्तदाता ॥ १० ॥

स्वयं विनम्रेषु परेषु सुदृढसिद्धैकचिन्ताचयचान्तनिद्रः ।

यः स्वप्नसङ्क्षयैरपि बाहुदण्डकण्डूतिनिर्भेदमुदं न भजे ॥ ११ ॥

तस्मादभूद् भूवल्लभस्य मृगा, भीदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।

यस्यासिसिन्धौ वितताभिरेत्य, मग्नं महीभृत्कुलवाहिनीभिः ॥ १२ ॥

सुरस्त्रीणां नेत्रं सृजति निजरूपादनिमिषं, ध्रुवं तस्मिन् मस्मीकृततरिपुरभूद् मीमन्वृषतिः ।

यदुत्पाते जाते द्रुतवृत्तभियो भोजवृत्ततेरुरः श्रीरास्यं गीः करमसिलता युक्तमनुचत् ॥ १३ ॥

यद्दानोदकजातसिन्धुपटलैः कीर्तिप्रभापाण्डुभिः, शत्रुस्त्रीजनसाङ्गनाश्रुसलिलक्षोतस्विनीभिः समम् ।

सम्बिधैव पदे पदे तनुमतामन्तः समन्तान्मुदं, तन्वद्भिर्जितगाङ्गायासुनजैर्घात्रि पवित्रीकृता ॥ १४ ॥

क्रामन्ति स्म यथा यथाऽम्बरपथाद् यात्रासु यात्रावनीजैरे सर्पति दर्पतारतुरगक्षुण्णा रजोर्राजयः ।

पश्यन्तीका तथा तथा त्रिपथगातोयेऽपि विच्छाद्यतां, शङ्के कीर्तिरगादघौतधवला दूरेऽतिदूरादपि ॥ १५ ॥

तस्माद् विस्मारितरतिपतिः कामिनामङ्गधाम्ना, नाम्ना कर्णः समजनि भुजाशालिनां मौलिरत्नम् ।

निष्कं बन्दिग्रहमपि निजं बहुमन्यन्त मन्ये, धन्यम्मन्या रिपुयुवतयो यस्य रूपं निरूप्य ॥ १६ ॥

यदङ्गपटनोत्सृष्टैः, परमाणुगणैरिव । विधिर्विधाय कन्दर्पं, सदर्यां धामपि व्यधात् ॥ १७ ॥

सप्ततनुप्रपञ्चेन, यस्तां कीर्तिपटीं व्यधात् । चतुर्दशापि विश्वानि, च्छादयाच्चकिरे यया ॥ १८ ॥

व्यजयत जयसिंहदेवभूपस्तदनु 'दिशंस्त्रिदशप्रभुप्रभावः ।

ययासि यदैसिधेतुदुग्धमुग्धैः, श्रितशुद्धिर्दिधि दोहफेनसाम्यम् ॥ १९ ॥

तत् त्रेलोक्यनिभत्रिभूतिकृद्दृक्कोटस्फुरन्मालवङ्गमाभूत्कीर्तिनिनितम्बिनीमुखपरिक्षेपाय पांस्तृकरम् ।

लीलालुप्तजगद्भयं खरखुरोत्सातक्षमामण्डलच्छिद्रौघैरुत्तारालयेऽपि तुरगा यस्य क्षणाच्चिक्षिपुः ॥ २० ॥

विधस्योपकृतिव्रतव्यतिकरैस्तैर्यद्यशस्तेजसोः,

सामान्यमतिपचिमप्यसुलभां लब्ध्वेन्दु-तीव्रयुती ।

काङ्क्षन्तौ चिरनन्वितामिव तयोरासुःप्रवृद्धयौपर्ध्वं,

द्रष्टुं काञ्चन काञ्चनक्षितिधरोपान्तेऽपि तौ आग्र्यतः ॥ २१ ॥

तत्कालं कलहे निहत्य किमपि प्रत्यायिताः शत्रवः, स्वर्गस्त्रीपरिरम्भेऽपि न मनःस्वास्थ्यं समासेदिरे ।

यं कल्पान्तकृतान्तवक्त्रकुहुराकारस्फुरत्कार्मुकं, पश्यन्तः प्रसरन्तमद्भुतभयावेशेन मीलदृशः ॥ २२ ॥

अवघ्नयन्नाशु कृपाणपातं, विरोषिवीरा नमनक्रियाभिः ।

यस्याङ्घ्रिपट्टेहृदयद्वारां, लक्ष्मीं च दक्षा रमसादशुद्धम् ॥ २३ ॥

स्वरेव प्रहृतैर्द्विपद्मिरमरीमृतैः सुरीभिः समं,
गीतं प्रीतिरसैः स्वमेव हृषिते तस्मिन् यशः शृण्वति ।

इमां पाति स्म कुमारपालवृषतिर्यत् कीर्तिकालुष्यदं,

तद् बाष्पाञ्जनकदमलं न रुदतीवित्तं सवितोऽग्रहीत्

॥ २४ ॥

जैनं धर्मसुरीचकार सहसाऽणोर्राजमन्त्रासयद्, बाणैः कुङ्कुणमग्रहीदपि गुरुचक्रे स्मरध्वंसिनम् ।

इत्थं यस्य परिक्षतक्षितिमृतो हंसावलीनिर्मलैः, रामस्येव निरन्तरं नवयशःपूरैर्दिशः पूरिताः ॥ २५ ॥

तादृगदानपरम्परामिरमितो निष्कादय कालं कलिं,

त्रेता-द्वापरयोरहम्प्रथमिकाचद्वस्तृहं पदपतोः ।

श्रेयश्चन्दनतो विशेषकविधिं कृत्वा यशोजाह्वी-

पाथोभिः कृतिना स्वयं कृतयुगो येनाभिषिक्तः क्षितौ

॥ २६ ॥

अजयदजयपालभूमिपालः, क्षितिमथ मन्मथमञ्जुलेन येन ।

त्रिपुररिपुररिपु प्रमूनबाणैरिव पिहितः सहसा यशःसमूहैः

॥ २७ ॥

अन्तर्गत्कीर्तिकासारं, कृतस्नानस्य सर्वतः । लम्फेनलबायन्ते, तारा गगनदन्तिनः

॥ २८ ॥

बालः श्रीमूलराजोऽथ, विक्रीडन् समराङ्गणे । द्विपलताप्रतानानि, समूलमुदमूलयत्

॥ २९ ॥

आपये प्रसृतिसम्भ्रमेण यत्तेजसा रिपुयशःसुधारसः ।

तेन निर्गलितबिन्दुवृन्दवद्, द्योतते वियति तारकाततिः

॥ ३० ॥

भूमीभारमथो बभार भुजयोः श्रीमीमदेशो विमुर्दानारम्भविजृम्भमाणविमवप्रागहृन्मगर्जघशाः ।

गीतो यत्तुलया विरोचनमुतः पातालवैतालिकैर्योचालमनोभिरन्वहमहङ्कारं चकार स्मितः ॥ ३१ ॥

यदाननसरोजैर्न, नित्यस्मेरेण निर्जितः । सज्जलज्ज इवामज्जद्, यद्यशोजलधौ विधुः

॥ ३२ ॥

अणोर्राजाङ्गजातं कलकलहमहासाहसिकयं चुलुक्कयं,

श्रीलावण्यप्रसादं व्यतनुत स निजश्रीसमुद्धारधुर्यम् ।

सप्त प्रत्येकधाराद्वयकलितगुजायुग्मशाली रिपूणां,

कीलालैः पीतवासा इव समिति चतुर्बाहुतामेति सज्जः

॥ ३३ ॥

तादृक्कम्पव्यतिकरमृतां सर्वतः पर्वतानां, व्यातन्वद्भिः क्षयसममल्लूरशङ्कातिरेकम् ।

यत्प्रत्यर्षिक्षितिषवधधुवर्गनिःश्वासवातव्रातोत्पातैरिव दिवि सदा त्रेमुरकैन्दु-ताराः

॥ ३४ ॥

भूमारोदृतिधुर्यदुर्द्धरभुजस्तस्याङ्गजन्मा स्फुर-

त्कीर्तिः श्रीषवलोऽस्ति वीरषवलोज्झङ्कारलङ्घ्यरः ।

यस्मिन् निभति मार्गणे रिपुगणं हृष्यन्ति तस्याङ्गनाः,

कानोऽयं कुरुते मदेकवशगं चित्तेशमित्याशया

॥ ३५ ॥

विक्रीडतो यस्य नवप्रताप-यशःकुमारौ जगदङ्गणान्तः ।

प्रभावमाजौ लसतस्तदङ्गरक्षामु दक्षाविव सूर-राजौ

॥ ३६ ॥

पाताले बलिराजराज्यविशदे विश्वम्भरामण्डले, यल्लीलायितमञ्जुले सुरपुरे कल्पद्रुमद्राजुषि ।
दारिद्येन मयद्वतेन सहसा यद्वैरिवीराश्रयादश्रान्तप्रसरेण शैलशिस्रकोडेयु विकीडितम् ॥ ३७ ॥

यस्यासिरम्भोदसहोदरश्री, शौर्यं द्विपस्येव मदप्रवाहः ।

सर्पन् सदपारिन्रेन्द्रकीर्तिकासारपूरं कलुषीचकार ॥ ३८ ॥

सचिवप्रवरं कञ्चित्, प्रार्थितस्तेन पार्थिवः । श्रीमान् भीमो मुदा वाचमुवाच श्रवणामृतम् ॥ ३९ ॥

वाग्देवताचरणकाञ्चननूपुरश्रीः, श्रीचण्डपः सचिवचक्रशिरोऽवतंसः ।

प्राग्वाटवंशतिलकः किल कर्णपूरलीलायितान्यधित गूर्जरेराजधान्याः ॥ ४० ॥

मतिकल्पलता यस्य, मनःस्थानकरोपिता । फलं गूर्जरेमृणानां, सङ्कल्पितमकल्पयत् ॥ ४१ ॥

वाग्देवीप्रसादः (८), सनुश्रण्डप्रसाद इति तस्य । निजकीर्तिवैजयन्त्या, अनयत गगनाङ्गणे गङ्गाम् ॥ ४२ ॥

पातालमूले पिहिताशुभासः, पृथ्वीविभागेऽपि हराट्टहासः ।

स्वर्गेऽपि दुग्धाब्धिपयोविलासः, कीर्तिर्यदीया त्रिजगत्सुवास ॥ ४३ ॥

कीर्तिकश्मलितपार्वणसोमः, सोम इत्यजनि तस्य तनुजः ।

सिद्धराजगुणमूषणभाजः, ससदो विशददर्पणकल्पः ॥ ४४ ॥

उत्कर्षप्रगुणां गुणा-ऽगुणपरिज्ञानौचित्यं मन्महे, तस्य प्रीतिरसादनन्यमनसा येनान्वहं सेविताः ।

देवस्तीर्थकृदेव केवलनिधिर्विधानिधान गुरु, सुरिः श्रीहरिभद्र एव गुणधीः सिद्धेश एवाधिपः ॥ ४५ ॥

सीताकुसिसरोवरैकवरलाकान्तोऽश्वराजालयया, तस्याभूत् तनुभूः सदाऽपि जननीभक्तौ च यः पावनः ।

स्पर्जदूर्जटिजूटकोटरपदन्यासोत्थपापच्छिदे, स्वर्नद्याऽपि समाश्रितः सितलसत्कीर्तिच्छविच्छन्नः ॥ ४६ ॥

सप्तलोकचरी सप्ततीर्थयात्रासमुद्रवा । गङ्गा जिगाय यत्कीर्तिर्विध्वनितयविस्तृताम् ॥ ४७ ॥

भैमीव नैपधमहीरमणस्य तस्य, कान्ता सती समजनिष्ट कुमारदेवी ।

यन्मानसे जिनपदाम्बुजभाजि शुद्धपक्षद्वयः पतिरराजत राजहंसः ॥ ४८ ॥

श्रीमल्लदेव इति तत्तनुमूर्धभूव, यत्कीर्तिपूरशशिर्नोर्गगनाङ्गपीठे ।

स्पर्धोद्धुरं प्रसृतयोर्विव साम्यदण्डं, स्वर्दण्डमेव विधिरन्तरधत्त हृष्टः ॥ ४९ ॥

विद्येते हृद्यविद्यौ तदनु तदनुजौ धीनिधी वस्तुपाल-

स्तेजःपालश्च तेजस्तरणितरुणिमस्फूर्तिरोचिष्णुमूर्ती ।

श्रीमन्नेतौ निजश्रीकरणपदकृतव्याघ्रती प्रीतियोगात्,

तुभ्यं दास्यामि विश्वं जयतु नवनवं धाम तन्मन्त्रमित्रम् ॥ ५० ॥

इत्युक्त्वा प्रीतिपूर्णाय, श्रीवीरध्वलाय तौ । श्रीभीमभूमुजा दत्तौ, वित्तमाप्तमिवाऽऽत्मनः ॥ ५१ ॥

अन्ये केचन रोचमानमतयो मन्त्रीधरा मास्करा,

लप्स्यन्ते वत ! वस्तुपालसचिवाधीनोऽस्य सात्त्यं कुतः ? ।

सार्धं यल्लघुचन्धुनाऽपि दिविपट्वन्दैकमान्यः स्वयं,

सामान्यप्रतिपत्तिगौरवपदं वाचस्पतिरान्ठति ॥ ५२ ॥

वीरश्रीवरधाञ्जि वीरघवले सिंहारवान् मारवान्, जेतुं यातयति प्ररुढपुलकैरक्षूरयन् पौरुषम् ।
यस्तीर्त्वा यदुसिंहसिंहणवलाभोधि मुजक्रीडया, गर्जनर्जितवान् यशस्त्रिजगतीमुक्तालतामण्डनम् ॥५३॥

सम्पूर्णं भुवने धनेन रजसा श्रीतीर्थयात्रापरिस्पर्शस्यन्दनवृन्दतारतुरगघातक्रमोत्पातिना ।
यत्कीर्तेः सह पांशुकैलिसुहृदो नन्दन्ति मन्दाकिनी-दुग्धाम्भोधि-विभावीविभु-ककुप्कुम्भीन्द्र-रुद्रादयः ॥५४॥

येनाऽकारि तमोनिकारिकलशालङ्कारि शत्रुञ्जयदमाभृन्मण्डनमिन्द्रमण्डपमहो ! नामेयमर्जुः पुरः ।
तेनैकां धुधुनीं दधद्विमगिरिः पार्श्वस्थपार्श्वप्रभृ-श्रीमन्नेमिनिकेतकेतनयुगामोगेन निर्मलितः ॥५५॥

यः शत्रुञ्जयशेखरं जिनगृहश्रीतारहारं स्वलचाराधोरणि तोरणं यदसजत् तन्मूर्ध्नि लक्ष्मीः स्थिता ।
शङ्केऽभृदुदितद्विपक्षवदना नन्तुं समागच्छतो, नामेयं प्रणिपत्य च प्रचलतो यस्याऽऽस्यवीक्षाशया ॥५६॥

श्रीशत्रुञ्जयशृङ्गसीमि सरसि प्राप्याभु यत्कारिते, नीचत्वाय सुधाकराय विबुधाः कुर्वन्ति नोपक्रमम् ।
इत्यहं कृतिनोऽन्वहं विदधते कुन्दावदातयुता, भास्वच्छाश्वतराकया जगति यत्कीर्त्या परीतेऽमितः ॥५७॥

येन व्यधाप्यत विधुद्युतिहारिवारी, श्रीपादलिप्तनगरीमुकुरस्तडागः ।
यद्यस्त्यगस्तिरिह कोऽपि तदेतु तन्याद्, दोःस्फालनं मुहुरितीव महोर्मिभिर्भ्यः ॥५८॥

अर्कपालितकामे, तेन तेनेऽद्भुतं सरः । यस्य नित्यन्दलेखेव, पार्श्वे वहति वाहिनी ॥५९॥

येनोजपन्तगिरिमण्डननेमिचैत्ये, नामेय-पार्श्वजिनसङ्गयुगं व्यधायि ।
अन्तः स्वयंपटितनाभिज-नेमिनाथ-श्रीस्तम्भनेशगृहमप्युदधारि हारि ॥६०॥

स्वर्गं यद्गुरुचैत्यतोरणशिर पथापदैः प्राप यद्वापी-रूप-तडागमार्गचलनैः पातालमूलं ययौ ।
सा यत्पौषध-मन्दिरोदर-वराऽऽरामप्रपामध्यमूविश्रामश्रयणेन मूमिमपि यत्कीर्तिर्मुहुर्गाहते ॥६१॥

यजिर्मापितदेवमन्दिरशिरःकल्याणकुम्भप्रमाप्राम्भौर्विदधे सदा सुदिवसं सर्वत्र धात्रीतले ॥
दृश्यः शाश्वतिकस्तथा प्रस्रमरश्यामच्छविच्छन्नाना, यत्स्वङ्गक्षतवैरिवामनयनावकत्रेषु रात्रिक्षणः ॥६२॥

अस्थापयत् स्थिरमतिः शकुनीविहारे, संसारतारिलसदम्बलधर्मपुञ्जे ।
श्रीपार्श्व-वीरजिनपुङ्गवयुग्मदम्भाद्, यो यामिकद्वयमिवाभिमधर्मयन्धुः ॥६३॥

तमेकदा करारोपमस्तित्स्वर्णशेखरः । श्रीतेजःपालमन्त्रीशो, मुदा ज्येष्ठं व्यजीज्ञपत् ॥६४॥

सुप्रतक्रमनमस्कृतिहेतोर्यातवान् मृगुपुरं प्रति सोऽहम् ।
काव्यमुज्ज्वलनयो जयसिंहसूरिरित्यपठद न मदधे ॥६५॥

तेजःपाल ! कृपालुधुर्य ! विमलप्राग्वाटवंशध्वज !,
श्रीमन्मण्डकीतिरय वदति त्वत्सम्मुख मन्मुखत्वात् ।

१. 'चत्त्याय गा० ॥ २. पद्यमिदं पुरातनप्रबन्धसंप्रदायान्तर्गतयस्तुपालतेजःपालप्रबन्धे-“ एकदा मन्त्री

तेजःपालो भृगुपुरमायात । तत्र श्रीमुनिसुप्रतचैत्याचार्ये श्रीरासिंहसूरिभिरुक्तम्-“ मन्त्रिन् । सन्देशक

मेकं शृणु । [मन्त्रिणोक्तम्-आदिरयताम् । अयं पाद्यालयाभिन्यां गृह्या युक्त्येका समेल प्राह ” इत्युद्देशानन्तरं

निष्कृतं वर्तते । पद्यम् ६२ । तथा उपदेशातरङ्गिण्यां ७४ तमपत्रेऽप्येवमेव वर्तते । केवलं तत्र “ श्रीमुनि-

सुप्रतचैत्याचारेणार्यैरुक्तम् ” इति वर्तते, न तत्र रासिंहसूरैरन्यस्य वा कस्याप्याचार्यस्य नामोद्देशो वर्तते इति ॥

आजन्मावधि वंशयष्टिकलिता आन्ताऽहमेकाकिनी,

वृद्धा सम्प्रति पुण्यपूर्ण ! भवतः सौवर्णयष्टिस्पृहा

॥ ६६ ॥

इत्युक्त्वा मम पञ्चविंशतिमितास्तेन स्वयं दर्शिता-

स्तस्मिन् सुव्रतघाम्नि देवकुलिकाः कल्याणकुम्भस्पृशः ।

ताः सौन्दर्यमृतोऽपि कान्तिनिधिभिः कल्याणदण्डैर्विना,

सीमनैरिव सुश्रुवो विदधते नान्तः सतां सम्मदम्

॥ ६७ ॥

आदेशं देव ! यद्येवं, दस्ते स्वच्छेन चेतसा । हेमदण्डानिमानत्र, तदहं कारये रयात्

॥ ६८ ॥

इत्यन्तःस्मितवस्तुपालसचिवादेशालसतेजसस्तेजःपालमहामतिर्यरचयत् कल्याणदण्डानिमान् ।

प्रत्येकं हरहासहारिमहसो येषां शिखासु स्थिता, नृत्यन्ति प्रतिवासरं परिचलकेतुच्छलात् कीर्तयः ६९

जुह्वन् पातकपादपैकदहने तीर्थेशधर्मे निजां, कर्माणां न कति क्रतूनकृत स श्रीवस्तुपालानुजः ? !

दण्डा यूपवदुच्चसुव्रतगृहक्षमाभृद्रवायाममी, तत्तेनाऽम्बुडमण्डलेश्वरयशःसिन्धौ समारोपिताः ॥ ७० ॥

दत्ते चेतसि सम्मदं सुकृतिनां तेनेयमुचम्बिता, चञ्चच्चारुगरीचिर्वीचिकलिता कल्याणदण्डावलिः ।

पूर्वोर्वीधरकुञ्जतः प्रसरता प्रातर्वियत्कानने, यत्राऽऽगत्य भियेव गोपतिगवीवृन्देन मन्दायते ॥ ७१ ॥

यावच्चण्डपगोत्रमण्डनमणेः कीर्तिर्वियद्वाहिनीहस्ता दिग्गजगर्जिबाद्यविभवैर्व्योमाङ्गणे नृत्यति ।

दण्डास्तायदमी सुवर्णघटनाविभ्राजिनः केतनक्रीडत्किङ्किणिकारव्यतिकरैः कुर्वन्तु गीतक्रमम् ॥ ७२ ॥

तेजःपालयशोविलासविशदश्रीणां दिशां कौतुकक्रीडामण्डपडम्बरं महदहो ! यावद् दधात्यम्बरम् ।

तावन्नूतनजातरूपजनितः सोऽयं समुत्तम्भनस्तम्भस्तोमसमानतां वितनुतामुहण्डदण्डमजः ॥ ७३ ॥

स्वस्तिश्रीव्योमदेशादुदयनतनुभूकीर्तिरुर्वीतले श्री-

तेजःपालं प्रसन्ना वदति मतिमता वन्द्य ! नन्दा मदायुः ।

येन त्वत्कूटहेमध्वजचिततभुजा दुःपनादाहदूना,

लिम्पन्तां ता मुहुर्नामिह जिनगृहिकात्स्वयशश्चन्दनेन

॥ ७४ ॥

मोहो द्रोहधियाऽधिरोहति रस श्रीपुङ्गवहृत्पञ्जरे, क्षितौ यः कलिकालकेलिविधुरो दक्ष ! त्वया रक्षितः ।

श्रीसोमान्वयवार्धिवर्धनकलसोम ! स्वयं निर्मलो, धर्मः प्रत्युपकारकर्मठतया स त्वां क्षितौ रक्षतु ॥ ७५ ॥

श्रीवस्तुपाल ! तव चित्तवनप्ररूढः, सत्त्वोपकारमतिसारणिसिञ्चमानः ।

सत्यत्र-पुण्यकुसुमः फलद्रोऽस्तु तुभ्यमव्याजविश्वसुहृदे जिनधर्मवृक्षः

॥ ७६ ॥

श्रीसुव्रतपदाम्भोजमधुप्रातमधुव्रतः । एतां प्रशस्तिमस्ताषां, जयसिंहः कविर्व्यधात्

॥ ७७ ॥

॥ धीजयसिंहसुरिधिरचिता यस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ॥



सप्तमं परिशिष्टम् वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

स्वस्ति श्रीवस्तुपालाय, बभौ यद्वद्विमुमुधुवः । क्रोडीकृताम्बरं रौप्याञ्जनभाजनवद् यशः ॥ १ ॥

अन्तःक्षारं रिपूणां घनमपि कवलीकृत्य तृष्णातुरेव,
त्वत्कीर्तिनाऽऽप तृप्तिं भुवि सचिव । जवात् क्षीरनीराकरेऽपि ।

तस्मादाकाश-नाकोरगनगरचरस्वर्धुनीपानहेतोः,

सर्वत्रापि त्रिलोकीहितचरित । चिरं सम्भ्रमाद् चम्प्रमीति ॥ २ ॥

भवद्भुजभुजङ्गोऽसौ, वस्तुपाल ! द्विषां भये । अस्मि दधाति फूत्कारविषोद्वारसहोदराम् ॥ ३ ॥

औषधीशसखः सत्यं, वस्तुपालयशोभरः । येन प्रसर्पता पश्य, विश्वं मुक्तामयं कृतम् ॥ ४ ॥

शेषद्वेपविधायिनीमपि भवत्कीर्तिं सुधासोदरां, श्रीमन्त्रीश ! मुखस्फुरद्विषभिदे गायन्ति नागाङ्गनाः ।

शम्भुः स्वान्नविरोधिनीमपि पुनर्नित्योपरोधादिमां, देवीर्गापयते विषाकुलगलश्यामत्वसंलुप्तये ॥ ५ ॥

कल्पद्रुमसवावतंसमधुपीक्षहारलब्धोपमाः, कामं कामगवीनवीनपयसां पानेन तारस्वराः ।

साश्चिन्तामणिरश्मिभस्मिततमःस्तोमे सुमेरोर्गुहागर्भे चण्डपगोत्रमण्डन । भवद्दानानि देव्यो जगुः ॥ ६ ॥

देव ! त्वत्प्रतिपन्थिपार्थिवपुरीसौधप्रभागादिव, प्राप्य व्योमविहारदुर्लभमपि प्रौढप्ररूढप्रभः ।

श्रीमच्चण्डपगोत्रमण्डन ! भवत्कीर्त्या जितो यामिनीजीवेशस्तनुते तृष्णं निजमुखे लक्ष्मच्छविच्छन्नान् ॥ ७ ॥

गुणग्रामे रामे जितसितकरे सत्यपि निजे, स्वयं गृह्णासि त्वं परगुणमतादृक्षमपि यत् ।

अयं लोभक्षोभश्चतुर । चतुराम्भोचिरसनावनीक्षिक्षादक्ष ! स्फुरति किमु ते मन्त्रिमुकुट ! ॥ ८ ॥

भोगीन्द्रस्त्वङ्गुजेन त्रिपुररिपुरपि त्वत्प्रभुत्वप्रभावैः,

शीताशुस्त्वन्मुखेन त्रिदशसरिदपि त्वच्चरित्रप्रपञ्चैः ।

शक्रेभस्त्वद्गतेन प्रसभमशुभतां लम्बिताः सज्जलज्जं,

निर्मज्जन्ति स्म तस्मिन् सचिव ! तव यशस्तोयधौ वस्तुपाल ! ॥ ९ ॥

भर्ता भोगभृतां विभर्ति वसुधामेव प्रभावाद्भुता,

दिग्दन्तीन्द्रकरस्तु हन्ति च रिपून् धत्ते च धात्रीमिमाम् ।

श्रीमन्त्रीश ! भवद्भुजस्तु कृतिना दत्ते च विचम्रज,

भिन्ने च द्विपतो दधाति च धरामेषां क साम्यं मिथः ॥ १० ॥

इन्दुर्निन्दति कौमुदीसमुद्रयं मुक्तामणीनां ततिर्मुक्तालङ्कृतिरस्तचण्डिमहिम् दर्पी न सर्पाधिपः ।

गर्वं शर्वधराधरो न कुरुते न स्वर्धुनी स्पर्द्धिनी, श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालयशसि त्रैलोक्यमाक्रामति ॥ ११ ॥

बलि-कर्ण-दधीचिकीर्तयः, कल्पिद्वापितमत्यजन् मलम् ।

तव दानपयोनदीकृतस्नपनश्चण्डपगोत्रमण्डन । ॥ १२ ॥

शङ्खे पङ्कजिनीपतिः कल्लुभुजा सार्धं. स्वयं प्रार्थितः, कर्पं कर्पमिलातलादनुदिनं त्वदानतोयच्छदाः ।

श्रीमच्चण्डपवंश्य ! सिद्यति शचीचित्तेशलीलावनं, नैवं चेत् कथमन्यथा विटपिनामप्यत्र दानक्रिया ! ॥ १३ ॥

॥ वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ॥

अष्टमं परिशिष्टम्

वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

[महामात्यश्रीवस्तुपालविनिर्मितनरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रतिसर्गप्रान्त-
गतानि अन्यान्यकविविरचितानि वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।]

सह्यासिंहप्रवृत्तनारुधिरारुणानि, श्रीवस्तुपालकरवालविजृम्भितानि ।

कीनाशकासरकटाक्षसहोदराणि, को नाम वीक्षितुमपि क्षमते विपक्षः ॥ १ ॥
प्रथमसर्गप्रान्ते ॥

दृश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परमार्थनादैन्यमन्य-

स्तुच्छामिच्छां विषये तनुहृदयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पद्रुमेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ॥ २ ॥

द्वितीयसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद् दानसौरभवता भवता बितेने, नानेकपेन मदमेदुरिता मुखश्रीः ॥ ३ ॥

तृतीयसर्गप्रान्ते ॥

गृह्यासि नाम परतोऽपि नवान् गुणास्त्वं, त्यागो गुणस्तव नवस्तु न वस्तुपाल ! ।

लोकोत्तरस्तदपरस्य नरस्य स स्याद्, यत् तादृशो नहि दृशोः पथि मादृशानाम् ॥ ४ ॥

चतुर्थसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसिरुहं ते वासवेदम श्रियोऽमूदजनि वदनपद्मं सद्य वाग्देवतायाः ।

इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं ? , सन्निवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ५ ॥

पञ्चमसर्गप्रान्ते ॥

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यैकादशसर्गप्रान्ते वर्तते, उदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते, जिनद्वितीयवस्तुपालचरिते “ कृपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म कथन । ” इत्युक्तेन निर्दिष्टं चेति वर्तते ॥ २ पद्यमिदमुदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं नरनारायणानन्द-
महाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥

इतरगुणकथायाः काथिकत्वस्पृहायामिह बहति सहास्यं कस्य नो लास्यमास्यम् ? ।

तव तु विततकीर्तेः कीर्तनं कर्तुंकामः, सुरगुरुरपि शङ्के वस्तुपाल ! त्रपालः ॥ ६ ॥

षष्ठसर्गप्रान्ते ॥

जनव्यामोहवल्लीयमिन्दिरा मन्दिरे स्थिता । मन्त्रिणा वस्तुपालेन, कल्पवल्ली विनिर्मिता ॥ ७ ॥

सप्तमसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।

येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्ति-रस्त्येव शकहृदि शैलशिलाविशाले ॥ ८ ॥

अष्टमसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसिरुहं ते वासवेश्म श्रियोऽमृदजनि वदनपद्मं सन्न वाग्देवतायाः ।

इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं ? , सचिवतिलक ! धन्यं तद् वद्वाऽन्यं वदान्यम् ॥ ९ ॥

नवमसर्गप्रान्ते ॥

या श्रीः स्वयं जितपतेः पदपद्मसन्ना, भालस्थले सपदि सङ्गमिते समेता ।

श्रीवस्तुपाल ! तव भालनिभालनेन, सा सेवकेषु सुखमुन्मुखतामुपैति ॥ १० ॥

दशमसर्गप्रान्ते ॥

त्वत्कीर्तिज्योत्स्नया जाते, तीरे नीरेगिषुः सिते । नेक्ष्यन्ते पक्षिभिर्वस्तुं, वस्तुपाल ! वनालयः ॥ ११ ॥

मुकुलितकमलोदयः कवीन्दुः, क इव न काव्यसुधानिर्विभूव ? ।

स्फुरदुरुविभवस्तु वस्तुपालः, कविसविता कविताप्रभाभिरामः ॥ १२ ॥

एकादशसर्गप्रान्ते ॥

ईरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।

नीतौ गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च ग्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ १३ ॥

द्वादशसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! जितचालमृणालगर्भे, शुभ्रं वितन्वति जगत् तव कीर्तिपूरे ।

मन्यामहे कुबल-कज्जल-कोकिला-ऽलि-काकोल-कोलसदृशमभिधा मुधाऽभूत् ॥ १४ ॥

त्रयोदशसर्गप्रान्ते ॥

लक्ष्म्यामाकृष्टमुखाटनमनयवति स्तम्भमुज्जृम्भिवद्भे,

दोषे विद्वेषमभ्यन्तररिपुषु मृति वश्यतां चित्रवती ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यप्रथमसर्गप्रान्ते, उदयप्रथमवस्तुपालस्तुतौ च २४तमं वर्तते ॥
२ पद्यमिदं नरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रथमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्य-
तृतीयसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं उदयप्रथमवस्तुपालस्तुतौ चतुर्थं वर्तते, प्रथम्यकोशे "अपरस्तु"
इत्युपलेखोपलक्षणं वर्तते, उपदेशातरङ्गिण्यां कविराजमध्यात् कल्पविदुक्तियोजितं च वर्तते, जिनहर्ष-
वस्तुपालचरिते पुनः हरिहरौकिया निराङ्गनं दृश्यते ॥

कर्तुं यद् वस्तुपाल ! प्रभवसि सकले मण्डले तत् तवैव,
श्रीमन्मन्त्रीश ! मन्त्रे स्फुरति निरवधिः काऽपि पट्कर्मसिद्धिः ॥ १५ ॥

चतुर्दशसर्गप्रान्ते ॥

भवति हि विभवो भवः परेषां, तव विभवोऽभिगवस्तु वस्तुपाल ! ।

इह महिममहो यशः प्रसूते, यदयममुन्न परत्र पुण्यलक्ष्मीम् ॥ १६ ॥

॥ १६ ॥

पञ्चदशसर्गप्रान्ते ॥

अचिन्त्यदातारमजातशत्रुं, श्रीवस्तुपालं कति नाश्रयन्ति ? ।

चिन्तामणिः सोऽपि युधिष्ठिरश्च, नान्वर्थसामर्थ्यपदं यदग्रे ॥ १७ ॥

शैले शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्स्नासपत्नं तव,

त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्भुतम् ।

यत् तादृग्दृढपाशवैशसकृतातङ्कामिशङ्काः स्फुटं,

नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलस्पदम् ॥ १८ ॥

षोडशसर्गप्रान्ते ॥

वस्तुपालस्तुतिकाव्यम् ।

श्रीवस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमपीमयाक्षरा एका सिद्धान्तप्रतिलेखिता । अपरास्तु श्रीताड-
कागदपत्रेषु मपीवर्णाञ्चिताः ६ प्रतयः । एवं सप्तकोटिद्वयव्ययेन सप्त सरस्वतीकोशा लेखिताः ।
तदनु श्रीउदयप्रभसूरिमिराशीर्वादः प्रदत्तः । तद्यथा—

जम्बूद्वीपो जलधिपरिस्वाम्यपितो यावदास्ते,

ज्योतिश्चक्रं सुरगिरितटी पर्यटलेव यावत् ।

यावत् कूर्मो बहति वसुधां त्वद्यशःपुञ्जसार्धं,

जीयाज्जनं मुखनिव परं पुस्तक वस्तुपाल ! ॥

उपदेशतरङ्गिणी पत्रम् १४२ ॥



१ परमिदं त्रिनद्वीपवस्तुपालचरिते “रूपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म बभूव ।” इत्युपदेशेनो-
क्तिरिति वर्तते ॥ २ परमिदमुदयप्रभमीयवस्तुपालस्तुतौ २५तमं वर्तते ॥

नवमं परिशिष्टम्

श्रीगिरिनारपर्वतस्थाः प्रशस्तिशिलाखेत्वाः ।

गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपाल-तेजःपालकारितश्रीनेमिनाथप्रासाद
गताः पद् वृहत्प्रशस्तयः ।

(३८-१)

नमः सर्वज्ञाय ।

पायात्रेमिजिनः स यस्य कथितः स्वामीकृतागस्थिता-
वग्रे रूपदिदक्षया स्थितवते प्रीति सुराणां प्रभौ ।

काये भागवते वनेवक्...द्विपोलावने शंसता-

मिदशां(?).....मपि.....वनाजवे..... ॥ १

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुर(*)वास्त
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआश
राजनंदनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिम महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं
श्रीतेजःपालाग्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो(*)वररा
हंसायमाने महं० श्रीजयतसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तंभतीर्थशुद्राव्यापारान् व्यापृण्वति सा
सं० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोजयंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासादित
संघाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तंडमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु(*)तमहा
राजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैर्धर्य्येण श्री-शारदाप्रतिपत्तापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथा अनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमंडले धवलककप्रमुखनगरेषु शुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-शुद्धाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-(*)स्तंभ-
नकपुरस्तंभतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्धारार्थ कारिताः ॥ तथा सचिवेश्वरवस्तुपालेन इह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजय-
महातीर्थावतारश्रीमदादितीर्थकरश्रीकृष्णमदेव-स्तंभनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपु(*)रावता-
रश्रीमहावीरदेवप्रभृतिप्रसहित-कदमीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-
श्वलोकना-शम्भ-प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-सुरगाधिरूढस्वपितामह
महं० ठ० श्रीसोम-निजपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथ (*)
देव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तंभश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअने-

१ परिशिष्टेऽभिन्न (*) गणोष्ठं पुत्रिचिह्नं सर्वत्र शिलालेखेष्वपि समाप्तिचोत्तरमवसानमभ्यम् ॥

ककीर्तनपरम्पराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविम्पितश्रीमदुज्जयंतमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्व-
 र्मचारिण्याः प्राग्वाटजातीय ट० श्रीकान्हडपुत्र्याः ट० राणुकुक्षिसंभूताया महं० श्रीललिता-
 देव्याः (*) पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेंद्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेंद्रसूरिसंताने शिष्यश्रीशांतिसूरिशिष्य-
 श्रीआणंदसूरि-श्रीअमरसूरिपट्टे भट्टारकश्रीहरिभद्रसूरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनसूरिप्रतिष्ठित-
 श्रीअजितनाथदेवादिर्विशतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समंडपः श्रीसम्भेतमहातीर्थवतारप्रा-
 सादः कारितः ॥ (*)

पीयूषपूरस्य च वस्तुपालमन्त्रीगिबुधायमियान् विभेदः ।

एकः पुनर्जीवयति प्रमीतं, प्रमीयमाणं तु मुवि द्वितीयः

॥ १ ॥

श्रीद-श्रीदयितेश्वरप्रभृतयः संतु क्वचित् तेऽपि ये,

प्रीणंति प्रमविष्णवोऽपि विमवैर्नाकिचनं कंचन ।

सोऽयं सिंचति कांचनैः प्रतिदिनं दारिद्र्यदावानल-

प्रम्लानां पृथिवीं नवीनजलदः श्रीवस्तुपालः (*) पुनः

॥ २ ॥

आतः । पातकिनां किमत्र कथया दुर्मित्रिणामेतया ? ,

येषां चेतसि नास्ति किंचिदपरं लोकोपकारं विना ।

नन्वस्यैव गुणान् गृणीहि गणशः श्रीवस्तुपालस्य य-

स्तद्विश्वोपकृतिव्रतं चरति यत् कर्णेन चीर्णं पुरा

॥ ३ ॥

मित्र्या भानुं भोजराजे प्रयाते, श्रीमुंजेऽपि स्वर्गसाम्राज्यभाजि ।

एकः संमत्यर्थिनां वस्तुपालस्तिष्ठत्यश्रु (*) म्यंदनिष्कंदनाय

॥ ४ ॥

चौलुक्यक्षितिपालमौलिसचिव ! त्वत्कीर्तिकोलाहल-

क्षैलोक्येऽपि विलोक्यमानपुलकानंदश्रुभिः श्रूयते ।

किं चैषा कलिवृषिताऽपि भवता प्रासाद-वापी-प्रपा-

कूपा-ऽऽराम-सरोवरप्रभृतिभिर्वात्री पवित्रीकृता

॥ ५ ॥

स श्रीतेजःपालः, सचिवश्चिरकालमस्तु तेजस्वी ।

येन वयं निश्चिताश्चितामणिने(*)व नंदामः

॥ ६ ॥

लवणप्रसादपुत्रश्रीकरणे लवणसिंहजनकोऽसौ ।

मंत्रित्वमत्र कुरुतां, कल्पशतं कल्पतरुकल्पः

॥ ७ ॥

पुरापादेन दैत्यारैर्मुचनोपरिवर्तिता । अधुना वस्तुपालस्य, हस्तेनाधःकृतो बलिः

॥ ८ ॥

दैयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेन्द्राव् ।

नाम्ना जयंतसिंहं, जयंतमिन्द्राव् पुलोमपुत्रीव

॥ ९ ॥ (*)

[एते] श्रीगूर्जेश्वरपुरोहित ट० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखमंग्रह २ भागे ६४ संख्य १-१ संख्यापूर्वदावनलक-
 प्रपमं च सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखमंग्रह २ भागे ६४ संख्यापूर्वदावनलक-
 शिलालेखे ४४४मं सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥

स्तंमतीयेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनंदनः । प्रशस्तिमेतामलित्व, जैत्रसिंहधुवः सुधीः ॥ १ ॥
 वाहडस्य तनुजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णा प्रयलतः ॥ २ ॥
 श्रीनेमेखिजगद्गुरुस्वायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं. २ । २१-२३)

(३९-२)

.....यः पु....तयदुकुलक्षीराणवेन्दुजिनो,
 यत्पादाब्जपवित्रमौलिरसमश्रीरुज्जयन्तोऽप्ययम् ।
 धत्ते मूर्ध्नि निजप्रभुप्रसन्नरोहामप्रभामण्डलो,
 विश्वक्षोणिमृदाधिपत्यपदवीं नीलातपत्रोज्ज्वलाम् ॥ १ ॥

॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिल(०)पुरवास्तव्य-
 प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्री-
 आशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० ठ० श्रीमालदेवयोरु-
 जस्य महं० ठ० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० ठ० श्रीललितादेवी
 (०) कुक्षिसरोवरराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं मुद्राव्यापारं व्याष्ट्वति
 सति स० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावविभूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादासावि-
 तसंपाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवण(०)प्रसादेवमुत्तम-
 हाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिपतिपल्लराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदापतिपञ्चापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
 तथाऽनुजेन स० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्याष्ट्वता महं०
 श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-ऽर्जुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु (०) श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-
 पुरस्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि
 प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिता । तथा सचिवेधरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्था-
 वतारश्रीमदादितीर्थैकरक्षीरप्रमदेव (०) स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-
 व-प्रभुमन्निखरेषु श्रीनेमिनाथदेयालङ्कृतदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनद्वया-ऽम्बा-ऽवलोकना-शा-
 निजपितृ ठ० श्रीप्राशाराज (०) मूर्तिद्विनय-चारुनोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-
 ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुमुक्षुदणकस्तम्भ-श्रीब्रह्मापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिने
 श्रीशान्दहडपुण्याः ठ० (०) राणुगुणिमृताया मष्ट० श्रीमोगुकायाः पुण्याभिष्टदये श्रीनागेन्द्र-
 गच्छे महारक्षीमहेन्द्रहरिमन्त्रानि निन्यश्रीप्रान्तिहरिगिण्यश्रीप्रानन्दहरि-श्रीअमरहरिपटे मष्ट-

१ वर्षदिने प्राचीनदेवदेवमण्ड १ भागे ४१-४२-४३ मध्यगिरिनारमाध्यप्रशस्तिपत्रि प्राग्गमाये वर्तते ॥
 २ वर्षदिने प्राचीनदेवदेवमण्ड १ भागे ४२-४३ मध्यगिरिनारमाध्यप्रशस्तिपत्रि प्राग्गमाये वर्तते ॥
 ३ वर्षदिने प्राचीनदेवदेवमण्ड १ भागे ४२-४३ मध्यगिरिनारमाध्यप्रशस्तिपत्रि प्राग्गमाये वर्तते ॥

रक्त्रीहरिमद्रक्षरिपट्टालंकरणश्रीविजयसेनद्वरिप्रतिष्ठितश्रीश्रृंगभदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थकरालंकृतो-
ज्यमभिनवः समण्ड(*) ५: श्रीसंमेतमहातीर्थावतारप्रधानप्रासादः कारितः ॥ ॥ ॥

चेतः किं कलिकाल ! सालसमहो ! किं मोह ! नो हस्यते ? ,
तृप्णे ! कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विप्रौष ! मोघो भवान् ? ।

ब्रूमः किं नु सखे ! ? न खेलति किमप्यस्माकमुज्जम्भितं,
सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य सवर्मितम् ॥ १ ॥

यं विधुं बन्धवः सिद्धमर्थिनः शत्रु (*) ।
.....ण....पश्यन्ति, वर्ण्यतां किमयं मया ? ॥ २ ॥

वैरं विभूति-भारत्योः, प्रमुत्त्व-प्रणिपातयोः । तेजस्विता-प्रशमयोः, शमितं येन मन्त्रिणा ॥ ३ ॥

दीपैः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः स्नेह मुहुः सहर-
त्रिन्दुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सूरः क्रूरतरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विन-
सत् केन प्रतिमं त्र (*) वीमि सचिवं श्रीवस्तुपालामिवम् ? ॥ ४ ॥

औयाताः कति नैव यान्ति कति नो यास्यन्ति नो वा कति,
स्थानस्थाननिवासिनो भवपथे पान्थीभवन्तो जनाः ? ।

अस्मिन् विस्मयनीयबुद्धिजलधिर्विध्यस्य दस्यूनं करे,
कुर्वन् पुण्यनिधिं धिनोति वसुधां श्रीवस्तुपालः परम् ॥ ५ ॥

दधेऽस्य वीरधवलक्षितिपस्य राज्यभारे धुरंधरधुरा (*) ।
श्रीतेजपालसचिवे दधति स्वबन्धुमारोद्धृतावविधुरैकधुरीणभावम् ॥ ६ ॥

इह तेजपालसचिवो, विमलितविमलाचलेन्द्रममृतमृतम् ।
कृत्वाऽनुपमसरोवरममरगणं प्रीणयाचक्रे ॥ ७ ॥

एते श्रीमलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

इह वालिगसुतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुजवाजडतनूजः ।
अलि (*) खदिमा कायस्थः, स्तम्भपुरीयश्रुवो जयतसिंहः ॥ १ ॥

हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पी-वरसोमदेवपौत्रेण । बकुलस्वामिसुतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीनैमैस्त्रिजगद्गुरुर्मयायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

१ पयमिदं नरचन्द्रपरिकृतवस्तुपालप्रशस्तौ तृतीयपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पयमिदं नरचन्द्रपरिकृत-
वस्तुपालप्रशस्तौ २६ पद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ पयमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि दृश्यते ॥
४ पयमिदं प्राचीनजैनलेखसमग्र २ भागे ४० संख्यगिरिनारसत्त्वप्रशस्त्यावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पयमिदं
प्राचीनजैनलेखसमग्र २ भागे ४०-४१ संख्यगिरिनारप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ६ पयमिदं प्राचीनजैन-
लेखसमग्र २ भागे ३८-४०-४२-४३ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं ६०३ महामात्यश्रीवस्तुपालभार्या महं० श्रीसोस्तुकाया धर्मस्थानमिदम् ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २३-२४)

(४०-३)

॥ ॐ नमः सर्वजाय ॥

प्रणमदमरप्रेक्षन्मौलिस्फुरन्मणिधोरणी-

तरुणकिरणश्रेणीशीशीकृताखिलविग्रहः ।

सुरपतिरकरोन्मुचैतैः स्नात्रोदकैर्धुस्तृणारुण-

स्तुततनुरिवापायात् पायाजगन्ति शिवाङ्गजः

॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुद्धि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्तव्यप्रा(१)-
ग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं०
श्रीतेजःपालात्मजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंसा-
यमाने (१) महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भनकतीर्थमुद्राव्यापारं व्यापृण्वति सति
सं० ७७ वर्षे श्रीशृङ्गयोजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादासादित-
संपाधिपत्येन चौलुक्यकुलनमस्तलप्रकाशनेकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराज-
श्रीरीरघव (१) लदेवभीतिप्रतिपत्तराज्यसर्वधर्मेण श्री-शारदामतिप्रज्ञापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन
तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले घनलकप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता महं०
भीर्तेजःपालेन च शृङ्गया-ऽर्जुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुरस्तम्भ-
तीर्थ-दर्भवती-धव (१) लकप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभू-
तजीर्णोद्धारार्थं कारिताः । तथा सचिवेधरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशृङ्गयमहातीर्थवतार-
श्रीमदादितीर्थकरश्रीकृष्णमदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्थनाथदेव-श्रीमत्पुत्रावतारश्रीमहावीरदे-
व (१) प्रशस्तिरहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगला-ऽम्बा-ऽवलोकना-
श्याम्-प्रद्युम्नशिल्पेषु धीनेमिनाथदेवालकनदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनिजपितामह ठ० श्री-
सोम-स्वपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-कुजराधिरूढमहामात्यश्रीवस्तुपालानुज महं० श्रीतेजः-
पालमूर्तिद्वय-चारुनेरणप्रय-धीनेमिनाथदेव-आग्नीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुमो-
द्गायनस्तम्भधीर्तेजःमहातीर्थममृतिअनेकनीर्मपरम्पराविराजिते धीनेमिनाथदेवाधिदेवविमूर्षितधीन-
दुजयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा ममायायाध प्राग्गटगतीय ठ० श्रीकान्हडपुम्बाः ठ० (१) राशु-
कुक्षिसंभूताया महं० धीमोरुकाया पुण्यामिश्रदये धीनागेन्द्रगच्छे भटारकधीमहेन्द्रधरिसंताने
जिन्वथीशान्तिधरिजिन्वथीप्राणन्दधरि-धीअमरधरिपट्टे भटारकधीहरिमद्रधरिपट्टलंकरणमुभी-

विजयसेनसुरप्रतिष्ठितरूपमदेवालङ्कृतोऽयनभिनवः समण्डपः श्रीअष्टापदमहातीर्थावतारनिरुपम-
प्रधानप्रासादः कारितः ॥

प्रासादैर्गगनाङ्गणप्रणयिभिः पातालमूलंकपैः,

कासौरैश्च सितैः सिताम्बरगुहैर्नैलेश्च लीलवनैः ।

येनेयं नयनिर्जितेन्द्रसचिवेनालङ्कृताऽलं क्षितिः,

क्षेमैकायतनां चिरायुलदयी श्रीवस्तुपालोऽस्तु सः

॥ १ ॥

संदिष्टं तव वस्तुपाल ! बलिना विध्वज्ययात्रिका-

न्मत्वा ना(ॐ)रदतश्चरित्रमिति ते हृष्टोऽसि नन्याश्चिरम् ।

नार्थिभ्यः क्रुचमर्थितः प्रथयसि स्वल्पं न दत्से न च,

स्वक्षापां बहु मन्यसे किमपरं ? न श्रीमदान्मुद्यसि

॥ २ ॥

अरिबलदलनश्रीवीरनामाऽयमुन्यां, सुरपतिरवतीर्णसर्कयामस्तदस्य ।

निवसति सुराश्ली वस्तुपालाभिधानः, सुरगुरुरपि तैजःपालसंज्ञः समीपे

॥ ३ ॥

उदारः शूरो वा(ॐ)रुचिरस्वचनो वाऽस्ति नहि वा,

भवतुल्यः कोऽपि कचिदिति चुलुक्पद्मेन्द्रसचिव ! ।

समुद्भूतश्रान्तिर्नियतमवगन्तुं तव यश-

स्मृतिर्गेहे गेहे पुरि पुरि च याता दिशि दिशि

॥ ४ ॥

सा कुत्रापि युगत्रयी वत ! गता स्रष्टा च सृष्टिः सतां,

सीदत्साधुरसंचरत्युचरितः खल्लवलोऽभूत् कलिः ।

तद्विश्वार्तिनिवर्तनैकमनमा प्रजोऽधुना शं(ॐ)भुना,

प्रज्ञावन्तव वस्तुपाल ! भवते यद् रोचते तत् कुरु

॥ ५ ॥

के^१ निघाय वसुधातले धनं, वस्तुपाल ! न यमालयं गताः ? ।

त्वं तु नन्दसि निवेशयनिद्रं, दिक्षु धावति जने क्षुधावति

॥ ६ ॥

पौत्रेण धारय वराहपते ! धरिर्त्री, सूर्य ! प्रकाशय सद्य जलद्राभिपिच्छ ।

विश्राणितेन परिपाल्य वस्तुपाल !, मारं भरत्यु यदिमं निद्रये विद्या(ॐ)त्रा

॥ ७ ॥

आत्मा त्वं जगतः सदागतिरियं कीर्तिमुत्तमं पुष्करं,

मैत्री मन्त्रिवरः स्मिरा धनरसः श्लोकस्तमोन्नतः शमः ।

नोक्तः केन कस्मदाभूत्करः कायश्च भावयानिति,

स्पष्टं धूर्तेरिष्टमूर्त्यः कृतपत्राः श्रीवस्तुपाल ! त्वयि

॥ ८ ॥

विद्या यद्यपि वैदिकी न लभते सौभाग्यमेवा कचि-

न्न म्मार्तं कुरुते च कश्चन वचः कर्णद्वये य(ॐ)यपि ।

राजानः कृपणाश्च यद्यपि गृहे यद्यप्ययं च व्यय-

श्चिन्ता क्वाऽपि तथापि तिष्ठति न मे श्रीवस्तुपाले सति

॥ ९ ॥

कर्णे खलप्रलपितं न करोपि रोपं, नाविष्करोपि न करोप्यपदे च लोभम् ।
तेनोपरि त्वमवनेरपि वर्तमानः, श्रीवस्तुपाल ! कलिकालमघः करोपि

॥ १० ॥

सर्वत्र आन्तिमती, सर्वविदस्त्वदभवत् कथं कीर्तिः ? । (*)
श्रीवस्तुपाल ! पैतृकमनुहरते सन्ततिः प्रायः

॥ ११ ॥

सोऽपि बलेरवलेपः, स्वल्पतरोऽभूत् तथैव कल्पतरोः ।
श्रीवस्तुपालसचिवे, सिञ्चति दानामृतैर्जगतीम्

॥ १२ ॥

नियोगिनागेषु नरेश्वराणां, भद्रस्वभावः खलु वस्तुपालः ! ।
उद्दामदानप्रसरस्य यस्य, विभाज्यते कापि न मत्तभावः

॥ १३ ॥

विबुधैः पयोधिमध्यादेको बहु(*)भिः करीन्दुरुपलब्धः ।
बहुवस्तु वस्तुपाल !, प्राप्ता विबुध ! त्वयैकेन

॥ १४ ॥

प्रथमं धनप्रवाहैर्वाहैरथ नाथमात्मनः सचिवः ।
अधुना तु सुकृतसिन्धुः, सिन्धुरवृन्दैः प्रमोदयति

॥ १५ ॥

श्रीवस्तुपाल ! भवता, जलवेर्गम्भीरता किलाऽऽकलिता ।
आनीय ततो गजता, स्वपतिद्वारे यदाकलिता

॥ १६ ॥

एते श्रीमद्गुर्जरेश्वरपुरोहि(*)त ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥
इह वालिगलुतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुजवाजडतनूजः ।

अलिखदिमां कायस्यः, सत्सम्पुत्रीयध्रुवो जयतसिंहः

॥ १ ॥

हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण ।
बहुलस्वामिसुतेनोत्कीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम्

॥ २ ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ ६०३ ॥
श्रीनेमिखिजगद्गुर्वरम्भायाश्च प्रसादतः ।

वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी

॥ ३ ॥

माहामात्यश्रीवस्तुपालमार्या महं० श्रीसोमुखकाया धर्मस्थानमिदम् ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २४-२५)

(४१-४)

ॐ नमः श्रीनेमिनाथदेवाय ॥

तीर्थेशाः प्रणतेन्द्रसंहतिशिरःकोटीरकोटिस्फुर-

चेजोजालजलप्रवाहलहरीप्रक्षालिताभिद्रवः ।

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३९ संख्यागिरिनारसम्प्रदायावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३९-४१ संख्यागिरिनारप्रदायोरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४०-४१ संख्यागिरिनारसम्प्रदायावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

ते वः केवलमूर्तयः क्वलितारिष्टां विशिष्टाममी,
तामष्टापदशैलमौलिमणयो विश्राणयन्तु श्रियम् ।

स्वस्ति श्रीविक्रमार्कसंवत् १२८८ वर्षे फागुण (*) शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्तव-
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालालज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुञ्जिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य ठ०
महं० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे (*) महं० श्रीललितादेवीकुशिसरो-
वराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं श्रीस्तम्भतीर्थवेलाकुलमुद्राव्यापारं व्यापृ-
ष्यति सति सं० ७७ वर्षे श्रीशुञ्जयोजपंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोलवप्रभावाविर्मृतश्रीमदेवाधिदेवप्रसा-
दासादितसंचाधिपत्येन चौलुक्यकुलनमस्तलप्रकाशनैक (*) मार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाद-
देवमुनमहाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीव-
स्तुपालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्यापृष्यता
महं० श्रीतेजःपालेन च श्री (*) शुञ्जया-श्रुदाचलमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-
पुर-स्तम्भतीर्थ-दर्मवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशो धर्मस्थानानि
प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितशुञ्जयमहातीर्थव-
(*) तारश्रीमदादितीर्थकरश्रीरूपमदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहा-
वीरदेवप्रशस्तिरहित—कम्भीरावतारश्रीसरस्वतीदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनपुगला-स्व्या—स्वलोकना-
शाम्ब-प्रद्युम्नशिलरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनि (*) जपितामह ठ०
श्रीसोम-पितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-तोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-अज्ञा-ऽनुज-
पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तम्भश्रीसंभेतावतारमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिते श्री-
नेमिनाथदेवाधिदेवविमूर्षितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आ (*) त्मनस्तथा स्वमार्यायाः प्राग्वाटशतीय
ठ० कान्हडपुत्र्याः ठ० राणुकुञ्जिसंभूतायाः महं० श्रीसोमुखकायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे
महारकश्रीमहेन्द्रधुरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिधुरिशिष्यआपान्दधुरि-श्रीअमरधुरिपट्टे महारकश्रीहरि-
मद्रधुरिपट्टालंकरणश्रीविजयसेनधुरिप्रतिष्ठि (*) तश्रीमदादिजिनराजश्रीरूपमदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थ-
करालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीअष्टापदमहातीर्थावतारप्रधानप्रासादः कारितः ।

स्वस्ति श्रीवलये नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-

रस्पष्टेऽपि दृशां यशः निजदिवं वन्द्यास्तदेताः प्रजाः ।

दृष्टे संप्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्तिं कांचन या पुनः स्फुटमियं विधेऽपि नो गासति

॥ १ ॥

कौटीरैः कटका-ऽङ्गुलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः,

कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यत्पाणिविभ्राणितैः ।

विद्वंसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञाभृत-

स्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमिव प्रत्याययांचकिरे

॥ १ ॥

न्यासं व्यातनुतां विरोचनमुत (*) स्त्यागं कवित्वश्रियं,

मास-न्यासपुरःतराः पृथु-रघुभायाश्च धीरभ्रतम् ।

प्रज्ञां नाकिपताकिनीगुल्फि श्रीवस्तुपाल ! ध्रुवं,

जानीमो न विवेकमेकमकृतोत्सेकं तु कौतस्कुतम् ?

॥ ३ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेत्ति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविश्रान्तमर्थिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

स्तोतव्यः खलु वस्तुपालसचिवः कैर्नाम यामैमवै-

र्यस्य (*) त्यागविधिर्विधूय विविधां दारिद्र्यमुद्रां हठात्

विश्वेऽस्मिन्नखिलेऽप्यसूत्रयदसावर्थीति दातेति च,

द्वौ शब्दावभिधेयवस्तुविरहव्याह्न्यमानस्यती

॥ ५ ॥

आघेनाप्यपवर्जनेन जनितार्थित्वप्रमाथान् पुनः,

स्तोकं दत्तमिति क्रमान्तरगतानाह्वययन्नार्थिनः ।

पूर्वसाद् गणसंख्ययाऽपि गुणितं यस्तेष्वनावर्तिषु,

द्रव्यं (*) दातुमुदस्ताहस्तकमलस्तस्यै चिरं दुःखितः

॥ ६ ॥

विश्वेऽस्मिन् किल पङ्कपङ्किलतले प्रस्थानवीथीं विना,

सीदन्नेष पदे पदे न पुरतो गन्तेति संचिन्तयन् ।

धर्मस्थानशतच्छलेन विदग्धे धर्मस्य वर्षीयसः,

संचाराय शिखकलयपपदवीं श्रीवस्तुपालः स्फुट्य

॥ ७ ॥

अम्भोजेषु मरालमण्डलरुचो डिण्डीरपिण्डत्विपः,

कासारेषु (*) पयोधिरोधसि लुठन्निर्गन्तमुक्ताश्रियः ।

ज्योत्स्नाभाः कुमुदाकरेण सदनोद्यानेषु पुष्पोल्लवणाः,

स्मृतिं कामिव वस्तुपालइतिनः कुर्वन्ति नो कीर्तयः ?

॥ ८ ॥

देवै स्वर्गाय ! कष्टं ननु क इव भवान् ! नन्दनोद्यानपालः,

खेदस्तत् कोऽय ! केनाप्यहह ! हत इतः काननात् करुणवृक्षः ।

हुं मा वादीखदेतत् किमपि (*) करुणया मानवानां मयैव,

ग्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमग्न्यास्तिष्ठक्यति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ ९ ॥

श्रीनैन्त्रीधरवस्तुपालयशसामुच्चावचैर्वीजिभिः,

सर्वस्मिन्नपि लग्निते धवळतां कलोलिनीमण्डले ।

गङ्गैवेमिति प्रतीतिविकलान्नाम्यन्ति कामं सुवि,
आम्यन्तस्तनुमादमन्दितमुदो मन्दाकिनीयात्रिकाः ॥ १० ॥

वस्त्रं (*) निर्वासनाज्ञानयनपथगतं यस्य दारिद्र्यदस्यो-
र्दष्टिः पीयूषदृष्टिः प्रगयिषु परितः पेतुषी सप्रसादम् ।
प्रेमालापस्तु कोऽपि स्फुरदमनपरव्रतसंसादवेदी,
नेदीयान् वस्तुपालः स सख्यं यदि तदा को न माग्येकमुनिः ॥ ११ ॥

साक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिव श्रेयोविवर्तः सनां,
तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा तस्यानु(*)जन्मा जयी ।
यो धत्ते न दगां कदाऽपि कलितावयामवियामयीं,
यं चोपास्य परिस्पृशन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्द्वैतिम् ॥ १२ ॥

आकृष्टे कमलकुण्डस्य कुदयारम्भस्य संस्तम्भनं,
वश्यत्वं जगदाश्रयस्य यशसामाशान्तनिर्वासनम् ।
मोहः शत्रुपराक्रमस्य सृतिरप्यन्यायदस्योरिति,
सैरं पङ्क्तिर्गर्गनिर्मितमिया मन्त्रोऽस्य मन्त्रीशितुः ॥ १३ ॥ (*)

पूते मलधारिश्रीनरेन्द्रसूरीणाम् ।
सम्भर्तार्येऽत्र कायस्यवंशे वाज्रडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिख्यञ्जयसिंहध्रुवः सुभीः ॥ १ ॥
हरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण । वकुलसामिमुतेनोत्कीर्णा पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥
(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन् नं० २ । २६-२७)

(४२-५)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ये उज्जयन्तं.....जयामृप्रजाकल्याणा ।

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवा(*)स्तव्य-
प्राग्वाटान्वयप्रभूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ०
श्रीआशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनु-
जस्य महं० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो-
वरराजहंसाय(*)माने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं सम्भर्तार्ये मुद्राव्यापारान् व्यापृ-
ष्यति सति सं० ७७ वर्षे शत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रसादाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसा-
दासादितसंधाधिपत्येन चौलुक्यकुलमभ्यलप्रकाशनं कर्मातण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु-

१ पद्यमिदं नरेन्द्रप्रसीधलघुवस्तुपालप्रसन्नौ १९ पद्यरूपेणापि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसम्प्रद
२ भागे ३८-४२-४३ मुख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसम्प्रद
२ भागे ३९-४० संक्षयगिरिनारसत्कप्रशस्तेरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

तमहाराजश्रीवीरघ(*): वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-आरदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीवस्तु-
पालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्यापृष्ट्वा
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-श्रुंदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्त(*):
म्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्धारार्थं कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजय-
महातीर्थवतारश्रीमदादित्यैकश्री प्रपभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथ-देव—सत्यपुरावतार-
श्री(*): महावीरदेवप्रशस्तिरहित—कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनसुगल—ऽम्बा-
ऽवलोकना—शाम्ब—प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय—तुरगाधिरूपवितान्द
महं० श्रीसोम—निजपितृ ठ० श्रीआशाराजभूतिद्वितय—चास्तोरणत्रय—श्रीनेमिनाथदेव—आत्मीय(*):
पूर्णजा—ऽयज्ञा—ऽनुज—पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुल्लोद्घाटनकस्तम्भश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्प-
राविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वधर्मचारिण्या
प्राग्वाटजातीय ठ० श्रीकान्हडपुण्याः ठ० राशुकुक्षिसंमृताया महं० श्रीललितादेव्याः पुण्याभि(*):
वृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेन्द्रसूरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिमूरिशिष्यश्रीआणन्दसूरि-श्री-
अमरसूरिपट्टे भट्टारकश्रीहरिभद्रसूरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनसूरिप्रतिष्ठितश्रीअजितनाथदेवादि-
विंशतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीसंमैतमहातीर्थवितारप्रासादः कारितः ।

सं श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, श्लाघास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः ? ।

श्री-आरदा-सुकुन-कीर्ति-नयादिवेण्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गमो यः ॥ १ ॥

विश्रुता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-वित्तवितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्विकारैः, कलितोऽपि वभार न विकारम् ॥ २ ॥

यस्य सः किमसावस्तु, वस्तुपालमुतः सदा । नावर्णासावथाप्येतौ, धर्मकर्मकृतौ कृतौ ॥ ३ ॥

कस्यापि कविता नास्ति, विनाऽस्य हृदयामुखम् ।

वास्तवं वस्तुपालस्य, पद्यामस्तद् व्यं च यम् ॥ ४ ॥

दुर्गः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भजे न चक्षुष्यधे,

तस्यौ कामगवी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽसिन्नवलोस्य यस्य करुणं(णं) तिष्ठेत् कोऽन्यस्ततः,

पुण्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुद्धृती दानैकवीरः कथम् ? ॥ ५ ॥

सोऽयं मन्त्री गुरुतितरापुद्गरन् धर्मभारं,

श्लाघामूर्धं नयति न कथं वस्तुपालः सहेल्म् ? ।

तेजःपालः स्ववलधनलः सर्वकर्मण्युद्धि-

र्द्धतीपीकः कल्प्यतितरां यस्य धौरेयकल्पम् ॥ ६ ॥

१ पद्यमिदं नरचन्द्रियशत्रुपालप्रशस्ती पद्यमरदयेनापि हृदये ॥ २ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यप्रथम-
मर्गे २११मरणयेनापि वर्णितं ॥ ३ पद्यमिदं नरचन्द्रियशत्रुपालप्रशस्ती चतुर्थमरणयाऽपि हृदये ॥

पतसिन् वसुवामुवाञ्जलधरे श्रीवस्तुपाले जग-

ज्जीवार्तो सिचयोच्चयैर्नवनैर्नक्तं दिवं वर्षति (*) ।

आसामन्वजनो घनोज्झितशशिज्योत्स्नाच्छवल्गाङ्गुणो-

द्भूतैरद्य दिगम्बराद्यापि यशोवाप्तोभिराच्छादितम्

॥ ७ ॥

लक्ष्मीर्मन्थाचलेन्द्रमणपरिचयादेव पारिप्लवेयं,

भ्रूमङ्गस्यैव भद्राच्चकितमृगदृशां प्रेमनस्येतरस्य ।

आयुर्निश्वासवायुप्रणयपरतयैवेवमस्यैर्वदुत्सं,

स्वास्तुर्धर्मोऽयमेकः परमिति हृदये (*) वस्तुपालेन मेने

॥ ८ ॥

तेजैःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्थितं जगत्रयीं पातुं, यदीयोदरकन्धरे ॥ ९ ॥

ललितादेवी नाम्ना, सधर्मिणी वस्तुपालस्य ।

असामनिरन्तनयन्तनयोऽयं (*) जयतर्हिहास्यः

॥ १० ॥

दृष्ट्वा वपुश्च वी.....च, परस्परविरोधिनी । विवादा.....जैत्रसिंहस्तरुण्यवादि (!) कः ॥ ११ ॥ (*)

श्रुतिरियं मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

सम्पत्तीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिसज्जैत्रसिंहध्रुवः सुधीः

॥ १ ॥

पौहृदस्य तन्त्रेण, सूत्रपारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णां प्रयत्नतः

॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्गुरुर्मयायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी

॥ ३ ॥

(गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २७-२९)

(१३-६)

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

संमेतात्रिशिरःकिरीटमणयः स्मेरसराहंकृति-

ध्वंसोत्थासितकीर्तयः शिवपुरप्राकारतारश्रियः ।

आनत्यश्रितसंविवादिबिलसद्रत्नौघरत्नाकराः,

कल्याणावलिहेतवः प्रतिकलं ते सन्तु वस्तीर्थपाः

॥ १ ॥

स्मृति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्तव्यप्राग्भाट-
कुलद्वारज (*) श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमवन्तुज ठ० श्रीआशाराज-
नन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसम्भूतस्य ठ० श्रीलुणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं० श्री-
तेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंसायमाने

१ पद्यमिदं नरचन्द्रायवस्तुपालप्रशस्ती पोद्ग्यपद्यगाऽपि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ६४ संख्यश्रुंदाचलसूक्तशिलाखेले पोदशं सोमेश्वरदेवकृतितया वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३४-४१-४२ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४३ संख्यगिरिनारसम्प्रदायस्थोरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४०-४३ संख्यगिरिनारप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

मह० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भ (*) तीर्थशुद्राव्यापारान् व्यापृष्वति सति स० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयो जयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सम्प्रभावाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासादितसङ्घाधिप-
त्येन चौलुक्यकुलमस्तत्प्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराजश्रीवीरध-
वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपक्षापरत्येन महामा (*) त्यश्रीवस्तुपालेन तथा अनुजेन
स० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलकक्रप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्वता मह० श्रीतेजःपालेन
च श्रीशत्रुंजया-ऽर्बुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भ-
वती-धवलकक्रप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि फोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभूतजी (*) णो-
द्वाराश्च कारिता ॥ तथा श्री-शारदाप्रतिपन्नपुरसचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेन स्वधर्मचारिण्या प्राग्गट-
ज्ञातीय ठ० श्रीकान्हडपुण्या ठ० राणुकुक्षिसम्भूताया मह० श्रीललितादेव्यास्तथा आत्मन पुण्या-
मिष्टद्वये इह स्वयनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्थवतारश्रीमदादित्यैकश्रीभूतपमदेव-स्तम्भनरूपुरा-
वतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरा (*) वतारश्रीमहावीरदेवप्रशस्तिरहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीम-
र्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-ऽनलोकना-शाम्भ प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालकृतदेव-
कुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनिजपितामह मह० श्रीसोम-स्वपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वित्रय चारुतो-
रणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिस (*) मन्वितमुखोद्घाटनकस्तम्भ-श्रीश-
ष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरंपराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयंतमहातीर्थे
श्रीनागेन्द्रगच्छे मद्यारकथीमहेंद्रधरिसंताने शिष्यश्रीशांतिस्वरिशिष्यश्रीआणंदस्वरि-श्रीअमरस्वरिषष्टे
मद्यारकश्रीहरिमद्रूपिष्टालकरणप्रभुश्रीविजयसेनस्वरिप्रतिष्ठित (*) श्रीमदजितनाथदेवप्रमुखविंशतिती-
र्थैकरालकृतोऽयमभिनव समण्डप श्रीसंमेतावतारमहातीर्थप्रासादः कारित ॥ छ ॥

मुंण्णाति प्रसभ वसु द्विजपतेगौरीगुरु लङ्घयन्,

नो धत्ते परलोकतो भयमहो ! हसापलापे कृती ।

उच्चेरास्तिकचक्रगालमुकुट ! श्रीवस्तुपाल ! स्फुट,

मेजे नास्तिक्तामय तव यदा पूर कुलत्या (*) मिति ।

॥ १ ॥

कोषोटोपरै परैश्वलचमूरङ्गचुरङ्गक्षत-

क्षोणीशोदवसादशोपि जलधि श्रीस्तम्भतीर्थे पुरे ।

स्वेदाम्भस्तदिनीषटाषटनया श्रीनस्तुपालसुर-

चेजस्तिम्मगभक्षितसतनुमिस्त्रैरेव सम्पूरित

॥ २ ॥

दिम्यात्रोत्तववीरवीरधवलक्षोणीधवाप्यासित,

प्राज्य राज्यरथस्य भारमभित स्वचे दपहील्या ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवममार्गप्रातेऽपि रच्यते ॥ २ पद्यमिदं मुहूर्तकीर्तिकोशेऽभिनवा १३० तम-
पद्यनाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं मुहूर्तकीर्तिकोशेऽभिनवा १२१ पद्यभेगे उदयमीयवस्तुपालसुतो च ११
पद्यभेगाऽपि रच्यते ॥

भाति आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न स्थाय्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ॥ ३ ॥

लावण्यांग इति द्युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्,

आता यस्य निशानिशांतविकसच्चन्द्रप्रकाशाननः ।

शंके शंकरकोपसंभ्रमभरादासीदनंगः स्मरः,

साक्षादंगमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गांगनाभिर्लघु

॥ ४ ॥

रैक्तः सद्गतिभावभाजि चरणे श्रीमच्छुदेवोऽपरो,

यद्भ्राता परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलनिर्मलमानसेन समयं कापि श्रयन् पंकिलं,

विधे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः

॥ ५ ॥

सोऽयं तस्य सुधाहरस्य कवितानिष्ठः कनिष्ठः कृती,

बंधुर्बंधुरुद्विबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिधः ।

ज्ञानांभोरुहकोटरे भ्रमरतां सारंगसाम्यं यशः-

सोमे सौरितुलां च यस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ

॥ ६ ॥ (*)

इदुर्बिंदुरपां सुरेश्वरसरिङ्गिडीरपिंडः पति-

भासां विद्रुमकंदलः किल विभुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः ।

कैलास-त्रिदशेभ-शंसु-हिमवत्प्रायास्तु मुक्ताफल-

स्तोमः फोमलवालुकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी

॥ ७ ॥

हैस्ताम्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुभैरः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यद्बुद्धिः कल्पितोरु(१)द्विपगहनपरक्षोणिभृद्बुद्धिसंप-

छोपासुद्राधिपस्य स्फुरति लसदिनस्फारसंचारहेतुः

॥ ८ ॥

पुण्यश्रीर्भुवि मल्लदेवतनयोऽमृत पुण्यसिंहो यशो-

वर्यः स्फूर्जति जैत्रसिंह इति तु श्रीवस्तुपालात्मजः ।

तेजःपालसुतस्त्वसौ विजयते लावण्यसिंहः स्वयं,

यैर्विधेऽभवदेकपादपि कलौ धर्मश्चतुष्पादयम्

॥ ९ ॥

एते श्रीनारगैर्गच्छे भट्टारकश्रीउदय(२)प्रभसूरीणाम् ।

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्यवंशे बाजडनंदनः । प्रशस्तिमेतामल्लिखजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः

॥ १ ॥

१ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या ११३ पयतयाऽपि वर्तते ॥ २ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या ११५ पय-
रूपेणापि वर्तते ॥ ३ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्थिन्या १२८ तमपयस्त्रयेणापि दृश्यते ॥ ४ पयमिदं सुकृतकीर्ति-
कलोत्थिन्या ११७ पयतयाऽपि वर्तते ॥ ५ पयमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४१-४२ संख्यगिरिनार-
प्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

वाहस्य तनूजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णा प्रयत्नतः ॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्गुरुस्त्रयाथ प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना । शुभं भवतु ॥

(४४-७)

वस्तुपालविहारेण, हारेणैवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

श्रीविक्रमसंवत् १२८९ वर्षे आश्विनवदि १५ सोमे महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मश्रेयोऽर्थं पश्चाद्भागे श्रीकपर्दिपक्षप्रासादसमलंकृतः श्रीशत्रुंजयावतारश्रीआदिनाथप्रासादस्तदग्रतो वाम-पक्षे स्वीयसद्वर्माचारिणी महं० श्रीललितादेविश्रेयोऽर्थं विंशतिजिनलंकृतः श्रीसम्मेतशिशिरप्रासाद-स्तथा दक्षिणपक्षे द्वि० मार्या महं० श्रीसोऽख्यश्रेयोऽर्थं चतुर्विंशतिजिनोपशोभितः श्रीअष्टापदप्रासादः अपूर्वपाटरचनारुचिरतरमभिनवप्रासादचतुष्टयं निजद्रव्येण कार्याचक्रे ।

(लिष्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिमेंस इन बॉम्बे प्रेसिडेंन्सी पृ० ३६१)

(४५-८)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीललितादेवीमूर्ति ।

(४६-९)

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीसोऽख्यकामूर्ति.... ।

(लि० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रे० पृ० ३५७-८)

(४७-१०)

वस्तुपालविहारेण, हारेणैवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(४८-११)

वस्तुपालविहारेण, हारेणैवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते ॥ १ ॥

(लि० ऑ० आ० रि० इ० बॉ० प्रे० पृ० ३५९)



१ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यमहा १ भागे १८-४१ संवत्तिगिरिनारपर्वतस्थितेति ग्रन्थभागे वर्तते ॥
२ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यमहा १ भागे १८-१९-१०-४१ संवत्तिगिरिनारपर्वतस्थितेति ग्रन्थभागे वर्तते ॥
३ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यमहा १ भागे ४७-४८ संवत्तिगिरिनारपर्वतस्थितेति ग्रन्थभागे वर्तते ॥

श्रीअर्बुदाचलोपरिस्थिताः प्रशस्तयः ।

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीतेजःपालकारितश्रीलूण-
वसहिकागतप्रशस्तिलेखाः ।

(६४)

॥ ६० ॥

वंदे सरस्वतीं देवीं, याति या क[ि]व[ि]मानसम् ।

नी[यमा]ना [निजेने] व, [यानमा]नस[व]ासिन[र] ॥ १ ॥

य. [क्ष]ातिमा[नय्य] रु [णः प्रकोपे, शातोऽपि दीप्त]ः स्मरनिमहाय ।

निमीलिताक्षोऽ[पि सम]प्रदर्शी, स व. शिवायास्तु शि* [वात]नूतः ॥ २ ॥

अणहिलपुरमस्ति स्वस्तिपात्रं प्रजा [नाम]जरजिर [घुतुल्यैः] पा [स्य]माने चु[लुक्यैः] ।

[विरम]ति रमणीनां य[त्र वक्त्रे]न्दु [मंदी]कृत इव [सि]तपक्षप्रक्षयेऽप्यधूकारः ॥ ३ ॥

तत्र प्राग्वाटान्वयमुकुटं कुटजप्रसून (*) विशदयशाः ।

दानविनिर्जितकरुपद्रुमपंडश्चंद्रपः समभूत् ॥ ४ ॥

चंद्रप्र[सा]दसं[ज्ञ], स्वकुल[प्रासा]दहेमदंडोऽस्य ।

प्रसर[त्की]र्तिपताकः, पुण्यविपाकेन सूनुरभूत् ॥ ५ ॥

आलमगुणैः किरणैरिव, सोमो रोमोद्गमं सता (*) कुर्वन् ।

उदगादगाधमध्याहुगघोदविवाधवाचस्मात् ॥ ६ ॥

एतस्मादजनि जिताधि[ना] धमकिं, विभ्राणः स्वमनसि शश्वदश्चरा[जः] ।

तस्याऽऽसीद्दयिततमा कुमारदेवी, देवीव त्रिपुररिपोः कुमारमाता ॥ ७ ॥

तयो. प्रथमपु (*) त्रोऽमृन्मन्त्री लूणिगसञ्ज्ञया ।

दैवादवाप बालोऽपि, सालोक्यं [व]ासवेन सः ॥ ८ ॥

पूर्वमेव सचिव. स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सु लूणिगः ।

यस्य निस्तुपगतमेनीषया, धिक्कृतेव विषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥

श्रीमल्लदेवः श्रि (*) तमल्लिदेवः, तस्यापुत्रो मन्त्रिमतल्लिकाऽभूत् ।

बभूव यस्यान्यधनागनासु, लुब्धा न बुद्धिः शमलब्धबुद्धेः ॥ १० ॥

धर्मविधाने भुवनच्छिद्रपिधाने विभिन्नसधाने ।

सृष्टिकृता न हि सृष्टः, प्रतिमल्लो मल्लदेव (*) स्य ॥ ११ ॥

नीलनीरदकदम्बकमुक्तश्वेतकेतुकिरणोद्धरणेन ।

मल्लदेवयशसा गलहस्तो, हस्तिमल्लदशनांशुषु दत्तः ॥ १२ ॥

तस्यानुजो विजयते विजितेन्द्रियस्य, सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्षः ।

श्रीवस्तु(५)[पा]ल इति भालतलस्थितानि, दौःस्थ्याक्षराणि मुकृती कृतिनां विलुपन् ॥ १३ ॥

विरचयति वस्तुपालश्चलुक्पसचिवेषु कविषु च प्रवरः ।

न कदाचिदर्थहरणं, श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १४ ॥

तेजःपालः पालितस्वा(५)मितेजःपुंजः सोऽयं राजते मंत्रिराजः ।

दुर्वृत्तानां शंक्नीयः कनीयानस्य आता विश्वविभ्रांतकीर्तिः ॥ १५ ॥

तेजःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ! । स्थितं जगन्प्रयीसूत्रं, यदीयोदरकंदरे ॥ १६ ॥

जाल्हु-भाऊ-साऊ-धनदेवी-सोहगा-चयजुकाल्याः ।

परमलदेवी चैपां, कमादिमाः सप्त सोदर्यः ॥ १७ ॥

एतेऽश्वराजपुत्रा, दशरथपुत्रास्त एव चत्वारः । प्राप्ताः किल पुनरवनावेकोदरवासलोमेन ॥ १८ ॥

अनुजन्मना समेतस्तेजःपा(५)लेन वस्तुपालोऽयम् ।

मदयति कस्य न हृदयं ? , मधुमासो माधवेनेव ॥ १९ ॥

पंथानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिध स्मरंतौ ।

सहोदरौ दुर्द्धर्मोहचौरे, संभूय धर्माध्वनि तौ प्रवृत्तौ ॥ २० ॥

इदं सदा सो(५)दरयोरुदेखु, युगं युगव्यायमदोर्युगश्चि ।

युगे चतुर्थेऽप्यनघेन येन, कृतं कृतस्यागमनं युगस्य ॥ २१ ॥

मुक्कामयं शरीरं, सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु ।

मुक्कामयं किल महीबलयमिदं भाति यत्कीर्त्या ॥ २२ ॥

ए(५)कोत्पत्तिनिमिचौ, यद्यपि पाणी तयोस्तथाऽप्येकः ।

वामोऽमूदनयोर्न तु, सोदरयोः कोऽपि दक्षिणयोः ॥ २३ ॥

धर्मस्थानांकितामुर्वी, सर्वतः कुर्वताऽमुना । दत्तः पादो बलाहंशुयुगलेन कलेर्गले ॥ २४ ॥

इतश्चौलुक्पवीरा(५)णां, वंशे शाखाविशेषकः ।

अणोर्राज इति स्यात्तो, जातस्तेजोमयः पुमान् ॥ २५ ॥

तस्मादनंतरमनंतरितप्रतापः, प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लक्षणप्रसादः ।

स्वर्गापगानलजलक्षितार्जसुभा, बभ्राम यस्य लवणाब्धिमतीत्य कीर्तिः(५) ॥ २६ ॥

सुनन्तस्मादासीद्दशरथकनुत्तमप्रतिकृतेः,

प्रतिश्मापालानां कवलिचलो घोरधवलः ।

१ पयमिदं प्राचीनदेवलेखनं २ भागे ४२ गङ्गागिरिनागरपञ्चसिलालेखे नवमं मत्तपारिधीनरन्ध्रधरि-
हास्येन निर्दिष्टं वर्णने ॥ २ पयमिदं त्रिगदयययन्नुपालचरिते सोमेश्वरदेवनाम्नेन वर्तते ॥

यशःपूरे यस्य प्रसरति रतिक्लान्तमनसा-

॥ मसाध्वीनां भमाऽभिसरणकलायां कुशलता ॥ २७ ॥

चौलुक्यः स्रुक्ती स वीरघवलः क(०) गेजपानां जपं,

॥ यः कर्णेऽपि चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यौ मंत्रिणौ ।

आभ्यामभ्युदयातिरेकचिरं राज्यं स्वभर्तुः कृतं,

॥ बाहानां निवहाः घटाः करटिनां वद्धाश्च सौधांगणे ॥ २८ ॥

तेन मंत्रिद्वयेनायं, जाने जानूपवर्तिना । वि(०)मुर्जद्वयेनेव, सुखमाश्लिष्यति श्रियं ॥ २९ ॥

इतश्च—

गौरीवरश्चशुरभूधरसमवोऽयमस्त्यर्बुदः ककुदमद्रिकदंबकस्य ।

मंदाकिनीं धनजटे दधुतुत्तमां[गे], यः श्यालकः शशिमृतोऽभिनयं करोति ॥ ३० ॥

कचिदिह विहरंतीर्वी(०)क्षमाणस्य रामाः, प्रसरति रतिरंतर्मोक्षमाकांक्षतोऽपि ।

कचन मुनिमिरर्ध्यां पश्यतस्तीर्थवीथीं, भवति भवविरक्ता धीरधीरात्मनोऽपि ॥ ३१ ॥

श्रेयःश्रेष्ठवशिष्ठहोमहुतशुक्कुंडान्मृतं डात्मज-

प्रघोताधिकदेहदीधितिम(०)रः कोऽप्याविरासीन्नरः ।

तं मत्वा परमारणैकरसिकं स व्याजहार श्रुते-

राधारः परमार इत्यजनि तन्नामाऽथ तस्यान्वयः ॥ ३२ ॥

श्रीधूमराजः प्रथमं बभूव, भूवासवस्तत्र नरेंद्रवंशे ।

भूमिमृतो यः कृतवानभिज्ञान्, पक्षद्वयोच्छे(०)दनवेदनासु ॥ ३३ ॥

घंघुक-ध्रुव-भटादयस्ततस्ते रिपुद्विपघटाजितोऽभवन् ।

यत्कुलेऽजनि पुमान् मनोरमो, रामदेव इति कामदेवजित् ॥ ३४ ॥

रोदःकंदरवर्तिकीर्तिलहरीलिप्तामृतांशुधुते-

रप्रद्युम्नवशो यशोघवल इ(०)त्यासीचनुजस्ततः ।

यशौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्थितामागतं,

मत्वा सत्वरमेव मालवपतिं व(व)ल्लालमालव्ववान् ॥ ३५ ॥

शत्रुश्रेणीगलविदलनोन्निद्रनिस्त्रिशघारो,

घारावर्षः समजनि सुतस्तस्य विश्वप्रकाशयः ।

क्रोधाकांतप्र(०)धनवसुधानिश्चले यत्र जाता-

भ्योतन्नैत्रोत्पलजलकणाः कौंकणाधीशपत्न्यः ॥ ३६ ॥

सोऽयं पुनर्दाशरथिः पृथिव्यामव्याहृतौजाः स्फुटमुज्जगाम ।

मारीचवैरादिव योऽधुनाऽपि, [मृ]गव्यमव्यग्रमतिः करोति ॥ ३७ ॥

सामं(*)तसिंहसमिति क्षितिर्विक्षतौजाः, श्रीगूर्जरक्षितिपरक्षणदक्षिणासिः ।

प्रह्लादनस्तदनुजो दनुजोत्तमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥

देवी सरोजासनसंभवा किं ?, कामप्रदा किं सुरसौरभेयी ? ।

प्रह्लादनाकारधरा(*)धरायामायातवत्येष न निश्चयो मे ॥ ३९ ॥

धारावर्षसुतोऽयं, जयति श्रीसोमसिंहदेवो यः ।

पितृतः शौर्यं विधां, पितृव्यकाहानमुभयतो जगृहे ॥ ४० ॥

मुक्त्वा विप्रकरानरातिनिकरान्निर्जित्य तर्त्तिकवन,

प्रापत् संप्रति सोम(*)सिंहनृपतिः सोमप्रकाशं यशः ।

येनोर्वीतलमुज्ज्वलं रचयताऽप्युत्तम्यतामीर्षया,

सर्वेषामिह विद्विषां नहि मुक्षान्मालिन्यमुन्मूलितं ॥ ४१ ॥

वसुदेवस्येव सुतः, श्रीकृष्णः कृष्णराजदेवोऽस्य ।

मात्राधिकप्रतापो, यशोद(*)यासंश्रितो जयति ॥ ४२ ॥

इतश्च—

अन्वयेन विनयेन विद्यया, विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ।

कापि कोऽपि न पुमानुपैति मे, वस्तुपालसदृशो दृशोः पथि ॥ ४३ ॥

देयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेन्द्रात् ।

नाम्ना जयंत(*)सिंहं, जयंतमिन्द्रात् पुलोमपुत्रीव ॥ ४४ ॥

यः शैशवे विनयवैरिणि बोधबन्धे,

घटे नयं च विनयं च गुणोदयं च ।

सोऽयं मनोभवपरामवजारुरक-

रूपो न कं मनसि चुंयति जैत्रसिंहः ? ॥ ४५ ॥

श्रीवस्तुपालपुत्रः, कल्पायुरयं जयं(*)तसिंहोऽस्तु ।

कामादधिकं रूपं, निरूप्यते यस्य दानं च ॥ ४६ ॥

सं श्रीतेजःपालः, सचिवधिरकालमस्तु तेजस्वी । येन जना निधिताधितामणिनेव नंदति ॥ ४७ ॥

यच्चाणक्याऽमरगुरु-मरुद्वाधि-शुकादिकानां,

प्रागुत्पादं व्यथितं मुवने (*) मंत्रिणां बुद्धिप्राप्तां ।

चक्रेऽभ्यासः स सल्ल विधिना नूनमेनं विधातुं,

तेजःपालः कथमितरथाऽऽधिक्यमापैष तेपु ? ॥ ४८ ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखतमग्रह १ भागगत ३८ संक्षयगिरिनारसत्कशिलालेखे नवमं सोमेश्वरदेवकृतिरूपे-
णेव निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखमग्रह २ भागगत ३८ संक्षयगिरिनारसत्क १०१ संक्षयार्जुनचं-
प्रशस्तयोः क्रमताः पद्यं प्रथमं च सोमेश्वरदेवकृतितया निर्दिष्टं वर्तते ॥

अस्ति स्वस्तिनिकेतनं तनुभृतां श्रीवस्तुपालानुज-
स्तेजःपाल इति स्थितिं बलिहृतामुर्वीतले पालयन् ।

आत्मीयं व(*)हुमन्यते न हि गुणग्रामं च कामंदकि-

श्वाणक्योऽपि चमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्य यम्

॥ ४९ ॥

इतश्च महं० श्रीतेजःपालस्य पत्न्याः श्रीअनुपमदेव्याः पितृवंशवर्णनम् ॥
प्राग्वाटान्वयमंडनैकमुकुटः श्रीसांद्रचंद्रावती-

वास्तव्यः स्त(*)वनीयकीर्तिहृरिप्रक्षालितश्मातलः ।

श्रीगागाभिधया सुधीरज्जनि यद्वृत्तानुरागादभूत्,

को नासप्रमदो न दोलितशिरा नोद्धतरोमा पुमान् ?

॥ ५० ॥

अनुसृतसज्जनसरणिर्घरणिगनामा बभूव तचनयः ।

स्वप्रभुहृदये (*) गुणिना, हारेणेव स्थितं येन

॥ ५१ ॥

त्रिभुवनदेवी तस्य, त्रिभुवनविख्यातशीलसंपन्ना ।

दयिताऽभूदनयोः पुनरंगं द्वेधा मनस्त्वेकम्

॥ ५२ ॥

अनुपमदेवी देवी, साक्षाद्वाक्षायणीव शीलेन ।

तद्बहुहिता सहिता श्रीतेजःपालेन (*) पत्याऽभूत्

॥ ५३ ॥

इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसूनव्रततिरजनि तेजःपालमन्त्रीशपत्नी ।

नय-विनय-विवेकौचित्य-दाक्षिण्य-दानप्रमुखगुणगणैर्दुद्योतिताशेषमोत्रा

॥ ५४ ॥

लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं, रयं जयति (*) [द्वि] यदुष्टवाजिनाम् ।

लब्ध्वापि मीनभ्रजमंगलं वयः, प्रयाति धर्मेकविधायिनाऽध्वना

॥ ५५ ॥

श्रीतेजपालतनयस्य गुणानमुप्य, श्रीलूणसिंहकृतिनः कति न स्तुवंति ? ।

श्रीबंधनोद्धरतरैरपि यैः समंतादुद्दामता त्रिजगति क्रि(*)यते स्म कीर्तेः

॥ ५६ ॥

गुण-धननिधानकलशः, प्रकटोऽयमवेष्टितश्च खलसर्पैः ।

उपचयमयते सततं, सुजनैरुपजीव्यमानोऽपि

॥ ५७ ॥

मह्यदेवसचिवस्य नंदनः, पूर्णसिंह इति लीलुकासुतः ।

तस्य नंदति सुतोऽयमह्वणा (*) देविभूः सकृत्तवेदम पेथढः

॥ ५८ ॥

अभद्रनुपमा पत्नी, तेजःपालस्य मंत्रिणः । लावण्यसिंहनामाऽयमायुष्मानेतयोः सुतः

तेजःपालेन पुण्यार्थं, तयोः पुत्र-कलत्रयोः । हर्म्य श्रीनेमिनाथस्य, तेने तेनेदमर्बुदे

॥ ६० ॥

तेजःपाल इति क्षितिदुसचिवः शंखोज्ज्वलाभिः शिला-

श्रेणीभिः स्फुरदिदुंकुंदरुचिरं नेमिप्रमोर्गदिरम् ।

उच्चैर्मंडपमग्रतो जिना वरा वासद्विपंचाशतं,

तत्पार्श्वेषु भलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान्

॥ ६१ ॥

श्रीमच्छंड[प]संभवः [सम]भवच्छंडप्रसादस्ततः,
सोमस्तत्प्रभवोऽश्वराज इति तत्पुत्राः पवित्राशयाः ।

श्रीमल्लूणिग-मल्लदेवसचिवश्रीवस्तुपालाह्वय-
स्तेजःपालसमन्विता जिनमतारामोन्नमजीरदाः ॥ ६२ ॥

श्रीमंत्रीश्वरवस्तुपालतनयः श्रीजै(*)वसिंहाह्वय-
स्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमतिलोवण्यसिंहाभिधः ।

एतेषां दश मूर्तयः करिवधूस्कंधाधिरूढाश्चिरं,
राजंते जिनदर्शनार्थमयतां दिमायकानामिव ॥ ६३ ॥

मूर्तीनामिह पृष्ठतः करिवधूपृष्ठप्रतिष्ठाजुषां,
तन्मूर्तिर्विम(*)लशमखचक्रगताः कान्तासमेता दश ।

चौलुक्पक्षितिपालवीरध्वजलस्याद्वैतबन्धुः सुषी-
स्तेजःपाल इति व्यधापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः ॥ ६४ ॥

तेजःपालः सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ।
सविधे विभाति सफलः, (*) सरोवरस्येव सहकारः ॥ ६५ ॥

तेन प्रातृयुगेन या प्रतिपुर-भ्रामा-ऽज्व-शैलशूलं,
वापी-कूप-निपान-कानन-सरः-प्रासाद-सत्रादिका ।

धर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेऽथ जीर्णोद्धृता,
तत्संख्याऽपि न बुध्यते यदि परं तद्वेदि(*)नी मेदिनी ॥ ६६ ॥

शंभोः श्वासगतागतानि गणयेद् यः सन्मतियोऽधवा,
नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलयेन्मार्कंडनान्नो मुनेः ।

संख्यातुं सचिवद्वयीविरचितामेतामपेतापर-
व्यापारः सुकृतानुकीर्तनतति सोऽप्युज्जिहीते यदि (*) ॥ ६७ ॥

सर्वत्र वर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती । सुकर्तुमुपकर्तुं च, जानीते यस्य संततिः ॥ ६८ ॥

आसीच्छंडपमंडितान्वयगुरुर्ध्वगिंद्रगच्छश्रिय-

भूडारलमयलसिद्धमहिमा सूरिर्महेंद्राभिषः ।

तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितः श्रीश्रुति(*) [सूरिस] तो-
प्यानंदा-ऽमरसूरियुग्ममुदयचन्द्रार्कदीपयुति ॥ ६९ ॥

श्रीजैनशासनवनीनवनीरवाहः, श्रीमास्ततोऽप्यधरो हरिमद्रसूरिः ।
विद्यामदोन्मदगदेष्वनवधवैद्यः, ख्यातस्ततो विजयसेनपुनीधरोऽयम् ॥ ७० ॥

गुरो [स्त] (*) स्या [सि] पां पात्रं, सूरिस्त्युदयप्रभः ।
मौक्तिकानीव सूक्तानि, भाति यत्प्रतिभांबुधेः ॥ ७१ ॥

॥ एतद्धर्मस्थानं, धर्मस्थानस्य चास्य यः कर्ता ।
 तावद् द्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्घुदो यावत् ॥ ७२ ॥
 श्रीसोमेश्वरदेवश्चलुक्यनरदेवसेवितांहि (*) युगः ।
 रचयांचकार रुचिरां, धर्मस्थानप्रशस्तिमिमाम् ॥ ७३ ॥

श्रीनेमेरम्बिकायाश्च, प्रसादादर्जुदाचले । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः सस्तिशालिनी ॥ ७४ ॥
 सत्र० केल्लहणमुतघांघलपुत्रेण चंडेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा । (*) श्रीविक्रम [संवत् १२८७
 वर्षे] फाल्गुण वदि ३ रवौ श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः प्रतिष्ठा कृता ॥

(६५)

॥ ६ ॥ ॐ नमः [सर्वज्ञाय ॥ सव] त् १२८७ वर्षे लौकिकफाल्गुनवदि ३ रवौ अयेद् श्री-
 मदणहिलपाटके चौलुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृतमहाराजधिराजश्रीम [१ मदेव] .
 (*) विजयराज्ये त... श्रीवसिष्ठ (४) कुंडयजनानलोद्भूतश्रीमद्भूमराजदेव-
 कुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराजकुलश्रीसोमसिंहदेवविजयराज्ये तस्यैव महाराजधिराजश्रीभीमदेवस्य
 प्रसा [दात् गूर्ज] (*) रत्रामंडले श्रीचौलुक्यकुलोत्पन्नमहामंडलेश्वरराजकुलश्रीलवणप्रसाददेवमुत-
 महामंडलेश्वरराजकुलश्रीवीरधवलदेवसत्कसमस्तमुद्राव्यापारिणा श्रीमदणहिलपुरवास्तव्यश्रीप्राग्वाट-
 शातीय ठ० श्रीचंड [पसुत ठ० श्री] (*) चंडप्रसादात्मज महं० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआसराज-
 भार्या ठ० श्रीकुमारदेव्योः पुत्र महं० श्रीमल्लदेव सधपति महं० श्रीवस्तुपालयोरनुजसहोदराभ्रा-
 तृ महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेव्यास्तत्कुक्षि [समूतप] (१) विप्रपुत्र महं०
 श्रीलूणसिंहस्य च पुण्ययशोऽभिवृद्धये श्रीमदर्जुदाचलोपरि देउलवाडाग्रामे समस्तदेवकुलिकालकृतं
 विशालहस्तिशालोपशोभितं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमिनाथदेवचैत्यमिदं कारित ॥ छ ॥
 (*) प्रतिष्ठितं श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमहेंद्रसूरिसताने श्रीशांतिसूरिनिष्यश्रीआणंदसूरि-श्रीअमरचंद्र-
 सूरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीहरिमद्रसूरिशिष्यैः श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥ छ ॥ अत्र च धर्मस्थाने कृत-
 यावकगोष्टि (छि) कानां नामा (*) नि यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्री-
 तेजःपालप्रभृतिभ्रातृव्यसतानपरंपरया तथा महं० श्रीलूणसिंहसत्कमातृकुलपक्षे श्रीचंद्रावतीवास्त-
 व्यप्राग्वाटशातीय ठ० श्रीमावदेवमुत ठ० श्रीशालिगतनुज ठ० (*) श्रीमागस्तनय ठ० श्री-
 गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगभ्रातृ महं० श्रीराणिग महं० श्रीलीला तथा ठ० श्रीधरणिगभार्या ठ०
 श्रीतिष्ठुणदेविकुक्षिसंभूत महं० श्रीअनुपमदेवीसहोदराभ्रातृ ठ० श्रीसौम्यसीह ठ० श्रीआम्बसीह
 ठ० श्रीऊदल (*) तथा महं० श्रीलीलासुत महं० श्रीलूणसीह तथा भ्रातृ ठ० जगसीह ठ०
 रत्नसिंहानां समस्तकुटुंबेन एतदीयसंतानपरंपरया च एतस्मिन् धर्मस्थाने सकळमपि स्नपनपूजा-
 सारादिकं सदैव करणीयं निर्वाहणीयं च ॥ तथा ॥ (*) श्रीचंद्रावत्याः सत्कममस्तमहाजनसत्कल-

जिनचैत्यगोष्टि(ष्टि)कप्रभृतिश्रावकसमुदायः ॥ तथा उवर्णी-कीमरेउलीग्रामीयप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० रासल उ० आसधर तथा ज्ञा० भाणिभद्र उ० श्रे० आल्हण तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० खीम्बसी(*)ह धर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिम उ० आसचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० वहुदेव उ० सोम प्राग्वाटज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीदा उ० पाल्हण धर्कटज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० सा(*)ल्हा तथा श्रीमालज्ञा० पूना उ० साल्हाप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिः श्रीनेमिनाथदेवमतिष्ठा(ष्ठा)वर्गमधियाज्ञाष्टाहिकार्या देवकीय चैत्ररदि ३ तृतीयादिने स्नपनपूजाद्युत्सवः कार्यः ॥ तथा कोंसिह्रदग्रामीय ऊएसवालज्ञा(*)तीय श्रे० सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सलखण उ० वालण प्राग्वाटज्ञा० श्रे० सांतुय उ० देल्हुय तथा ज्ञा० श्रे० गोसल उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० कोला उ० आम्वा तथा ज्ञा० श्रे० पासचंद्र उ० पूनचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर उ० ज(*)मा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० साल्हा श्रीमालज्ञा० कयहुरा उ० कुरुधरप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ४ चतुर्थीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य द्वितीयाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा ब्रह्माणवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय महाजनिः (*) आंगिम उ० पूनड ऊएसवालज्ञा० महा० धांधा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० साटा उ० वरदेव प्राग्वाटज्ञा० महा० पाल्हण उ० उदयपाल ओइसवालज्ञा० महा० आबोधन उ० जगसीह श्रीमालज्ञा० महा० वीसल उ० पासदेव प्रा(*)ग्वाटज्ञा० महा० वीरदेव उ० अरसीह तथा ज्ञा० श्रे० धणचंद्र उ० रामचंद्र-प्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ५ पंचमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य तृतीयाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा धउलीग्रामीय प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० सा(*)जण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे० बोहडि उ० पूना तथा ज्ञा० श्रे० जसहुय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजन उ० मोला तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय उ० सावदेव तथा ज्ञा० दूगसरण उ० साहणीय ओइसवाल(*)ज्ञा० श्रे० सलखण उ० महं जोगा तथा ज्ञा० श्रे[०] देवकुंयारं उ० आसदेवप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य चतुर्थीष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा मुंडस्थलमहातीर्थवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय (*) श्रे० सं० धीरण उ० गुणचंद्र पाल्हा तथा श्रे० सोहिय उ० आश्वेसर तथा श्रे० जेजा उ० खाखण तथा फीलिंगी-ग्रामवास्तव्य श्रीमालज्ञा० नापल-गाजणप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ७ सप्तमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य पंचमाष्टाहिकाम(*)होत्सवः कार्यः ॥ तथा हंडाउद्रग्राम-डवाणीग्रामवास्तव्य श्रीमालज्ञातीय श्रे० आम्नुय उ० जमरा तथा ज्ञा० श्रे[०] लखमण उ० आधू तथा ज्ञा० श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० सुमिम उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ० 'जाला(*) प्राग्वाटज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमाल ज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल तथा ज्ञा० श्रे० आमधर उ० आमल तथा ज्ञा० श्रे० धिरदेव उ० धीरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचंद्र उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रुखमण(*) उ० कडुपामप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीभिस्तथा ८ अष्टमीदिने श्रीनेमिनाथदेवपञ्चाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥

तथा [म]डाहडवास्तव्यप्राग्वाटजातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसरणु तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे०
 घणिया तथा ज्ञा[०] श्रे० (*) देल्हण उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसिद्ध
 तथा ज्ञा० श्रे० आंघुय उ० बोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा[०] श्रे०
 वीरुप उ० स्नाजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेवप्रभृतिगोष्टि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा ९
 नवमोदिने (*) श्रीनेमिनाथदेवस्य 'सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा साहिलवाडावास्तव्य
 ओइसवालजातीय श्रे० देल्हा उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आम्बदेव श्रे० काल्हण उ०
 आसल श्रे० वोहिय उ० लाखण श्रे० जमदेव उ० वाहड श्रे० (*) सीलण उ० देल्हण
 श्रे० बहुदा श्रे० महघरा उ० घणपाल श्रे० मूनिग उ० वाघा श्रे० गोसल उ० वहडाप्रभृति-
 गोष्टि(ष्ठि)काः । अमीभिस्तथा १० दशमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य अष्टमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥
 तथा श्रीअर्बुदोपरि देउल(*)वाडावास्तव्यसप्तमस्तथावकैः श्रीनेमिनाथदेवस्य पंचापि कल्याणि-
 कानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि । एवमियं व्यवस्था श्रीचंद्रावतीपतिराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन
 तथा तत्पुत्र राज० श्रीकान्हडदेवप्रभुसकुमारैः समस्तराजलोकैस्त(*)या श्रीचंद्रावतीयस्थानपति-
 मद्भारकप्रभृतिविशाल तथा गूगलीब्राह्मणसमस्तमहाजनगोष्टि(ष्ठि)कैश्च तथा अर्बुदाचलोपरि श्री-
 अचलेश्वर श्रीवसिष्ठ तथा संनिहितग्रामदेउलवाडाग्राम-श्रीश्रीमातामहबुग्राम-आबुपग्राम-
 ओरामाग्राम-उत्तरछग्राम-सिहरग्राम-सालग्राम-हेठउंजोग्राम-आखीग्राम-धीघांघलेश्वरदे-
 वीयकोटडीप्रभृतिद्वादशग्रामेषु सतिष्ठ(ष्ठ)मानस्थानपतितपोधन-गूगलीब्राह्मण-राठियप्रभृतिसमस्तलोकै-
 स्तथा मालि-भाडाप्रभृतिग्रामेषु सतिष्ठ(ष्ठ)मानश्रीप्रतीहा(*)रवंशीयसर्वराजपुत्रैश्च आत्मीयात्मीय-
 स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मंडपे सनुपविश्योपविश्य महं श्रीतेजःपालपार्थात् स्वीयस्वीयप्रमो-
 दपूर्वकं श्रीलूणसीहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोऽपि रक्षामारः स्वीकृतः । तदेतदा(*)-
 स्मीयवचनं प्रमाणीकुर्वमि(द्धि)रैतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचंद्रार्कं
 यावत् परिरक्षणीयम् ॥ यतः—

किमिह कपाल-कर्मंडलु-वल्कल-सितरक्तपट-जटापटलैः ।

व्रतमिदमुज्ज्वलमुन्नतमनसां प्रतिपन्ननिर्घृणं ॥ १ ॥ छ ॥ (*)

तथा महाराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन अस्यां श्रीलूणसिंहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवाय पूजां-
 गमोगार्थं बाहिरह्वां डवाणीग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीसोमसिंहदेवान्मर्थनया प्रमारा-
 न्वयिमिराचंद्रार्कं यावत् प्रतिपाल्यः ॥ २ ॥ (*)

सिद्धक्षेत्रमिति प्रसिद्धमहिमा श्रीपुंडरीको गिरिः,

श्रीमान् रंजतकोऽपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्तेरिति ।

गूणं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्रीअर्बुदस्तत्पम्,

मेजाते कथमन्यथा सममिमं श्रीआदि-नेमी स्वयम् ?

॥ २ ॥

संसारसर्वस्वमिहैव मुक्तिसर्वस्वमप्यत्र जिनेशदृष्टं ।

विलोभ्यमाने भवने तवास्मिन्, पूर्वं परं च त्वयि दृष्टिपांशे

॥ ३ ॥

श्रीकृष्णर्पायश्रीनयचंद्रसुरेरिमे ॥

सं० सरवणपुत्र सं० सिंहराज साधू साजण सं० सहसा-साहदेपुत्री 'सुनयव' प्रणमति
॥ शुभम् ॥

(६६)

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ सं० १२९६ वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीशत्रुंजयम-

(२) हातीर्थे महामात्यश्रीतेजपालेन कारितमंदीसरवर-

(३) पक्षिमण्डपे श्रीआदिनाथविं देवकुलिका दंडक-

(४) लसादिसहिता । तथा इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालका-

(५) रितश्रीसत्यपुरीयश्रीमहावीरविं खचकं च । इहि(है)व

(६) तीर्थे शैलमयविं द्वितीयदेवकुलिकामध्ये खचक-

(७) द्वय श्रीऋषभादिचतुर्विंशतिका च । तथा गूढमण्डपपूर्वद्वा-

(८) रमध्ये खचकं मूर्तिपुग्मं तदुपरे श्रीआदिनाथविं श्री-

(९) उज्ज(ज)यंते श्रीनेमिनाथपादुकामंडपे श्रीनेमिनाथवि-

(१०) वं खचकं च । इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालकारितश्री-

(११) आदिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे श्रीनेमिनाथविं खचकं च ।

(१२) श्रीअर्बुदाचले श्रीनेमिनाथचैत्यजगत्यां देवकुलि-

(१३) काद्वयं पदविंसहितानि ॥ श्रीजाबालिपुरे श्रीपा-

(१४) र्श्वनाथचैत्यजगत्यां श्रीआदिनाथविं देवकुलिका

(१५) च । श्रीतारणगढे श्रीअजितनाथगूढमंडपे श्रीआ-

(१६) दिनाथविं खचकं च ॥ श्रीअणहिल्लपुरे हथीयावापी-

(१७) प्रत्यासन्न श्रीसुविधिनाथविं तच्चैत्यजीर्णोद्वारे च ॥

(१८) वीजापुरे देवकुलिकाद्वयं श्रीनेमिनाथविं श्रीपा-

(१९) र्श्वनाथविं च । श्रीमूलप्रासादे कवलीखचकद्वये

(२०) श्रीआदिनाथ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिविं च ॥ लाटाप-

(२१) ल्यां श्रीकुमरविहारजीर्णोद्वारे श्रीपार्श्वनाथस्याग्र-

(२२) त(तो) मंडपे श्रीपार्श्वनाथविं खचकं च । श्रीप्रह्लादनपु-

(२३) रे पालहविहारे श्रीचंद्रप्रभस्यामिमंडपे खचक-

(२४) द्वयं च । इहैव जगत्यां श्रीनेमिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे

(२५) श्रीमहावीरविं च । एतत् सर्वं कारितमस्ति ॥ श्रीनाग-

(२६) पुरीयवरदुडीया साहु नेमडसुत सा० राहड ।

(२७) सा० जयदेव भा० सा० सहदेव सपुत्र संघ० सा०

(२८) खेटा भा० गोसल सा० जयदेव सुत सा० वीरदे-

- (२९) व देवकुमार हाल्य सा० राहड सुत सा० जिणचंद्र
 (३०) घणेश्वर अमयकुमार लघुआवृ सा० लाहडेन
 (३१) निजकुटुंबसमुदायेन इदं कारितं । प्रतिष्ठितं
 (३२) श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमदाचार्यविजयसेनसूरिभिः ॥
 (३३) श्रीजावालिपुरे श्रीसौवर्णगिरौ श्रीपार्श्वनाथजगत्यां
 (३४) अष्टापदमध्ये सप्तकद्वयं च ॥ लाटापर्यां श्रीकुमारवि-
 (३५) हारजगत्यां श्रीअजितस्वामिविवं देवकुलि-
 (३६) का दंड-कलससहिता । इहैव चैत्ये जि-
 (३७) नयुगलं श्रीशान्तिनाथ श्रीअजितस्वामि ।
 (३८) एतत् सर्वं कारावि(पि)तं ।
 (३९) श्रीअणहिल्लपुरप्रत्यासन्न चारोपे
 (४०) श्रीआदिनाथविंशं प्रासादं गूढमंड-
 (४१) पं छ चउकिया सहितं सा० राहड-
 (४२) सुत सा० जिणचंद्र भार्या सा० चाहि-
 (४३) णिकुशिसंगृहेन संघ सा० दे-
 (४४) वचंद्रेण पिता माता आत्मश्रेयो-
 (४५) र्थं कारापितं ॥ छ ॥

(६७)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरासुतश्रीमालदेव महं० (*) श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्यायाः महं० श्रीसोखुकायाः पुण्यार्थं श्रीसुपार्श्वजिनालंकृता देव-
 कुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६८)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआमरासुतश्री(*)मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्याललतादेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(६९)

दं० ॥ संवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं०
 श्रीवस्तुपालसुत महं० श्रीजयतसीहश्रेयोऽर्थं (*) महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

दं० [॥] श्रीसुवधिनाथस्य कल्या०

फाल्गुन वदि ९ च्यवन

(७०)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं०] श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्याजयतलदेवि [*] श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७१)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं०] श्रीआसरांगज महं० श्रीतेजपालेन श्रीजयतसीहमार्यामहवदेवि(*)श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(७२)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वयसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन महं० श्रीजयतसी(*)हमार्या महं० श्रीरूपादेवि-श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७३)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताश्रीमहजलभेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन दे(*)कुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७४)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताबाईश्रीसदमलभेयो(*)श्रेयो महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७५)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुंनमीदीपमा(*)श्रेयो महं० श्रीआल्लङ्ग-देविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७६)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्या महं० श्रीपातृश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलि(*)का कारिता ॥

(७७)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्या महं० श्रीलीलश्रेयोऽर्थं महं० श्री(*)-तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(७८)

१०० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप, श्रीचंडप्रसाद महं०, श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुत महं०, श्रीपेयडश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

(७९)

१०१ ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुनसीहश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

(८०)

१०२ ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवश्रेयोऽर्थं तत्सोदरलघुभ्रातृ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(८१)

१०३ ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुताबाईश्रीवलालदेविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(८२)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० लूणसीहभार्यारयणादेविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥

(८३)

१०४ ॥ संवत् १२९० वर्षे महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० श्रीलूणसीहभार्या महं० श्रीलपमादेविश्रेयोऽर्थं महं० तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

(८४)

१०५ ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवभ्रातृ महं० श्री(*)-वस्तपालपोरुज महं० श्रीतेजपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेविश्रेयोऽर्थं देवश्रीमुनि-सुप्रतदेवस्य देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(९०)

१०६ ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटजातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरावसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन स्वसुतावलदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

(९१)

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम श्रीआसरा-
न्वयसमुद्भूत महं० श्रीतेजपालेन स्वसुतश्रीलूणसीहसुतामउरदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

(९४)

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-
तीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ०
चंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं०
श्रीमालदेवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिन्या चार्द्धलहणदेव्याः
श्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थकरसीमंघरस्वामिप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता प्रतिष्ठिता श्रीनागेंद्र-
गच्छे श्रीविजयसेनसूरिमिः ॥ छ ॥

(९५)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमालदेव-
संधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिन्याचार्द्धलहणदेव्योऽर्थं विहरमानतीर्थकरश्री-
युगंघरस्वामिजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

(९६)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-
स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप
ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्री-
मालदेवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या[ः] साउदेव्या[वी] श्रेयोऽर्थं
विहरमानतीर्थकरश्रीबाहुजिनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

(९७)

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-
कारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमाल-
देवसंधपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या चार्द्धणदेवीश्रेयसे विहरमानतीर्थ-
करश्री[सु]बाहुविनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(९८)

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-
महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकाख्यश्रीनेमिनाथदेव(*)चैत्यजगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय

ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमारदेव्याः सुत महं० श्रीमालदेव । सधप(५)ति महं० । श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वार्दिसोहगायाः श्रेयोऽर्थं शाश्वतजिनरूपभदेवालंकृता देवकुलिका कारि[ता] ॥

(८९९)

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमस(स)वत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अचेह श्रीअर्जुदाचल-महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां (*) ॥ श्रीप्राग्वाट-ज्ञावी(ती)य ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमार-देव्योः सुत महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० (*) श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वार्दिवयलुकायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवर्धमानाभिधशाश्वतजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ शुभं भवतु ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(१०२)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ७ अचेह श्रीअर्जुदाचलमहातीर्थे स्वय-कारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां महं० श्रीतेजःपालेन (*) मातुलसुत मामा राजपालभणितेन स्वमातुलस्य महं० श्रीपूजपालस्य तथा भार्या महं० श्रीपूजदेव्याश्च श्रेयोऽर्थं अस्या देवकुलिकायां श्रीचंद्राननदेवप्रतिमा कारिता ॥

(१०३)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ चैत्र वदि ७ श्रीअर्जुदाचलमहातीर्थे प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराजसुत(*) महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्याः पञ्चलायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवारिसेणदेवा-लंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(११०)

संवत् १२९७ वर्षे वैशाख वदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्री.....रा सुतायाः ठकुराजीसंतोपाकुक्षिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृडादेव्याः श्रेयोऽर्थं एतत् त्रिगदेवकुलिकासत्तक श्रीश्रंतिनाथविचित्र कारितं ॥ छ ॥

(१११)

संवत् १२९७ वैशाख सुदि १४ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये

महं० श्रीआसराजसुत महं० श्रीतेजःपालेन श्रीमत्पत्तनवास्तव्यमोदनातीय ठ० झाल्हाण सुत
ठ० आसासुताया ठकुराजीसंतोषाकुशिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृदा-
देव्याः श्रेयो.....

(१३१)

- (प्रथमहस्ती) [महं० श्रीचंडप ।]
 (द्वितीयहस्ती) [महं० श्रीचंडप्रसाद ।]
 (तृतीयहस्ती) महं० श्रीसोम ।
 (चतुर्थहस्ती) महं० श्रीआसराज ।
 (पंचमहस्ती) [महं० श्रीलूणिग ।]
 (षष्ठहस्ती) [महं० श्रीमल्लदेव ।]
 (सप्तमहस्ती) [महं० श्रीवस्तुपाल ।]
 (अष्टमहस्ती) [महं० श्रीतेजःपाल ।]
 (नवमहस्ती) [महं० श्रीजैत्रसिंह ।]
 (दशमहस्ती) [महं० श्रीलावण्यसिंह ।]

- (१ हस्तिष्टम्भमार्गे) { १ आचार्यश्रीउदयसेन । २ आचार्यश्रीविजयसेन ।
 { ३ महं० श्रीचंडप । ४ महं० श्रीचापलदेवी ।
 (२ " ") १ महं० श्रीचंडप्रसाद । २ महं० श्रीवामलदेवी ।
 (३ " ") १ महं० श्रीसोम । २ महं० श्रीसीतादेवी ।
 (४ " ") १ महं० श्रीआसराज । २ महं० श्रीकुमारदेवी ।
 (५ " ") १ महं० श्रीलूणिगदेव । २ महं० श्रीलूणादेवी ।
 (६ " ") १ महं० श्रीमालदेव { २ महं० श्रीलीलादेवी ।
 { ३ महं० श्रीप्रतापदेवी ।
 (७ " ") १ महं० श्रीवस्तुपाल { २ महं० श्रीललितादेवी ।
 { ३ महं० श्रीचैत्रलदेवी ।
 (८ " ") १ महं० श्रीतेजःपाल । महं० श्रीअनुपमदेवी ।
 (९ " ") १ महं० श्रीजयवर्द्ध । महं० श्रीजयतरुदेवी ।

(१० " ")

॥ { १ महं० श्रीलावण्यसिंह । २ महं० श्रीरूपादेवी ।
 { १ महं० श्रीसुहृदसीह । २ महं० श्रीसुहृदादेवी ।
 { ३ महं० श्री सलखणदेवी । . . . }

(२४२)

सं० १२७८ वर्षे फाल्गुण वदि ११ गुरौ श्रीमत्पचनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्री-
 चंडेशानुज ठ० मुमाकीयानुज(१) ठ० श्रीआसराजतनुज महं० श्रीमालदेवश्रेयसे सहोदर
 महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीमहिनाथदेवखचकं कारितमिदमिति । मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥



(३)

श्रीतारणदुर्गस्थः शिलालेखः ।

(५४३)

द० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८५ वर्षे फाल्गुण शुदि २ रवौ । श्रीमदणहिलपुरवास्तव्य
 प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-
 राजनन्दनेन ठ० कु(१)मारदेवीकुक्षितभूतेन ठ० श्रीलूणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजेन महं०
 श्रीतेजःपालाम्रजन्मना महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मनः पुण्याभिवृद्धये इह श्रीतारंगकपर्वते
 श्रीअजितस्यामिदेवचैत्ये श्रीआदिनाथदेवजिनविगलंकृतं स्वतकमिदं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री-
 नागेन्द्रगच्छे मद्यारकश्रीविजयसेनसूरिभिः ॥



(४)

श्रीशत्रुंजयपद्या(पाज)शिलालेखः ।



- (१) [श्रीमदणहिलपचन] वास्तव्य प्राग्वाटान्वय-
 (२) [प्रसूत ठ० श्रीचंडतनुज] ठ० श्रीचंडप्रसादां-
 (३) [गज ठ० श्रीमोमपुत्र] ठ० श्रीआशाराजन्-

- (४) [दनेन ठ० श्रीदुर्गिण ठ०] श्रीमालदेव संपप-
 (५) [ति महं० श्रीवस्तुपालानु] न महं० श्रीतेजःपाले-
 (६) [न श्रीशुक्लंजयतीर्थे] संचारपात्रा कारिता ॥

(५)

अणाहिलपत्तनान्तर्गताः शिलालेखाः ।

(१)

॥ सं० १२८४ वर्षे ॥

विश्वानंदकरः सदा गुरुचिर्जीमूतलीलां दधौ,

सोमश्चरुपवित्रचित्रविकसद्देवशर्मोन्नतिः ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिबुद्धे यः स्वातिवृष्टिचित्रै-

मुक्तैर्माँक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनिमंडनम्

॥ १ ॥

युक्तं.....सोमसचिवः कुंदेदुशुभ्रैर्गुणै-

रिदः सिद्धनृपं विमुच्य मुकृती चक्रे न कंचिद्विमुम् ।

रंगदुर्गमदप्रदच्छदमदः श्रीसद्य पद्मं किमु,

सोहासाय विहाय भास्करमहस्तेजोन्तरं बांछति

॥ २ ॥

पर्यणैषीदसौ सीतामविधामित्रसंगतः ।

अमृत्रितमहाधर्मलापवो रायवोऽपरः

॥ ३ ॥

(२)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनयाःस्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीचंडप्रसाद सुत ठ० श्रीसीमः ॥

(३)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पचःनवास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीपूजसीह सुत ठ० आल्हः*णदेवी
 दुर्गिणः ठ० पेशदः ॥

(४)

सं० १३५२ वर्षे कार्तिक सु० ११ गुरु सं० पेशद सुत सं महादेन परपरसमेत
 सुरति जगरित ॥

(६)

अर्बुदाचलगतौ अवशिष्टौ शिलालेखौ

(१-२५६)

दे० ॥ सं० १२८७ वर्षे चैत्र वदि ३ शुके महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाः ॥
य [ः] पूर्वजपुण्याय अस्मिन्नर्बुदगिरौ श्री

(२-२६०)

नृपविक्रमसंवत् १२८७ वर्षे फाल्गुण सु(व)दि ३ सोमे(रवौ) अयेह श्रीअर्बुदाचले श्री-
मदनहिलपुरवास्त० प्राग्वाटशतीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्री-
आसरासुत महं० मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज भ्रातृ महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभायां
महं० श्रीअनुपमदेवीकुक्षिसमूत सुत महं० श्रीलूणसौहृदपुण्यार्थं अस्यां श्रीलूणवमहिकायां श्रीनेमि-
नाथमहातीर्थे कारितं ॥ छ ॥ छ ॥

(श्रीजयंतविजयजीसंगृहीत श्रीअर्बुद-प्राचीन-जैन-लेखसंदोह)

(७)

स्तम्भतीर्थीय-श्रीआदीश्वरमन्दिरगतः शिलालेखः

(१) ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

धीराः सत्त्वमुगन्ति यन्निमुवने.....नेति श्रुतं,

साहित्योपनिष[नि] (२) पणमनसो यत्प्रातिभं मन्वते ।

सार्धजं च यदामनेति पुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं,

ज्योतिर्द्योतितवि(२)दृष्यं वितनुतां मुक्तिं च मुक्तिं च वः

॥ १ ॥

श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्रास्रप्रतिष्ठोऽजनि,

प्राग्वाटाद्वयर(४)म्यवंशविलसन्नुत्कामणिश्चंडपः ।

यः संपाप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोऽहम-

दिक्कलंकप(५)कीर्तिशुभ्रलहरिः श्रीमंतमंतर्जिनं

॥ २ ॥

अजनि रजनिजानिज्योतिर्योतिर्कीर्तिस्त्रिजगति तनुज(६)न्मा तस्य चंडप्रसादः ।

नममणिसमश[ह्रैः सुंद] रः पाणिपद्मः, कमलन न कृतार्थे अत्य कल्पद्रुकल्पः(७) ॥ ३ ॥

पत्नी तस्याजायतात्यायताक्षी, मूर्तेर श्रीः [पुण्य] पात्रं जयश्रीः [१]

अजे ताम्याममिमः धरसंज्ञः, पुत्रः श्री(८)मान् सोमनागा द्वितीयः

॥ ४ ॥

निर्माप्याऽऽदिजिनेन्द्रविबमसम शेषत्रयोविंशति
 श्रीजैनप्रतिमाविराजि(९)तमसावभ्यचितु वेदमनि [१]
 पूज्यश्रीहरिमद्रसुरिसुगुरो [पाश्चात् ५]तिष्ठाप्य च,
 स्वस्याऽऽत्मीयकुलस्य चा [क्ष](१०) यमय श्रेयोनिधान व्यधात् ॥ ५ ॥
 असाशाशाराजं तनुनमपर सोमसचिव,
 प्रियाया सीताया शुचिच(११)रितवत्यामजनयत्
 [यशोभि] भिर्जगति विशदे क्षीरजलधौ,
 निवासैकपीतिमुदममजदि(१२)दु प्रतिपद ॥ ६ ॥
 श्रीरैवते निर्मितसप्तयात्र, [केनोपमानस्तिह] सोऽश्वराजः ।
 कलकशकामुपमान(१३)मेन, पुष्पात्यहो यस्य यश शशाके ॥ ७ ॥
 अनुजोऽप्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसा केली ।
 (१४)आशाराचनम्याजनि, जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥
 तस्यामूचनयास्तया(य) प्रथमक श्रीमल्लदेवोऽपर
 श्व(१५)चच्चडमरीचिमडलमहा श्रीमस्तुपालस्तत ।
 तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्य स्फुर-
 चा(१६)तुर्य समजायतायतमति पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥
 श्रीमल्लदेवपौत्रो, लीलुप्ततपुण्यसिंहतनुज(१७)मा ।
 आलङ्घनदव्या जात, पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यात ॥ १० ॥
 श्रीवस्तुपालसचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ(१८)हलक्ष्मी ।
 विशदतरचिचवृत्ति, श्रीललितदेविसजाऽस्ति ॥ ११ ॥
 सीताशुप्रतिवीरपीवरयश विश्वेऽत्र (१९)पुत्रस्तयो
 विख्यात प्रसरद्गुणो विन[यते श्रीजैत्रसिं]हः कृती ।
 लक्ष्मीर्यत्करपक्वप्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन सा,
 (२०)प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरह स्नानेन दानामसा ॥ १२ ॥
 अनुपमदेव्या पत्न्या, श्रीतेज.पालसचिवतिलकस्य [१]
 (२१)लावण्यसिंहनामा, धाम्नो धामाऽयमात्मजो जजे ॥ १३ ॥
 नाभूवन् कति नाम सति कति ते नो वा भविष्यन्ति के [१]
 वे(२२)तु षापि न कोऽपि सचपुरुष श्रीरस्तुपालोपम ।
 पुण्याद्य प्रहरश्चहनिशमहो सर्वाभिसारोद्धरो,
 येनाय वि(२३)जित कलिर्विदधता तीर्थेक्षयागोत्सव ॥ १४ ॥

लक्ष्मीं धर्मागयोगेन, स्थेयसीं तेन तन्वता [1]

पौषघालयमा.....(२४)निर्ममेन विनिर्ममे

॥ १५ ॥

श्रीनागदेवमुनीन्द्रगच्छतरिर्जने महेंद्रप्रभोः, पट्टे पूर्वमपूर्ववाङ्मयनि(२५)धिः श्रीशान्तिस्तुतिः [1]

आनन्दामरचन्द्रसुरियुगलं तस्मादमृतत्पदे, पूज्यश्रीहरिमद्रसुरिगुरवोऽम्बुन मु(२६)नो मृगणं ॥१६॥

तत्पदे विजयसेनसरयस्ते जयंति मुनैकमृगणं [1]

ये तपोज्वलनभूविमृतिभिस्तेजयं(२७) ति निजक्रीर्तिदर्पणं

॥ १७ ॥

स्वकुलगुरु....., पौषघशालामिमामाल्यैः । पित्रोः पवित्रहृदयः, पुण्यार्थं(२८) कल्पयामास ॥१८॥

वाग्देवतावदनवारिजमित्रसामद्वैराज्यदानकलितोरुयशःपताकां [1]

चक्रे गुरोर्विज(२९)यसेनमुनीश्वरस्य, शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रमसुरिरेतां ॥ १९ ॥

सं० १२८१ वर्षे महं० श्रीवस्तुपालेन कारितपौषघ(३०)शालाख्यधर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि

राजदेवमुत श्रे० मयधर । भा० सोमा उ भा० घारा । व्यव० वेला उ वीकल । श्रे० पूना

(३१)मुत बीजा वेडी० उदयपाल उ आसपाल मा० आल्हण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमर्गाकृतं ।

एमिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य(३२).....स्तंभतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाज.....छिन्वि.

मिह च ठ० सू०.....[जैत्र] मिह ध्रुव.....कुमरसिंहनोत्कीर्णा ॥

(एनाल्स ऑफ धी भाण्डारकर ओरिफण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना
वॉ० ९, एप्र १७७ लेख १)

(८)

गणेशरघामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १२९१ वर्षे वैशाख शुदि १४ गुरो श्रीमदणहिलपुराणस्य
प्राग्वाट न० (४०) श्रीचंडपालज [चं](२)डप्रमादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीशान्तागज-
तनुजन्मा ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसमुद्भूत ठ० श्रीलूणि[ग](३) महं० श्रीमालदेव [कुमा]मुद्भूत
महं० श्रीतेजःपालाभज महामात्यश्रीवस्तुपालात्मज महं० श्रीजयतमिहें [स्वमं](४)तीर्थेऽत्र
सं० ७१ वर्षपूर्णे व्यापृष्वति महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाभ्यां समस्तमहादेव ।
(५)नया अ[न्य]समस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनयधर्मस्थानानि जार्जोदाराथ कारिताः ॥ २४ ॥
सचिवेश्वरश्रीवस्तु(६)पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलिमामे प्रसा श्रीगाणेश्वरदेवदेवताः पुण-
श्चौराणं तः प्रवोली द्वारा.....(७)त प्राकारश्च कारितः ॥ ० ॥
गांभीर्ये जलधिर्बलिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः, सौंदर्ये पुरुषप्रते रघुपतिर्वाचस्पतिर्वाचस्पतिः ।
शैलेऽस्मिन्नुपमानतानुपगताः मर्वेण नः संप्रति, प्राप्ता नेस्तुपमेयनां तदधिकश्रीवस्तुपादे ॥ ७१ ॥

.....(९)विद्रुगमतयस्तुल्यौ कौटिल्य-वस्तुपालौ ।

.....कुर्वते न, कस्मात् क्षारयोः समतां ॥ २ ॥

वदनं वस्तुपालस्य, (१०) कमलं को न मन्यते । यत्सूर्यालोकेन स्मे[रं], भवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपाल संप्रति, परमं हतिकर्मक (१) [१]

.....वा(११) भवता निर्गुतिरधिजनेन संप्रतिता ॥ ४ ॥

तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय.....

.....(१२).....कर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति ।

राधेयेन विना विना च शिविना य.....(१३).....स्मयं

.....स्व.....गच्छन्ति संतः सदा ॥ ५ ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरि[य].....

(एनास्स ऑफ धी भांडारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ पृष्ठ १८० लेख २)

(९)

नगरग्रामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ संवत् १२९२ वर्षे आपाद शुदि ७ रवौ श्रीनारदमुनिविनिवेशिते श्रीनगरवरमहा-
स्थाने सं० ९०३ वर्षे अ(२)तिवर्षाकालवसादतिपुराणतया च आकस्मिकश्रीजयादित्यदेवीयमहा-
प्रासादपत्तनविनष्टायां श्रीरत्नादेवीमूर्ती(३) पश्चात् श्रीमत्पत्तनवास्तव्यप्राग्वाट ठ० श्रीचंडपात्मज
ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशाराजनंद(४)नेन ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंगृहेन
महामात्यश्रीवस्तुपालेन स्वभार्यायाः ठ० कान्हडपुत्र्याः ठ० राणुकुक्षिभवा(५)या महं० श्रीललिता-
देव्याः पुण्यार्थमिहैव श्रीजयादित्यदेवपत्न्याः श्रीरत्नादेवीमूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

(एनास्स ऑफ धी भाण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ पृष्ठ १८२ लेख ३)

(६)

वस्तुपालतीर्थयात्रालेखः

सं० १२४९ वर्षे संघपति स्वपितृ ठ० श्रीआश्वाराजेन समं महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीत्रिम-
लाद्रौ रैषते च यात्रा कृता । सं० ५० वर्षे तेनैव समं स्थानद्वये यात्रा कृता । सं० ७७ वर्षे स्वयं
संघपतिना मूत्वा स(स्व)परिवारयुतं ९० वर्षे सं० ९१ वर्षे सं० ९२ वर्षे सं० ९३ वर्षे महाविस्तरेण
स्थानद्वये यात्रा कृता । श्रीशत्रुंजये अमून्येव पंच वर्षाणि तेन सहितेन सं० ८३ वर्षे सं० ८४ सं०
८५ सं० ८६ सं० ८७ सं० ८८ सप्त यात्राः सपरिवारेण तेन कृतेश्रीनेमिनाथाम्बिका-
प्रसादाद्या.....भूता भविष्यति ॥

। । । ।

॥ ॥

(वॉट्सन 'म्युझियम-राजकोट)

॥ ॥

। । । ।

। ।

। । । ।

॥ ।

। ।

। ॥

।

।

। ।

।



दशमं परिशिष्टम्

आचार्य श्रीउदयप्रभधिरचिताया उपदेशमालाकर्णिकाख्यः
विशेषवृत्तेः आद्यन्तगते ।

मङ्गल-प्रशस्ती ।

आदिः—

अहंस्तनोतु सुवनाद्भुतकल्पवृक्षः, श्रेयःफलं निविडबोधसुमप्रसूतम् । ॥ १ ॥
यस्याङ्गिमूलमभितः पतितप्रसूनमायाः सुरा-ऽसुर-नराधिपसम्पदोऽपि
देवः स वः शतमखप्रमुखामरौघकृत्प्रथः प्रथमतीर्थपतिः पुनातु । ॥ २ ॥
सुक्तिक्रमो न..... ॥ २ ॥

चिन्तातीतफलप्रदः स दिशतु श्रेयो युगादिप्रभुर्भोजुर्जन्मनि यस्य कल्पतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।
नेत्थं चेत् कथमन्यथा वसुमतीमस्मिन्नलङ्घुर्वति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जग्मुर्जगत्त्रुपात् ॥ ३ ॥
तुङ्गेमभीममसितीव्रतरेण कर्मजातं व्रतेन विनिपात्य भवाटवीपु ।
मुक्तावलिश्रियमशिश्रियदात्म..... ॥ ४ ॥

लीलासञ्चरणं च नूपुररणत्कारश्रियं च स्वयं, बोद्धुं साधु निषेव्यते खगकुलोर्वसेन हंसेन या ।
किञ्जल्कप्रसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥ ५ ॥
जौयाद् विजयसेनस्य, प्रभोः प्रातिमदर्पणः । प्रतिविम्बितमात्मानं, यत्र पश्यति भारती ॥ ६ ॥
संपस्याद्भुतपुण्यपण्यविपणौ सा मा ॥ ७ ॥

.....पदेशपद्धतिरसौ सा प्रातराशायते ॥ ७ ॥
गाथास्ताः खलु धर्मेदासगणिनः सज्जातरूपश्रियः, किंचैव स्फुरदर्थरत्नानिकरः सिद्धयिगैवार्पितः ।
तेनैतामतिवृत्तसंस्कृतमयीमातन्वतः कर्णिकां, वृत्ति मेऽत्र सुवर्णकारपदवीसीमाश्रमश्चिन्त्यताम् ॥ ८ ॥
यतः—

.....यथाविधिस्तवकघटनादुज्जृम्भते यथांसि तु शिल्पिनः ॥ ९ ॥
अन्तगता प्रशस्तिः—

कमठघनमृताम्भोराशिसंवासिसर्पाधिपतिकलितमूर्तिनीलनालीककान्तिः ।
सितरुचिरविराजल्लोचनः केवलश्रीपरिचयचतुरात्मा श्रीजिनो वः श्रियेऽस्तु ॥ १ ॥

१ पद्यमिदं मुकृतकीर्तिप्रशस्त्या प्रथमादरूपेणापि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं मुकृतकीर्तिकलोक्त्या सप्तमपद-
तयाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं धर्मान्युदयमहाकाव्ये प्रथमसर्गे चतुर्दशपद्येनापि वर्तते ॥

श्रीवर्धमानः शमिनां मनांसि, जिनो विनोतु त्रिपदी यदीया ।

व्याप्नोति विश्वं बलिघात(ति)कर्मजयोदिता विश्वमनधरश्रीः ॥ २ ॥

श्रीवीरशासनमहामहिमागरिष्ठः, श्रीमद्रघातुविहिताचरणप्रतिष्ठः ।

काले कलावपि विलुप्तघनाघसङ्घः, श्रीमानयं विजयते यत्तिमूलसङ्घः ॥ ३ ॥

श्रीनागेन्द्रकुले मुनीन्द्रसवितुः श्रीमन्महेन्द्रप्रभोः, पट्टे पारगतागमोपनिषदां पारङ्गमग्रामणीः ।

देवः संयमदैवतं निरवधिस्त्रिविधवागीश्वरः, सज्जज्ञे कलिकल्मषैरकलुषः श्रीशान्तिसूरिगुरुः ॥ ४ ॥

शक्तिः काऽपि न कापिलस्य न नये नैयायिको नायकश्चार्वाकः परिपाकमुज्झितमतिचौद्धश्च नौद्धत्यमाक् ।

स्याद्वैशेषिकशेमुषी च विमुखी वादाय वेदान्तिके, दान्तिः केवलमस्य वक्तुरयते सीमां न मीमांसकः ॥ ५ ॥

तत्पट्टे प्रथमः शमिप्रभुरमृदानन्दसूरिः परः, सज्जज्ञेऽमरचन्द्रसूरिरखिलानूचानचूडामणिः ।

शश्वद् यस्य सरस्वतीप्रसरणे सिद्धेशितुः संसदि, प्राज्ञैश्चेतसि वेतसीतरुरसावाचार्यकं कार्यते ॥ ६ ॥

सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मभूस्तत्पदे,

पूज्यः श्रीहरिमद्रसूरिरभवचारित्रिणामग्रणीः ।

आन्त्वा शून्यमनाश्रयैरतिचिराद् यस्मिन्नवस्थानतः,

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ७ ॥

गुरुः श्रीहरिमद्रोऽयं, लेभेऽधिकवयःस्थितिम् । मोहद्रोहाय चारित्रनुपनासीरवीरताम् ॥ ८ ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

तद्रवी वृषमसूत नूतना, कामधेनुरिव सर्वकामदम् ॥ ९ ॥

गर्वात् पूर्वमनादैरैवहितैः पश्चात् ततो विस्मितैः, प्रस्विन्नैरनुविष्टृतात्मभिरथो वादेऽनुवादे क्षणात् ।

मायैर्मानिमीनिषाणां परिणता पुंस्त्वेन वागेप इत्याक्षिप्तैरथ सेव्यतेऽथ सहसा यः सादरं वादिभिः ॥ १० ॥

यत्सोपदेशममृतोपमितं निपीय, श्रीवस्तुपालसचिवेश्वर-तेजपालौ ।

सङ्घाधिपत्यमसमं जिनतीर्थतेजःसंवर्धनाजितशतकतु चक्रतुस्तौ ॥ ११ ॥

श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं नमस्यत । यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ? ॥ १२ ॥

शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्यसौहित्यवा-

नुयत्तर्कवितर्ककर्मशमनाः सिद्धान्तगुद्धातुरः ।

श्रीधर्माभ्युदये कविः प्रविलसदुर्वादिगोत्रे पवि-

स्तामेतामुदयप्रभास्यगणभृद् शृषि व्यपात् कर्णिकाम् ॥ १३ ॥

तस्याऽऽज्ञया विजयसेनमुनीश्वरस्य, शिष्येण सेयमुदयप्रभदेवनाम्ना ।

योग्या विशेषविदुषामुपदेशमालावृत्तिः कयामथनतोऽभिनवा वितेने ॥ १४ ॥

प्रथमादर्शे प्रथमानमानसो देवबोधविवुध इमाम् ।

स्थपतिरिव स्थापयिता, गुरुषु नतोऽननुत साहाय्यम् ॥ १५ ॥

चान्दे कुले कलशतः किल सूरिदेवानन्दाप्रशिष्यकनकप्रमधुरिनाम्नः ।

प्रद्युम्नधुरिरुदितः कवितासमुद्रमुष्टिन्धयोऽम्बुवदशोधयदेप वृत्तिम् ॥ १६ ॥

उत्तेकितोत्सूत्रनिरूपणायैषाऽऽशातना स्यात् तनुकाऽपि काचित् ।

मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमत्र साक्षी, श्रीसङ्गमद्वारक एव तीर्थम् ॥ १७ ॥

एकैकेन विमोहशक्यचरणांश्छित्त्वा कषायानिमान्,

दीप्ते भानु-कृशानुधामनि मनश्चैकेन हुत्वाऽऽत्मनः ।

मन्त्रस्याष्टशतैरितीह जपितैस्तैः पञ्चभिः सिद्धये,

गाथाभिर्गुरुगुम्फिता विजयते जप्योपदेशावलिः

॥ १८ ॥

कल्याणिकरणादितो विवरणाद् विज्ञाय विज्ञात्मनामाप्तायादुपदेशपद्धतिमिमांसेवमानो मुदा ।

लोकाग्रोपरिवर्तिनीमभिमुखी कुर्वीत वीतान्यधीवृत्तिर्निवृत्तिदेवतां शिवपुरीसाम्राज्यकामः कृती ॥ १९ ॥

तत्त्वोदित्वरसप्तगुम्फिकमहाप्रासादराजाङ्गणं, यावद् भाति जगद्गुरोर्मगवतः तीर्थेशितुः शासनम् ।

तावच्छावक-साधुधर्मविजयस्तम्भद्वयालम्बिनी, वृत्तिर्वन्दनमालिका विजयतां तत्रोपदेशसजः ॥ २० ॥

सेयं पुरे धवलके नृपवीरवीरमन्त्रीशपुण्यवसतौ वसतौ वसद्भिः ।

वपे ग्रह-ग्रह-रवौ कुंतर्भाकंसंख्यैः, श्लोकैर्विशेषविवृतिर्विहिताऽद्भुतश्रीः

॥ २१ ॥

इत्याचार्यश्रीउदयप्रमदेवसङ्घटितायामुपदेशमालायाः कर्णिकायां विशेषवृत्तौ तृतीयः परिवेशः

सम्पूर्णः ॥ अं० ३७१४ । एतावता च सम्पूर्णा उपदेशमालायाः कर्णिकाख्या विशेषवृत्तिरिति ।

अंथ १२२७४ । छ । छ ॥

एकादशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरपुरोहितश्रीसामेश्वरदेवविरचितस्य सुरधोत्सवमहाकाव्यस्य
महामात्यश्रीवस्तुपालवंशवर्णनादिप्रतिषद्ः
प्रशस्तिरूपः पञ्चदशः सर्गः ।

अस्ति प्रशस्ताचरणप्रधानं, स्थानं द्विजानां नैगरामिधानम् ।
कर्तुं न शक्नोति कदाऽपि यस्य, त्रेतापवित्रस्य कलिः कलङ्कम् ॥ १ ॥
सत्तीर्थस्य सुराश्रितेन जगता यस्योपमा स्यात् कथं,
स्वाध्यायैकनिघेर्गतश्चैतद्वृत्तेनोर्वीतलेनापि वा ? ।
यत्सौधेषु विशुद्धिर्वर्जितवपुर्बालोऽपि नाऽऽलोक्यते,
वन्दे श्रीनगरं तदेतदखिलस्थानातिरिक्तोदयम् ॥ २ ॥
हृतनयनसुलैर्मखाभिधूमैः, श्रुतिकटुभिर्वडुवृन्दवेदपाठैः ।
कलिरकलितसम्भदः प्रदत्ते, न सल्ल पदं विदुषां गृहेषु यत्र ॥ ३ ॥
चञ्चत्पञ्चमखाभिभ्रम्रतमसि स्थाने त्रिनेत्रानल-
ज्वालाप्रज्वलितप्रसूनधनुषा देवेन दत्तोदये ।
श्रीमक्षां च पवित्रतां च परमामालोक्यन्तः सुराः,
स्वर्वासेऽप्यरसा रसामरजनन्याजेन मेजुः स्थितिम् ॥ ४ ॥
तस्मै संयमिनामिनौय मुनये नित्यं नमस्कुर्महे,
यन्माहात्म्यमसह्यमाह स मुहुर्मुख्यमनाः कौशिकः ।
आविर्भूतमभूतपूर्वचरितश्रेष्ठाद् वशिष्ठात् ततः,
सत्कर्मोद्धुरमैध्वरस्थितिविदा स्थानेऽत्र गोत्रं महत् ॥ ५ ॥
येषामर्शोपाधिपतिः प्रसन्नः, सल्लदपाणिः प्र(फ)णिकङ्कणेन ।
त एव सम्मूर्तिमिहाभूवन्ति, [कुले] गुलेचा(वा)गिषया प्रसिद्धे ॥ ६ ॥
श्रीसौलशर्मा विमले कुलेऽत्र, जन्म द्विजन्मप्रवरः प्रपदे ।
यः स्वर्गिणः सोमरसेन यागे, पितृश्च पिण्डैरपृणत् प्रयागे ॥ ७ ॥

१ आनन्दपुरम् ॥ २ देवा, मदिरा च ॥ ३ सर्पा, वेदभ्रष्टाश्च ॥ ४ भूदेवा ॥ ५ स्वाध्याये,
न्याये च ॥ ६ कलङ्कः, विश्रामित्रश्च ॥ ७ यज्ञविद्याविदम् ॥ ८ ईश्वरः ॥ ९ 'प्लुव' ख ॥ १० 'गुलेचा'
इति स्थानाकारेण गोत्रस्यावच्छिन्नं प्रतीयते, पर च डॉक्टर-रामकृष्ण-गोपाल-माण्डारकरमहाशयैः
१८८१-८४ वर्षीय 'रिपोर्ट' पुस्तके 'गुलेचा' इत्येव पाठ आश्रितः ॥

सोलः सलीलमवनीमवतामसौ वः, सौवस्तिकोऽस्त्विति वरं स्मरता स्मरारेः ।
श्रीगुर्जरक्षितिमुजा किल मूलराज-देवेन दूरमुपरुष्य पुरो दधे यः ॥ ८ ॥

यथा प्रतिष्ठां महतीं वसिष्ठस्तिग्मांशुवंशे भगवानवाप ।
निजेन सौवस्तिकतागुणेन, चौलुक्यभूपालकुले तथाऽसौ ॥ ९ ॥

विधिवद् वाजपेयं यः, कलिकालेऽप्यकल्पयत् । कियतीं वा जपेयं तच्चरिताद्भुतसंहिताम् ॥ १० ॥
ऋग्वेदवेदी च श(कु)तकजुश्च, दत्तान्नदानश्च जितेन्द्रियश्च ।

तिरोहिते तत्र पुरोहितेन्द्रं, तदङ्गजन्माऽजनिं लल्लुशर्मा ॥ ११ ॥

यः करोति स्म चामुण्डराजाख्यं नृपमाशिर्षां । हेतिर्पतापसम्पन्नं, हविषा च हविर्भुजम् ॥ १२ ॥
श्रीमुञ्जनामा तनुजस्तदीयः, स्वयं स्वयम्भूरिव मृतलेऽभूत् ।

वाक्पण्यलाभाय तथाहि सद्भिरभाजि मौञ्जीं रक्षनेव वृत्तिः ॥ १३ ॥
सद्वंशजातेन गुणान्वितेन, शरासनेनेव पुरोहितेन ।

एतेन मेने भुवने न किञ्चित् दुर्लभं दुर्लभराजदेवः ॥ १४ ॥
सन्तापशान्तिं जगतोऽपि सोमस्तन्नन्दनश्चन्दनवच्चकार ।

पीयूषहारी हरिणाङ्कितश्च, सत्यां वभाजे द्विजराजतां यः ॥ १५ ॥
यस्याशीःप्रतिपादितोदययुजा श्रीभीमभूमीमुजा,

क्षीरक्षालितशालितन्दु(ण्ड)लसितं साक्षात्कृतं तचशः ।
येनाशाक्रमणक्षमेण त इमे मूर्तिप्रभेदाः प्रभो-

र्मसमोद्धूलनमन्तरेण धवलाः सर्वेऽपि निर्वर्तिताः ॥ १६ ॥
मित्रा मानुं तत्र ताते प्रयाते, पुत्रः श्रीमार्नामशर्मा बभूव ।

कृत्वा सम्यक् सेंट संस्थाः क्रतूनां, क्रीता कम्पा येन सैत्राडभिरुवा ॥ १७ ॥
सदा यदाशीःपरिपूर्णकर्णं, श्रीकैर्णनामा नृपतिः प्रकाण्डम् ।

बसुन्धरामण्डलमर्णवान्तं, वान्तारिनारीनयनाम्बु चक्रे ॥ १८ ॥

१ अस्य मूलराजपुरोहितस्य सोलस्य सत्तामयस्य मूलराजराज्यसमय एव ॥ २ पुरोहितः ॥ ३ अवं
मूलराजमहाराज वि० सं० १९१३-१०५३ वर्षेषु राज्यमकार्षत्, इति Indian Antiquary Vol.
XI P. 219 ॥ ४ अस्य चामुण्डराजपुरोहितस्य लल्लुशर्मणः सत्तासमयश्चामुण्डराजराज्यसमय एव ॥
५ चामुण्डराजराज्यम्-वि० सं० १०५३-१०६६ ॥ ६ आयुषम्, दीप्तिम् ॥ ७ पीयूषम्, सन्तापश्च ॥
८ अस्य दुर्लभराजपुरोहितस्य श्रीमुञ्जनाम्न सत्तामयस्य दुर्लभराजराज्यसमय एव ॥ ९ मौञ्जी वृत्तिरिति
सुश्रवद्वर्तमानानां ब्राह्मणं भवतीत्यर्थः । एतेन मुञ्जस्य सदाचारत्वमुक्तं भवतीत्यर्थः । अथ न मौञ्जी मेसला
शरामयो रचना ब्राह्मण्यलाभाय सद्भिरभ्यन्ते ॥ १० दुर्लभराजराज्यम्-वि० सं० १०६६-१०७८ ॥ ११
अस्य भीमराजपुरोहितस्य सोमस्य जीवनमयस्य भीमराजराज्यसमय एव ॥ १२ विष्णुना, गृहेण च ॥
१३ वभाजे ख ॥ १४ ब्राह्मण्य, चन्द्रत्व च ॥ १५ भीमराजराज्यम्-वि० सं० १०७८-११२० ॥
१६ श्रुतिप्यादयोऽष्टौ ॥ १७ शिरस्य ॥ १८ अस्य श्रीकर्णराजपुरोहितस्याऽऽमशर्मणः स्थितिसमयः श्रीकर्ण
राजराज्यसमय एव ॥ १९ अग्निशोभायाः ॥ २० वाजपेययाजीनि ॥ २१ श्रीकर्णराजराज्यम्-वि० सं०
११२०-११५० ॥

दानानि तानि सदनानि च तानि शम्भोरम्भोजराजिरुचिराणि सरांसि तानि ।

येनामुना मुनिजनानुकृता कृतानि, विचैश्वर्यकुलसम्भवमूपदत्तैः ॥ १९ ॥

धाराधीशपुरोधसा निजनुपक्षोर्णा विलोक्याम्बिलां,
चौलुक्याकुलितां तदत्ययकृते कृत्या किलोत्पादिता ।

मन्त्रैर्यस्य तपस्यतः प्रतिहता तत्रैव तं मान्त्रिकं,
सा संहृत्य तडिलता तरुमिव क्षिप्रं प्रयाता क्वचित् ॥ २० ॥

तस्मात् कुमारः सुकुमारमूर्तिर्मूर्तिस्तपोराशिमिवोज्जगाम ।
स्वराजराज्योदयदायिनी वागुवास शैक्तेरिव यस्य वक्त्रे ॥ २१ ॥

यद्गः सिन्धुवसुन्धरापतिरतिपौढप्रतापोऽपि य-
श्रीतः स्फीतबलोऽपि मालवपतिः कारां च दारान्वितः ।

दत्तः सोऽपि सैपादलक्षनूपतिः पादानतिं शिक्षितः,
श्रीसिद्धक्षितिपेन सैप विभवः सर्वोऽपि यस्याऽऽशिषाम् ॥ २२ ॥

कुण्डोपशोभितैर्वागैस्तडागैश्च परःशतैः । दृष्टं पूर्वं च यश्चक्रे, चक्रवर्तिपुरोहितः ॥ २३ ॥

ऋजुरोहितमूर्त्युरोहितत्वस्पृहयेव त्रिदिशं गतस्य तस्य ।
तनुमूर्मनुमूपतिप्रणीतस्थितिसर्वस्वमवाप सर्वदेवः ॥ २४ ॥

मध्वदेर्व्यधित साधु सपर्यामध्वरेषु जयति स्म सुरेयाम् ।
मानवानविदितापरयाच्छो, मानवानकृत चैप कृतार्थान् ॥ २५ ॥

अर्चिषामयनमीयुषि तत्र, क्षत्रसत्त्वमनमस्करणीये ।
अध्यगामि विधिरामिगनाम्ना, वैदिकस्तदनु तत्तनुजेन ॥ २६ ॥

सत्कर्मनिर्माणरतेरमुष्य, म्रीडानिदागं द्वयमेतदासीत् ।
स्ववर्णनाकर्णनमुत्तमेभ्यः, संसारकारान्तरवस्थितिश्च ॥ २७ ॥

ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः समस्तविदुषां श्रीसर्वदेवाह्वयः,
श्रेयःसम्पदपास्तदुस्तरतमाः श्रीमान् कुमारोऽनुजः ।

सुजोऽय द्विजकुञ्जरस्तदनुजो न्यायाजडेनाहट-
श्वत्वारस्तनयास्ततः समभवन् वेदा इव ब्रह्मणः ॥ २८ ॥

१ मालयाधिराज्यशोचर्मणः पुरोहितेन सदेवमूर्तिं गृज्जरराजश्रीसिद्धराजावरनामधेयजयसिद्धदेवेन
म्याङ्गुलीहृत्वा शीघ्रं सङ्घकार्यमभिवारेण हृत्योत्पादिता । गा य वामनामर्माणः पुरोधसः शान्तिमन्त्रैः प्रतिविदा
वनी तमेव मालयाधीशपुरोहितं संहृत्य निरोहितेन धृष्टे ॥ २ शक्तिरिग्विषुयः ॥ ३ शोदस्तनामा ॥ ४ यशो-
वर्मनामा ॥ ५ आनलदेवः ॥ ६ श्रीसिद्धराजराज्यम् १० मं० ११५०-११५९ ॥ ७ जलं, दर्भय ॥
८ इरस्पतिः ॥ ९ विष्णोः ॥ १० शर्मिर्माणं गजवनि ॥ ११ अग्निहोत्रादिः ॥ १२ अस्य सिद्धराजपुरोहितस्य
सर्वदेवस्य जीवनमयः सिद्धराजराज्यमय एव ॥

- कुमारपालस्य चुलुक्यमर्षुरज्ञानि गङ्गासलिले निधाय ।
 श्रीसर्वदेवेन गयाप्रयागविषाः प्रदानेन कृताः कृतार्थाः ॥ २९ ॥
- स्थाने स्थाने तडागानि, शिवपूजा दिने दिने । विप्रे विप्रे च सत्कारः, छाया यस्य गृहे गृहे ॥ ३० ॥
- राहो गृहीतोष्णकरे कुमारः, कुमारपालस्य सुतेन राज्ञा ।
 कृतोपरोधोऽपि परं पुरोधाः, प्रत्यग्रहीत् तस्य न रत्नराशिम् ॥ ३१ ॥
- यः शौचसंयमपटुः कटुकेश्वराख्यमाराध्य भूधरसुताघटितार्थदेहम् ।
 तां दारुणामपि रणाङ्गणजातघातघातव्यधामैजयपालनृपादपास्थत् ॥ ३२ ॥
- विलोक्य दुष्कालवशेन लोकं, कङ्कालशेषं सविशेषशूकः ।
 श्रीमूलराजं दलितारिराजमचीकवृ(र)त् तर्करमोचनं यः ॥ ३३ ॥
- दुष्टारिकोटिकदनोत्कटराष्ट्रकूटकुल्येन शल्यैतरणाङ्गणकौङ्कणेन ।
 सर्वप्रधानपुरुषाधिपतिः प्रतापमल्लेन भूपतिममल्लिकया कृतो यः ॥ ३४ ॥
- सेनानीर्विदधे कुमार इति यः शङ्के चुलुक्येन्दुना,
 जित्वा सोऽथ जवादवार्थतरसः प्रत्यर्थिपृथ्वीपतीन् ।
 इष्टां तद्विषयार्द्धिमाशिषमिव प्रादात् पुरोधाः स्वयं,
 तस्मै याज्यमहीमुजे निजचमूवीरव्रजैरक्षैः ॥ ३५ ॥
- घाराधीशे विन्ध्यवर्मण्यवन्ध्यक्रोधाध्मातेऽप्याजिमुत्सृज्य याते ।
 गोगस्थानं पतनं तस्य मद्भक्त्वा, सौधस्थाने खानितो येन कूपः ॥ ३६ ॥
- गृहीतं कुप्यता कुप्यं, मालवेश्वरदेशतः । दत्तं पुनर्गीयाश्चाङ्गे, येनाकुप्यमकुप्यता ॥ ३७ ॥
- जित्वा ग्लेच्छपतेर्बलं तद्वलुलं राज्ञी सरःसन्निधौ,
 स्वःसिन्धोः सलिलैर्विधाय विधिवत् भीतिं पितृणामपि ।
 दानी मोक्षमनुक्षतक्षितितले कृत्वाऽब्दमब्दव्रजे,
 राजार्थं रचयाच्चकार चतुरः स्वार्थं प्रजार्थं च यः ॥ ३८ ॥
- यः कर्माणि च पशुणांश्च तनुते तद्भू-सुवः-स्वस्रयं,
 कीर्तिर्यस्य च यश्च निर्मलरुचिर्नो जातुचिन्मुञ्चति ।

१ कुमारपालराज्यम् वि० सं० ११९९-१२३० ॥ २ अथ कुमारपालपुरोहितस्य कुमारस्य सत्ता-
 समयः कुमारपालराज्ये ॥ ३ अजयपालेन ॥ ४ सामन्तसिद्धयुदे हि श्रीअजयपालदेवः प्रहारपीडया
 मृत्युकोटिमायातः कुमारनाम्ना पुरोहितेन श्रीकटुकेश्वरमाराध्य पुनः स जीवितः ॥ ५ अजयपालराज्यम्
 वि० सं० १२३०-१२३३ ॥ ६ शुकः शृङ्गतीक्ष्णामः शङ्कुः ॥ ७ मूलराजराज्यम् वि० सं० ११९३-
 १२३५ ॥ ८ कुमारः श्रीअजयपालपुत्रश्रीमूलराजसकाशाद् दुष्कालपीडितानां प्रजानां तदानीं हरमोचनं
 कारितवान् ॥ ९ निहतकौङ्कणाधिपतिमल्लिकार्जुनेन ॥ १० धैर्यदेशसमृद्धिम् ॥ ११ अमणाङ्गः, तण्डुलै-
 रगण्डितैश्च ॥ १२ अयं विन्ध्यवर्मा यशोवर्मणा वीरः ॥

शस्त्राविष्कृतिरध्वरे च युधि च श्लाघ्योज्झिहीते यतः,

सूत्रं यस्य हृदि स्फुरत्यविरतं ब्राह्मं च राज्यस्य च ॥ ३९ ॥

अरुन्धतीव कान्ताऽस्य, पत्युराज्ञामरुन्धती । अभूदभिधया लक्ष्मीः, साक्षालक्ष्मीरिव क्षितौ ॥ ४० ॥

आदिमः प्रशममन्दिरं महादेव इत्यभिधया तदङ्गमूः ।

येन पाणिनिहितेन पङ्कजेनेव तुप्यति परं सरस्वती ॥ ४१ ॥

सोमेश्वरदेव इति, क्षितिदेवस्यास्य वन्दुरनुजन्मा ।

अजनि कनिष्ठस्तस्य, आता स्यातान्वयो विजयः ॥ ४२ ॥

तैत्तिभिः प्रथममध्यमोत्तमैः, स्वे पदे च पुरुषैर्व्यवस्थितैः ।

शब्दशास्त्रमिव गोत्रमुच्चकैः, सत्क्रियं समजनिष्ट विष्टपे ॥ ४३ ॥

सोमेश्वरदेवकवेरेवेत्य लोकम्पृष्ठं गुणग्रामम् । हरिहर-सुभटप्रभृतिभिरभिहितमेवं कविप्रवरैः ॥ ४४ ॥

श्रीसोमेश्वरदेवस्य, कवितुः सवितुश्च कौ । सतृणाम्यवहारस्य, निरासेऽपि रसपदा ॥ ४५ ॥

वादेवतावसन्तस्य, कवेः श्रीसोमशर्मणः । धुनोति विबुधान् सूक्तिः, साहित्याभ्योनिधेः सदा ॥ ४६ ॥

तव वक्त्रं शतपत्रं, सद्गुणं सर्वशास्त्रसम्पूर्णम् । अवतु निजं पुस्तकमिव, सोमेश्वरदेववाग्देवी ॥ ४७ ॥

वसिष्ठानिष्ठायाः पदमिति जगत्पस्ति पटहः,

प्रकृष्टात्स्वेपामप्यजनिपत मुञ्जप्रभृतयः ।

कुले जातोऽप्येषां शतश्रुतिदुहित्रा पुनरयं,

स्वयं पुत्रीचक्रे नवकविगुणप्रीणितहृदा ॥ ४८ ॥

कान्येन नव्यपदपाकरसास्पदेन, यामार्धमात्रपटितेन च नाटकेन ।

श्रीमीमभूमिपतिसंसदि सम्यलोकमस्तोकसम्मदवशांवदमादधे यः ॥ ४९ ॥

कवीन्द्रपदवीस्पृहामहह । तेऽपि तन्वन्ति य-

द्वचः क्रकचक्रकंशं प्रथयति व्यथां कर्णयोः ।

कविः स विरलः पुनर्युंवि भवाट्यो दृश्यते,

मुधाभिरभिषेचनं रचयतीव यः सूक्तिभिः ॥ ५० ॥

मन्दश्छन्दसि कोऽपि कोऽपि विकलः सालङ्कृतिव्याकृता-

वर्थे कोऽपि वृथाश्रमो रसनिपावन्धः स कोऽप्यध्वनि ।

यत्रान्तर्विहरद्विरक्षितनयामजीरमञ्जुस्वर-

स्पर्द्धाचञ्चुभिरैक एव कवते कान्यैः कुमारालम्बजः ॥ ५१ ॥

१ अयं श्रीहर्षवंशो हरिद्वरो पीरधवलपञ्चमीये नैपद्युस्तकं प्रथमं यस्तुपालेऽन्तर्धे सल्लगन्तु-
रिति हरिद्वरपञ्चये प्रथम्यकोदो स्फुरन्मुक्ताभ्यते ॥ २ भीमदेवराज्यम् वि० सं० १२१५-१२१८; एक-
दशविभुवनपालराज्यम् वि० सं० १२१८-१२०० ॥ ३ अयं कुमारस्य पुत्रः सोमेश्वरदेवकवि-
देवराज्यमात्मनो ॥

वैदुष्यं विगताश्रयं श्रितवति श्रीहेमचन्द्रे दिवं,

श्रीप्रह्लादनमन्तरेण विरतं विश्वोपकारप्रतम् ।

इदं तद् द्वयमत्र मन्त्रिमुकुटे श्रीवस्तुपाले कवि-

स्तकीर्तिस्तुतिकैतवादिति मुदामुद्गारभारब्धवान्

॥ ५२ ॥

प्राग्वाटान्वयवारिधौ विधुरिव श्रीचण्डपः प्रागम्बु,

सम्भूतोऽद्भुतसत्य-शौचसदनं चण्डप्रसादस्ततः ।

सोमस्तत्तनयो नयोज्ज्वलमतिस्तस्याऽश्वराजः सुतः,

पूतात्माऽथ तदङ्गम्ः सुकृतम्ः श्रीवस्तुपालोऽभवत्

॥ ५३ ॥

उत्फुल्लमङ्गीप्रतिमलकीर्तिः, श्रीमल्लदेवोऽभवदप्रजन्मा ।

बभूव तस्यावरजश्च तेजःपालामिधानः सचिवप्रधानम्

॥ ५४ ॥

श्रीवस्तुपालस्य चिरायुरस्तु, दिशां प्रकाशं दिशते सदा यः ।

कर्पूरकिर्मिरितकेरलक्ष्मीरदावदातद्युतिभिर्द्यौःशोभिः

॥ ५५ ॥

क्षीणे चक्षुषि भेषजं भगवती कालीश्वरी देहिनां,

देहे चित्रविचित्रमाजि शरणं श्रीवैद्यनाथः प्रभुः ।

संसारज्वरजरेरे हृदि सदा विष्णुर्भविष्णुर्मुदे,

दौर्गत्ये च जिपांसिते गतिरसौ श्रीवस्तुपालः पुनः

॥ ५६ ॥

न वदति परया रुपाऽपि वाचः, स्पृशति परस्य न मर्म नर्मणाऽपि ।

विरमति मतिमान्मात्यचन्द्रः, कचन च नार्थिकदार्थितोऽपि दानात्

॥ ५७ ॥

धनमनवरतक्षितीन्द्रसेवाश्रमसमवाप्तमयज्ञतोऽपि दत्ते ।

अपरमपि परोपकारकं यद्, विमृशति वस्तु तदेव वस्तुपालः

॥ ५८ ॥

सत्यं ब्रुये भवतु मा क्षतिरत्र काचिद्, मूल्या स्वरूपकृतिनाऽपि मयाऽतिमात्रम् ।

मन्त्री समे च विपमे च परीक्षितोऽसौ, इष्टं त दुष्टमिह किञ्चन सञ्चरिष्ये ॥ ५९ ॥

अयमनुदिनदानोत्कर्षितप्राणवर्षत्परिचरितचरित्रः स्वस्तिमानस्तु मन्त्री ।

तुहिनकरसमनैर्यस्य कीर्तिप्रतनैरजनिपत रजन्यः प्राप्तराकाविपाकाः ॥ ६० ॥

लभन्ते लोकतः पापा, शपानन्ये नियोगिनः । अधिकारमधिकारममात्यः शास्त्यसौ पुनः ॥ ६१ ॥

त एव स्तूयन्ते नृपतिपशुमिर्धीवरतया,

प्रजानामानायः सपदि मनु येभ्यः प्रपतति ।

तदित्यं सुस्यानां चक्रितचक्रितं कापि बसतां,

मनां सम्प्रत्येकः सचिवशिबतातिर्भुवि भवान्

॥ ६२ ॥

अर्थदानदलितार्थदुःस्थितिं, स्वां विना विनयनम् । सम्प्रति ।

मृज्यते जगति केनचित् सतां, वस्तुपाल ! न कपालदुर्लपिः

॥ ६३ ॥

गोमयरसानुलिप्ते, कीर्तिसुधाधवलिते च सुवनगृहे ।

श्रीवस्तुपाल ! भवतश्चकास्ति चित्रं चरित्रमिह

॥ ६४ ॥

पीयूषैः प्रणता हिमैः प्रणिहिता तारामिराराधिता,

गङ्गावीचिभिरर्चिता परिचिता दिग्दन्तिदन्तांशुभिः ।

कर्पूरैः परिशीलिता मलयजैरावर्जिता मण्डिता,

डिण्डीरस्तवकैर्वकैरनुसृता मन्त्रीश ! कीर्तिस्तव

॥ ६५ ॥

प्रवर्तमानेऽत्र कवित्वसत्रे, सत्कृत्य सत्पात्रममात्यमेवम् ।

कृतार्थमात्मानमसावमंस्त, सौवन्तिको गुर्जरनिर्जराणाम्

॥ ६६ ॥

कुमारपुत्रेण कुमारमातुः, काव्य तदेतज्जगदेकदेव्याः ।

श्रुतिस्मृतिव्याकृति-यज्ञविधाविशारदेन क्रियते स तेन

॥ ६७ ॥

॥ इति श्रीगुर्जेश्वरपुरोहितश्रीसोमेश्वरदेवविरचिते सुरथोत्सवनाम्नि

महाकाव्ये कविप्रशस्तिवर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ॥



द्वादशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकविवरचितस्य नरनारायणानन्द-
महाकाव्यस्य प्रशस्त्यात्मकः षोडशः सर्गः ।

- शोभामिमूतपुरुहूतपुरं पुरन्ध्रीलवण्यलोभितजगन्नगरं गरीयः ।
धाम श्रियोऽणहिलपाटकनाम कामलीलामयं जयति गूर्जरभूमिभूषा ॥ १ ॥
- वाग्देवतां यदि जना जननीमिवैनामानन्दिनः प्रतिदिनं हृदि नन्दयन्ति ।
मस्मिन्निमान् मदनतुल्यरुचस्तथापि, निर्मत्सरा त्यजति नो सुतवत्सला श्रीः ॥ २ ॥
- प्राग्वाटगोत्रतिलकः किल कश्चिदत्र, श्रीचण्डपः स्फुटमसण्डपदप्रतिष्ठः ।
विसृजितान्यथित गूर्जरराजराज्यराजीवजीवनरविः सचिवावतंसः ॥ ३ ॥
- कृष्णीकृतारिवदना मुमनोमनांसि, रागास्पदं विदधती यदलक्ष्यरूपा ।
आनन्दमार्दितविचारमदैर्यदीयकीर्तिमुधा जितसुधा बुबुधे बुपेन्द्रैः ॥ ४ ॥
- चण्डप्रसाद इति सादितविश्वदौस्व्यस्तन्नन्दनः स्वकुलनन्दनकरूपशासी ।
मुक्तामयप्रसवसञ्चयचारुवद्यत्कीर्तिप्रभासुरभिताम्बरमूर्धभूष ॥ ५ ॥
- शास्त्रार्थवारिमरहारीहृदालवालसरोपिता मलिलना वितना नितान्तम् ।
यस्य प्रकाशितरविमहतापवद्विश्रयाथार्थिभिर्नृपकुलैः फलदा सिषेवे ॥ ६ ॥
- पुण्यस्य पापपटलीजयिनो जयश्रीरासीत् तदीयदयिता नयभूर्जपथीः ।
यस्या मनो दयितमक्तिःसुरसवनतीस्नानोज्ज्वलां जनयति स्म जिनेन्द्रसेवाम् ॥ ७ ॥
- नैवोष्ठसम्पुटविपाटनया कदाचिदेपा हिमत् जितसुधाविभवं व्यपद्य ।
श्वेतपुतिः कल्पतां तदयं हृदन्तः, केनापरेण परिभूततनुस्तनोति ! ॥ ८ ॥
- श्रीरङ्गमूर्धममृदमधोर्नयाब्जश्रीरङ्गमृजंगति शूर इति प्रतीतः ।
अस्वमतां सुरगुरुः सह शिष्यवर्गार्थये स्म यन्मतिजितशिरचिन्तयेव ॥ ९ ॥
- भूदामणीकृतजिनाङ्गिनमप्रपद्यः, कर्णस्फुरद्गुरुसुवर्णविभूषणश्रीः ।
सद्वर्त्मनि प्रबलदुर्मदमोहचौरः, दुःसधरेऽपि विललास य एव शूरः ॥ १० ॥
- हस्ताऽपि कान्तिलवमेव यदीयकीर्तेर्दिव्यं छजसिन् जगत्पवपादभीतः ।
इन्दुः सुपावपुरपि प्रसुरोगधीनामप्येष सर्पनिमलक्ष्मपृत्तौ न शुद्धः ॥ ११ ॥
- सोमाभिषसदनुजः सुजनाननाञ्जमूर्धोऽभवद् विबुषसिन्बुविशुद्धजुद्धिः ।
यन्मानसेऽद्भुतरसे विललास वार्धिक्षीर्वनापविभुरेव सरस्वतीयम् ॥ १२ ॥
- क्रीडाकषासु सदमि पुमादां मदेव, मौलिं विक्रम्य किल सोऽपि गुरुः सुराणाम् ।
यहृदिमवभारस्य विचारितस्य, नीराजनान्यद्वत् ययलपूरल्लेः ॥ १३ ॥

देवः परं जिनवरो हरिभद्रसुरिः, सत्यं गुरुः परिवृढः खलु सिद्धराजः ।
 धीमाननेन नियतं नियमत्रयेण, कीर्तिं व्यधात् त्रिपथगामिव यः पवित्राम् ॥ १४ ॥
 पुस्तूर्जं भूर्जैरधराधवसिद्धराजराजत्सभाजनसभाजनभाजनस्य ।
 दुर्मन्त्रिमन्त्रितदवानलविह्वलायां, श्रीसण्डमण्डननिमा भुवि यस्य कीर्तिः ॥ १५ ॥
 कुर्वन् परार्थ्यमणिने सति यद्गुणानामैकैकविन्दुरचनामुडुकैतवेन ।
 चन्द्रच्छलेन कति नो खटिनीर्धुभिचौ, धाता व्यधादथ विधास्यति कीर्तिशेषाः ? ॥ १६ ॥
 नो चेद् यशासि वलि-कर्ण-दधीचिमुख्या, दानोत्सवैरविरलानि भुवि व्यधास्यन् ।
 भक्तैरदास्यत विलसमरालवाललक्ष्मीर्यदीयघनदानयशोनदीपु ॥ १७ ॥
 श्रीवाससद्गकरपद्मगदीपकल्पान्, व्यापारिणः कति न विभ्रति हेममुद्राम् ? ।
 प्रज्वालयन्ति जगदप्यनयैव केऽपि, येन व्यमोचि तु समस्तमिदं तमस्तः ॥ १८ ॥
 कान्ता जगत्रितयविस्मयनीयनीतेः, सीतेति रामचरितस्य बभूव तस्य ।
 यल्लोचनं स्थिरतरं दयिताननेन्दौ, दूरेण काञ्चनमृगश्रियमन्वगच्छत् ॥ १९ ॥
 हर्षादसौ हसतु शीतकरोऽपि भासा, भृङ्गीरुत्तरपि च हुङ्कुरतां सरोजम् ।
 दूरावलम्बितशिरोम्बरहम्बरेण, यस्या मुखं जगति न प्रकटं यदासीत् ॥ २० ॥
 तत्सम्भवसिभुवनाभरणं वभार, शुभ्रं यशोभरमनश्चरमश्चराजः ।
 मुक्त्वा कलङ्ककलितं ललितं हिमांशुं, हर्षादलाभि सकलभिरय कलाभिः ॥ २१ ॥
 यं मातृभक्तिशुचिमेव यशश्छलेन, ससेव्य जातमुकृतो रजनीमुजङ्गः ।
 आसीजगन्नितयविस्तृतवैभवश्च, साक्षात् कलङ्करहितश्च सदोदितश्च ॥ २२ ॥
 हुत्वा सदध्वरचितेषु तमासि तीर्थयात्रोत्सवेषु खलु सप्तसु पावकेषु ।
 यः सप्तपूर्वपुरुषैकमुदे यशोऽम्भ-पूरतानि सप्त भुवनानि कृती प्रतेने ॥ २३ ॥
 संस्तूयमानचरितः परितः प्रबुद्धैः, सत्यवते मुकृतसूनुरिवान्हं यः ।
 लज्जामसज्जयत चापगुरुद्विजेन्द्रद्रोणक्षयक्षणतदुक्तिविचारेण ॥ २४ ॥
 तस्य प्रिया प्रणयपात्रममात्रशीललीलायितं वत ! वभार कुमारदेवी ।
 आलीयत प्रतिपदं जिनपादपद्मे, चित्तेशवक्त्रकमले च यदीयदृष्टिः ॥ २५ ॥
 यस्या मुखे जिनगुणमहणप्ररोहप्रीत्या शिरः प्रतिकलं परिकम्पयन्त्याः ।
 हित्वाऽम्बुजं च रजनीरमणं च लोला, दोलाकुतूहलसं समसेवत श्रीः ॥ २६ ॥
 सनुस्ययोरजनि नीरजनिर्मलास्यः, धीलास्यभूः स्मरकलः किल लूणिगास्यः ।
 वास्येऽपि यस्य चरितं विरराज बृद्धसवादकं क्रमनिराकृतपल्लवस्य ॥ २७ ॥
 यस्याऽऽननं द्विजवियुक्तमपि द्विजेन्द्रसान्द्रप्रभाभरमभात्रवशैशवस्य ।
 अङ्गं च केशलवमुक्तमपि व्यराजद्, यस्य प्रवालरुचिराधरपाणिपादम् ॥ २८ ॥
 सत्याभिपस्तदनुजो मनुजावतंसरत्नं बभूव विदितो भुवि मल्लदेवः ।
 यस्याव्रतः प्रतिकलं गतिविभ्रमेण, विभ्राजने स्म न महानपि हस्तिमल्लः ॥ २९ ॥

और्वाग्मिनाऽपतत यः सततं पयोधौ, पातालसीमि फणिफुल्लुतिदावदाहः ।
 चण्डेव चण्डकरधर्मघटेति मत्वा, यस्योज्ज्वलानि वचनानि सुधा सिपेवे ॥ ३० ॥
 तस्यानुजः पितृपदाम्बुजचञ्चरीकः, श्रीमातृभक्तिसरसीरसकेलिरसः ।
 साक्षाजिनाधिपतिधर्मनृपाङ्गरक्षो, जागर्ति नर्तितमना हृदि वस्तुपालः ॥ ३१ ॥
 नागेन्द्रगच्छमुकुटाऽमरचन्द्रसुरिपादाब्जभृङ्गहरिभद्रमुनीन्द्रशिष्यात् ।
 व्याख्यावचो विजयसेनगुरोः सुभाभमास्वाद्य धर्मपथि सत्पथिकोऽभवद् यः ॥ ३२ ॥
 कुर्वन् मुहुर्विमल-रैवतकादितिर्भयात्रां स्वकीयपितृपुण्यकृते मुदा यः ।
 सङ्गृह्यसङ्घपदरेणुभरेण चित्रं, सद्दर्शने जगति निर्मलयाम्बभूव ॥ ३३ ॥
 धर्मोचितं रुचितकामगवी निषेव्य, दुग्धप्रपास्त्रिजगतोऽपि वितत्य कीर्तिः ।
 यो मातृदुग्धरसपानमहोत्सवानामानृत्यमात्मनि कथञ्चन नैव मेने ॥ ३४ ॥
 भास्वत्यभावमधुराय निरन्तरायधर्मोत्सवव्यतिकराय निरन्तराय ।
 यो गूर्जरावनिशिरोमणिभीमभूषमन्त्रीन्द्रतापरवशत्वमपि प्रपेदे ॥ ३५ ॥
 यः कामवृत्तिरनुजेन निजेन तेजःपालेन पूर्णनृपकार्यपरम्परेण ।
 सद्धर्मकर्षरस एव मनो मनोऽविद्वद्विनोदपयसि स्नपयाम्बभूव ॥ ३६ ॥
 यः स्वीयमातृ-पितृ-बन्धु-कलत्र-पुत्र-मित्रादिपुण्यजनये जनयाञ्चकार ।
 सद्दर्शनवज्रविकासकृते च धर्मस्थानावलीवल्लयिनीमवनीमशेषाम् ॥ ३७ ॥
 कीर्त्या सौरभसारसान्द्रसुमनःसन्दोहसन्दोहक-

स्कान्त्या पाति वसन्तमन्वहमसावित्यर्पितार्थक्रमम् ।

ख्यातिं प्राप वसन्तपाल इति यो नामाद्वितीयं मुदा,
 विद्वद्विः परिकल्पितं हरिहर-श्रीसोमशर्मादिभिः ॥ ३८ ॥

श्रीशत्रुञ्जयशैलशेखरमणेः श्रीनामिद्वनुग्रहोः,

पीत्वा वक्त्रमुष्णशुदीधितिसुधामाकण्ठमुत्कण्ठया ।

व्यातन्वन् कवितां नितान्तमुदितः सद्यस्तदुद्गारवत्,
 तस्यैवाऽऽदिजिनेश्वरस्य जनयामास स्तवं यो नवम् ॥ ३९ ॥

नरनारायणानन्दो, नाम कन्दो मुदामिदम् । तेने तेन महाकाव्ये, वादेवीधर्मसुनुना ॥ ४० ॥

उद्गास्वद्विधविद्यालयमयमनसः । कोविदेन्द्राः ! वितन्द्राः !,

मन्त्री बद्धाञ्जलिर्वो विनयनतशिरा याचते वस्तुपालः ।

अल्पप्रज्ञप्रबोधादपि सपदि मया कल्पितेऽस्मिन् प्रचन्ये,

भूयो भूयोऽपि यूयं जनयत नमन्येपतो दोषमोषम् ॥ ४१ ॥

॥ इति श्रीगूर्जरीश्वरमहामात्मश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्द-
नाम्नि महाकाव्ये प्रशस्तिप्रपञ्चो नाम षोडशः सर्गः ॥

त्रयोदशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितस्तोत्रादि ।

मनोरथमयं विमलाचलतीर्थमण्डनश्रीजादिनाथस्तोत्रम् ।

लब्ध्वा मानुषजन्म जातिसुकुलप्रप्तां प्रतिष्ठाभिमां,

वृत्त्वा धर्मधुरीणतामधिगतः सङ्घाविषयश्रियम् ।

तीर्थेद्यामिम ! वस्तुपालसचिवो विश्वाग्रजाप्रत्यदा-

ऽऽरोहाय प्रगुणां मनोरथमयीं निःश्रेणिमाश्रित्यत्

॥ १ ॥

श्रीनामेय ! मनोरथाः शतपथा मित्याभिमानाम्बुधेः,

कल्लोला इव विस्फुरन्ति विषयग्राहग्रहल्यग्निताः ।

हित्वा तानिति वस्तुपालसचिवः सङ्गोघदुग्धोदधे-

भेजे वीचिसमानिमान् शमदमप्रव्यक्तमुक्ताफलान्

॥ २ ॥

प्रत्याशं प्रसरत्कषायविषयज्वालाकरालादितो,

दूरीभूय मयङ्ककराद् भवदवाद् व्यामोहधूमान्धितः ।

श्रीशत्रुञ्जयशैलपावन ! जिन ! त्वद्वक्त्रचन्द्रातपो-

पास्तिध्वस्ततमाः शमामृतहृदे दाहं कदाऽहं क्षिपे ?

॥ ३ ॥

एतस्मिन् भववारिधौ निरवधिक्रोधौर्ववहेश्च्युत-

खस्तो लोभतिमिङ्गिलस्य गिलनात् क्लेशाग्भसो निर्गतः ।

सस्तस्तात ! कदा कदाग्रहमहाग्राहाच्च शत्रुञ्जय-

द्वीपं प्राप्य मजेय जेयविजयप्रीतः परां निर्द्वैतिम् ?

॥ ४ ॥

संसारव्यवहारतो रतिमऽतिव्यावर्त्य कर्तव्यता-

वार्तामप्यपहाय चिन्मयतया त्रैलोक्यमालोकयन् ।

श्रीशत्रुञ्जयशैलगङ्गागुहामध्ये निबद्धस्थितिः,

श्रीनामेय ! कदा लमेय गलितज्ञेयामिमानं मनः ?

॥ ५ ॥

स्वामिन् ! मृत्युहरेरहं हरिणवन्नष्टोऽतिकष्टायुष-

व्याधिव्यापशतैर्वृतः श्रितमवारण्योऽश्वरण्यो अमन् ।

नामेय ! त्वमनाकुलः कुलपतिर्यत्रासि तस्मिन्लमे,

श्रीशत्रुञ्जयशैलनामनि कदा पुण्याश्रमे विश्रमन् ?

॥ ६ ॥

श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यानि लज्जालया,
 जिह्वालेषु मृगीदशामनुशयाद्भूमायितेषु द्विषाम् ।
 वक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिजगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदये,
 देव श्रीविमलाद्रिकेतन ! कदा दास्ये त्वदास्ये दशम् ! ॥ ७ ॥
 क्रोधेन ज्वलितो हतोऽष्टमिपुमिः पञ्चेषुणा पञ्चभिः,
 बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयग्रामं प्रकामं श्रितः ।
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! सुवनस्वामिन् ! सनाथे त्वया,
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थातास्मि सुस्थः कदा ? ॥ ८ ॥
 आस्यं कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न के वा स्तुताः ?
 वृष्णापूरपराहतेन विहिता केषां च नाभ्यर्थना ? ।
 तत् त्रातर ! विमलाद्रिनन्दनवनीकरूपैककरुणम् !,
 त्वामासाद्य कदा कदर्थनमिदं भूयोऽपि नाहं सदे ! ॥ ९ ॥
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सङ्गितैः सङ्गते-
 र्दत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं वाञ्छा ममोत्सेकिनी ।
 श्रेयोवैभव ! नाभिसम्भव ! भवाकूपारपारङ्गम् !,
 श्रीशत्रुञ्जयमण्डनेन भवता भावी कदा सङ्गमः ? ॥ १० ॥
 एताः शमाश्रुतरसेन हृदालवाले, संवर्धिताः पृथुमनोरथबल्यो मे ।
 विश्वैकमित्र ! भगवन् ! भवतः प्रसादाल्लोकोत्तरैः फलभरैः सफलीभवन्तु ॥ ११ ॥
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो-
 ध्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुपालः कविः ।
 प्रातः प्रातरधीयमानमनया यच्चित्तवृत्ति सता-
 माधत्ते विभुता च ताण्डवयति श्रेयःश्रियं पुप्यति ॥ १२ ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहाप्रसादश्रीवस्तुपालविरचितं मनोरथमयं विमलाचल-
 तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनस्तोत्रम् ॥

रैवतकाद्रिमण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ।



जयत्यसमसंयमः शमितमन्मथप्राभवो, भवोदधिमहातरिर्दुस्तिदावपाथोधरः ।
तपस्तपनपूर्वदिकलपकर्मवल्लीगजः, समुद्रविजयाङ्गजस्त्रिभुवनैकचूडामाणिः ॥ १ ॥
अहङ्कृतिलतायुधं प्रमदमान्यसिद्धौषधं, मदेन्धनघनज्जयः स्मरकरीन्द्रकण्ठीरवः ।
स्पृष्टारजनिवासरः प्रथितपङ्कतीव्रातपः, समुद्रविजयात्मजः स्फुरत् मानसे मेऽनिशम् ॥ २ ॥
मेरुर्मे रुचिमातनोति न मुधा मानी हिमानीगिरिः, कैलासस्तु न वस्तुतः स्तुतिपदं वन्ध्यः स विन्ध्याचलः ।
आप्यो रैवत एव केवलमयं शृङ्गाणि शृङ्गारय-स्युद्यैर्यस्य जगत्रयस्तुतिपदः श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥
संसारार्तितपोपतापशमनश्रद्धालवः ! किं मुधा, रागद्वेषदोस्तुकेर्धत ! बुधाः ! सेव्यान्तरैः सेवितैः ? ।
आजन्मोपशमापृतैकतरसः श्रीरिष्टनेमिप्रभो-निर्वृत्यौषयिकं पदाम्बुजयुगं घट प्रसक्तं हृदि ॥ ४ ॥
यस्यानीकवधूमिरेव विविताः स्व-भू-सुव स्वामिनो, मौलौ शासनमुद्रहन्ति भुवने देवोऽयमेकः स्मरः ।
सोऽप्याब्रन्मजितः करोति न करे जैत्रं धनुर्यं प्रति, प्रीतिं रैवतदेवतं वितनुतां देवाधिदेवः स वः ॥ ५ ॥
येषां भूर्तिरसौ तवेश ! परमानन्दैकनिस्स्यन्दिनी, ध्यानावेशवशंवदा स्मृतिपथे शश्वत् पुनीतेतमाम् ।
तेषां सम्मदवारिपूरितदृशां शैवेय ! नैवेयम-प्याधत्ते मनसश्चमत्कृतिमुष्मं सा सिद्धिसीमन्तिनी ॥ ६ ॥
साम्राज्यं चतुरर्णवीनिवसनक्षोणीशमौलिस्खल-त्पादाब्जं न मुरा-ऽसुरेन्द्रमुकुटस्पृष्टाङ्घ्रिपीठं च न ।
सिद्धिं शाश्वतसौख्यसङ्गसुभगां नाम्यर्थये किन्तु मे, श्रीशैवेय ! तवेयमस्तु चरणाम्भोजेषु भक्तिर्भृशम् ॥ ७ ॥
नेपथ्यैरतिथीभवत्पृथुतरापथ्यैरतथ्यप्रथै-रुद्यद्भ्युतदम्बरैः किमपरैरेकैव भूयान्मम ।
आरुपस्पृह्यालमुक्तियुवतिप्रीतिप्रियम्भावुका, श्रीमन्नेमिजिनेशितुः स्तुतिरियं प्रेवेयकं शाश्वतम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्रीवस्तुपालः सुकृतसुरतरोरालवालखिलोकी-

स्वामिन् नेमे ! त्वदीयक्रमकमलरजपुञ्जपुण्यैकमालः ।

संचाधीशश्चुल्लक्ष्यक्षितिपतिमचिवः शारदाधर्मस्तु-

र्विज्ञप्तिं ते विषष्टे प्रथय मम सदा दर्शनेन प्रसादम् ॥ ९ ॥

श्रीसङ्गमवृत्तचिवेधरवस्तुपालकल्लेन नेमिनमनेन किलाष्टकेन ।

यः स्तौति तस्य कमलामविलम्बमम्बादेवी तनोत्यतनु सन्तनुते च तेजः ॥ १० ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकृतो रैवतकाद्रि-

मण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ॥



श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यानलज्वाला
 जिह्वालेषु मृगीदशामनुश्रयाद्दुमायितेषु
 वक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिजगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदये
 देव श्रीविमलाद्रिकेतन ! कदा दास्ते
 क्रोधेन ज्वलितो हतोऽहमिषुभिः पञ्चेपुणा पञ्चि-
 बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयग्रामं प्रका-
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! सुवनस्वामिन् ! सनाथे
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थातामि
 आस्यं कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न
 तृप्यापूरपरहतेन विहिता केषां च ना-
 तत् प्रातर् ! विमलाद्रिनन्दनवनीकल्पैककल्पद्रु-
 त्वामासाद्य कदा कदर्थनमिदं मूयोऽपि
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सन्नितैः सन्नतै-
 र्दत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं बाञ्छा
 श्रेयोवैभवं ! नाभिःसम्भव ! मयाकूपारपारकृतम् !,
 श्रीशत्रुञ्जयमण्डनेन भवता भावी कदा
 एताः शमासृतरसेन हृदालबाले, संवर्धिताः पृ-
 विधैकमित्र ! मगवन् ! भवतः प्रसादाल्लोकोत्तरैः
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं गुणादिप्रभो
 श्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुप-
 प्रातः प्रातरधीयमानमनपां यच्चित्तवृत्तिं सता-
 माधत्ते विमुक्ता च ताण्डवयति श्रेयश्चि

॥ इति गूर्जरीश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितं
 तार्पणमण्डनश्रीआदिनाथजिनस

(४)

महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।

न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
 अर्हन्तस्त्रिजगद्वन्द्वान्, सिद्धान् विध्वस्तबन्धनान् । साधूंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
 कृतं षड्विधजीवानां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
 परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥
 मूर्च्छया विहितः कश्चिदामहो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥

चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।

माया लोमश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥

यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥
 कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
 ज्ञान-दर्शन-चारित्रं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येयोरनुमादये (!) ॥ ९ ॥
 त्यजामि पापमाहारं, बाधे मध्यमखण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारमविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥

चतुर्दशं परिशिष्टम्

श्रीमदरिसिंहविरचितं

सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम् ।

वनराजः

- श्रीवेदमविस्मयमयप्रबलप्रतापश्चापोत्कटान्वयवनैकहरिर्नरेन्द्रः ।
आसीदसीमचरितः परितप्तशत्रु-भालार्पिताङ्घ्रिनलिनो वनराजदेवः ॥ १ ॥
- यत्खड्गखण्डितविरोधिशिरोऽधिरक्त-स्रोतस्विनीभिरुदधिर्विदधे सरागः ।
येनाऽधुनाऽप्यरुणतां भजतस्तदङ्ग-सम्पर्कतोऽर्क-शशिनावुदयक्षणेपु ॥ २ ॥
- निर्गत्य कोशकुहरादसिदन्दशूकः, श्यामो यथागतमगात् त्वरितं यदीयः ।
एतेषु मास्म विशदेप परैरितीव, रुद्धेषु वक्त्रविवरेषु कराङ्गुलीभिः ॥ ३ ॥
- खट्वाङ्गसम्रतकरस्तरवारिलम्-कृचारिमुण्डमिपतः समराङ्गणे यः ।
मालाधिरापितहुताशनचण्डचक्षु-राभादिभासुरविरोधिविभासुरश्रीः ॥ ४ ॥
- तेने कृतान्तसमतां रसनासनाभि-धारोद्धुरो यदसिरञ्जनमङ्गुलश्रीः ।
अहाय यस्य युधि दर्शनसंज्ञयैव, मिन्दन्नरीनधित किङ्करतां कृतान्तः ॥ ५ ॥
- स्तब्धप्रकम्पितविलीनवियेर्णगात्रैः, खिन्नैर्विभङ्गुररवस्फुरदश्रुलेशम् ।
उन्मुच्य पौरुषमवाप्य च भीरुभावं, यः सेव्यते रिपुभिरुपुलकैः प्रसन्नः ॥ ६ ॥
- आकर्ण्य तूर्णमुपकर्णयितुं च यस्य, कीर्तिं मुहुर्भुजगभीरुगणेन गीताम् ।
चक्षुःश्रवा रसवशेन दृशां निमेषोन्मेषक्रियामनिमिषोऽपि चकार शेषः ॥ ७ ॥
- वक्रीकृते धनुषि मौक्तिकताडपत्रज्योत्स्नाम्बुभारभृति पल्लवतां दधाने ।
यस्याऽऽननं विकचवारिजकरूपमन्त-भेजे विहाय परराजकरान् जयश्रीः ॥ ८ ॥
- श्रीमत् पुरं भुवि पुरन्दरपचनामं, तेनाऽऽदधेऽणहिलपाटकनामधेयम् ।
स्त्रीणां मुखे स्मरतपस्विवनेऽजनीन्दु-पद्मश्रियोरसुहृदोरपि यत्र योगः ॥ ९ ॥
- अन्तर्वसद्वनजनाद्भुतभारतो भू-र्मां अदयतादिति भृशं वनराजदेवः ।
पञ्चासराह्वनवपार्श्वजिनेशवेदम-व्याजादिह क्षितिपरं नवमाततान ॥ १० ॥

(४)

महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।



- न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
- अर्हतस्त्रिजगद्वन्द्यान्, सिद्धान् विध्वस्तबन्धनान् । साधुंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
- कृतं पङ्क्तिधर्मीयानां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
- परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥
- मूर्च्छया विहितः कश्चिदाब्रह्मो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥
- चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।
- मायां लोभश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥
- यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुत्तीर्थिकाः ॥ ७ ॥
- कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
- शान-दर्शन-चारित्र्यं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येयोरनुमादये (?) ॥ ९ ॥
- त्यजामि पापमाहारं, बाह्ये मध्यमखण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारमविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥



चतुर्दशं परिशिष्टम्

प्राचीनहस्तलिखितप्रतिप्रान्तगता वस्तुपालादि-
प्रतियद्वाः पुष्पिकाः ।

(१)

धर्माभ्युदयमहाकाव्य अपरनाम संधपतिचरित

सं० १२९० वर्षे चैत्र शुदि ११ रवौ स्तम्भतीर्थवेलाकुलमनुपालयता महं० श्रीवस्तुपालेन
धीधर्माभ्युदयमहाकाव्यपुस्तकमिदमलेखि ॥ छ ॥ छ ॥ शुभमस्तु श्रोतृव्याख्यातृणाम् ॥

(संभात श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(२)

आचारांगवृत्ति-सूत्र-निर्युक्ति

सर्वसाधारणसत्या ३६७ ॥ आचारनिर्युक्तिः समाप्ता ॥ आचारांगवृत्तिः १२३०० । आचारसूत्र
२५०० । निर्युक्तिः ४४७ ॥ सवत् १३०३ वर्षे मार्गवदि १२ गुरौ अघेह श्रीमदणहिलपाटके
महाराजाधिराजश्रीवीरसलदेवराज्ये महामात्यतेजःपालप्रतिपद्यौ श्रीश्रीआचारांगपुस्तकं लिखित-
मिति ॥ कल्याणमस्तु श्रीजिनशासनप्रवचनाय ॥ मंगलं महाश्री. ॥

(संभात श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(३)

देशीनाममाला

संवत् १२९८ वर्षे जाश्विन शुदि १० रवौ अघेह श्रीमृगुकचले महाराजकश्रीवीरसलदेव....
महं० श्रीतेजपालमुत महं० श्रीलूणसीहममृतिपचकुलप्रतिपद्यौ आचार्यश्रीजिपदेवचरिते देसी-
नाममाला लिखापिता । लिखिता च कायस्थजातीय महं० अयंतसिंह.....सु.....

(पाटण संघवीपाटक-ताडपत्रीय-भंडार)

(४)

जीतकल्पचूर्णिः तद्वृत्तिश्च

शुभाशुभं वि वस्तुपालसचिवस्त्वागोऽस्य चन्द्रातप-

स्तोनोन्मीलितमर्धिरैतचकुले यत् तु श्रियस्तान्दवम् ।

तस्याः पादतलपपावरमसौर्जुनैरिवोद्भाप्यै-

स्तेनातस्तरिरे वरप्रितयदाः किजल्कजालैर्दिशः

॥ ३७ ॥

विश्वेऽस्मिन् कस्य चेतो हरति नहि समुद्रास्य विश्वासमुच्चैः,

प्रौढश्चेतांशुरोचिः प्रचयसहचरी वस्तुपालस्य कीर्तिः ।

मन्ये तेनेयमारोहति गिरिषु मिया लीयते गह्वरेषु,

स्वर्गोत्सन्नानुपास्ते भजति जलनिधिं याति पातालमूलम्

॥ ३८ ॥

एतेभ्यः प्रमुणा सगौरवमहं तावत् प्रदत्ता परं,

देशं देशममी भ्रमन्ति तदहं गच्छाम्यमीभिः समम् ।

नो चेत् काऽप्यपरा मिलिष्यति वधूस्तत्रेति मीत्या ध्रुवं,

कीर्तिर्यस्य गुणाननु भ्रमति स श्रीवस्तुपालः कृती

॥ ३९ ॥

सोऽयं धार्त्री धवलयति को वस्तुपालोऽचलेन्द्र-

मत्सदाविर्भवति समरे काऽपि दोः स्फूर्तिगता ।

यस्यां ममाः प्रतिबुधमतीवह्यमानां समन्तात्,

सम्पद्यन्ते बल पुनरनावृत्तये कीर्तयस्ताः

॥ ४० ॥ छ ॥

(पाटण संघवीपाटक-तादपत्रीय-भंढार)

(५)

महामात्य श्रीवस्तुपालसुतजैत्रसिंहलेखित पुस्तिका प्रशस्तिः ।

प्राग्वाटान्वयमण्डनं समजनि श्रीचण्डयो मण्डपः,

श्रीविश्रामकृते तदीयतनयश्चण्डप्रसादामिधः ।

सोमन्तप्रमवोऽभवत् कुबलयानन्दाय तस्याऽऽत्मन्-

राशाराज इति श्रुतः श्रुतरहस्तत्वावरोपे बुधः

॥ १ ॥

तज्जन्मा वस्तुपालः सचिवपतिरसौ सन्तनं धर्मकर्मा-

लं कर्मणैकबुद्धिर्विबुधजन[चम ?] स्कारिचारित्रपात्रम् ।

मातः सङ्गाधिपत्वं दुरितविजयिनीं सूत्रयन् सङ्गायात्रां

धर्मस्यौज्वल्यमाधात् कलिसमयमयं कालिमानं विद्रुष्य

॥ २ ॥

यस्याग्रजो मह्यदेव उत्तम्य इव वाक्पतेः ।

उपेन्द्र इव चेन्द्रस्य तेजःपालोऽनुजः पुनः

॥ ३ ॥

चौलुक्यचन्द्रलूणप्रमादतनुजस्य वीरधरलन्ध्रः ।

यो दध्रे राज्यधुरं मेकपुरीणं विधाय निजमनुजम्

॥ ४ ॥

विमुक्ता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-वित्त-वितरण-विवेकैः ।

यः सप्तमिविकारैः कलितोऽपि बभार न विकारम् ॥ ५ ॥

अपि चाप्यायिता वापी-मपा-कूप-सरोवरैः । पोषिता पोषधागरैर्जीर्णोद्धारैः समुद्धृताः ॥ ६ ॥

श्रिया प्रीतया निर्व्याजं पूजिता सङ्गपूजनैः । प्रशस्तिविस्तरस्तोमैः सरस्वत्यापि संस्तुता ॥ ७ ॥

शौर्येणोर्जस्वितां नीता स्फीता नव्योक्तिसूक्तिभिः । प्रीताऽर्थिसार्थसत्कारैरुपकारैः पुरस्कृता ॥ ८ ॥

वासिता साधुवादेन तोरणैस्तुभ्रतां गता । हैमसङ्ग्रामकुम्भेन्द्रमण्डपाद्यैश्च मण्डिता ॥ ९ ॥

नित्यं शत्रुञ्जयाद्रौ नवजिनभवनोत्तुङ्गशृङ्गाग्रजाग्र-

द्वातव्याधूतधौतध्वजपटकपटाद् यस्य नर्नर्चिं कीर्चिः ।

तस्येयं गेहलक्ष्मीर्विभवति ललितादेविनाम्नी तदीयः

पुत्रोऽयं जैत्रसिंहः स्फुरति जनमनःकन्दरामन्दिरेषु ॥ १० ॥

दृष्ट्वा वपुश्च वृत्तं च परस्परविरोधिनी ! । विवदाते समं यस्मिन् मिथस्तारुण्य-वार्द्धके ॥ ११ ॥

सोऽयं स्रहवदेवी कुक्षिभवस्य प्रतापसिंहस्य । तनयस्य श्रेयोऽर्थं व्यधापयत् पुस्तिकामेताम् ॥ १२ ॥

पुष्पदन्ताविमौ यावद् दीप्तौ ब्रह्माण्डमण्डपे । एषा सुपुस्तिका तावद् धर्मजागरकारणम् ॥ १३ ॥

[एतत्प्रशस्तियुक्ता पुस्तिका पत्तननगरे बाढीपार्श्वनाथमाण्डागारे विद्यते ।]



पञ्चदशं परिशिष्टम्

श्रीविजयसेनसूरिविरचित

रेवंतगिरिरासु ।

परमेसर तित्थेसरह, पयपंकय पणमेवि । भणिसु रासु रेवंतगिरे, अंचिकदेवि सुमरेवि ॥ १ ॥

गामागर पुर वण वहेण, सरि सरवरि सुपणसु । देवमूमि दिसि पच्छिमह, मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥

जिणु तहि मंडेल मंडणउ, मरगयमउडमहंतु । निम्मल सामल सिहरमरे, रेहई गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥

तसु सिरि सामिउ सामलउ, सोहगसुंदर सारु । जाइवनिम्मलकुलतिलउ, निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥

तसु सुइ दंसणु दसदिसि वि, देसदेसंतरु संप । आवइ भावरसालमणउ, हलि [हलि] रंगतरंग ॥ ५ ॥

पोरुयाडकुलमंडणउ, नंदणु आसाराय । वस्तुपाल वर मंति तहि, तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥

गुरजरधरधुरि धवलकि, वीरधवलदेवराजि । विहु वंधवि अवयारियउ, स[स]गू दूसग गाशि ॥ ७ ॥

नायलगच्छह मंडणउ, विजयसेणसूरिराउ ।

उवएसिहि विहु नरपवरे, धम्मि धरिउ दिहु भाउ ॥ ८ ॥

तेजपालि गिरनारतले, तेजलपुरु नियनामि । कारिउ गढ-मढ-पवैपवरु, मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु, आसारायविहारु ।

निम्मिउ नामिहि निजजणणि, कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥

वहि नयरह पुरवदिसिहि, उग्गसेण गढदुग्गु । आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥

धाहिरि गढ दाहिणदिसिहि, चउरियवेहिविसालु ।

लाडुकलहहियओरवीय, तडि पसु ठाइ कराल ॥ १२ ॥

वहि नयरह उत्तरदिसिहि, साल-धंभसंभार । मंडण महिमंडल....., मंडप दसह उयार ॥ १३ ॥

जोइउ जोइउ भवियण, पैमि गिरिहि दुयारि । दामोदरु हरि पंचमउ, सुवन्नरेहनइ पारि ॥ १४ ॥

अगुण अंजण अंबिलीय, अंबाढय अंकुलु । अंबरु अंबरु आमलीय, अगरु असोय अहल्लु ॥ १५ ॥

वरवर करपट करणतर, करवंदी करवीरा । कुडा कडाह कयंय कड, करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥

वेयउ वंजउ वजल वडो, वेडस वरण विडंग । वासंती वीरिणि विरह, वंसियालि वण चंग ॥ १७ ॥

सौममि सिबलि सिरसमि, सिंधुवारि सिरखंडा । सरल सार साहार सय, सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥

१ वडग=वरगं ॥ २ मंडल=देश ॥ ३ राजने=राजे छे ॥ ४ विरि=मस्तक=शिखर ॥ ५ अया=पानी ॥ ६ अकार=प्रधान ॥

पद्म-कुल-फलसिप, रेहइ तहि वणराइ । तहि उज्जिलतलि पग्गियह, उल्लंठु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
बोलावी संपह तणीय, कालमेघंत्तर पंथि । मेल्हविय तहिं दिट्ठ धणीय, वस्तुपाल बरमंति ॥ २० ॥

॥ प्रथमं कडवं ॥

दुविदि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु, कुमरपालु मूपाल जिणसासनमंडणु ।

तेण संठाविओ सुरठदंडाहिवो, अंयओ सिरिसिरिमालकुलसंभवो ।

पौज सुविसाल तिणि नैठिय, अंतरे धवल पुणु पैंरव भराविय ॥ १ ॥

धनु सु धवलह याउ जिणि पाग पयासिय, वारविसोत्तरवरसे जसु जस दिसि वासिय ।

जिम जिम चडइं तडि कडणि गिरनारह, तिम तिम ऊडइं जण भवण संसारह ।

जिम जिम सेउं जलु अंगि पलोट्टए, तिम तिम कलिमलु सपलु ओहट्टए ॥ २ ॥

जिम जिम वायइ वाउ तहि निज्जरसीयलु, तिम तिम भवहुहदाहो तक्खणि वुट्टइ निधलु ।

कोइलकलयलो मोरकेकारवो, मुग्गए महुर महरु गुंजारवो ।

पाज चडंतह सावयालोयणी, लापारामु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥

जलदजालवबाले नीसरणि रमाउलु, रेहइ उज्जिलसिहर अलि-कज्जलसामलु ।

बहलवुहु धातुरसमेउणी, जत्य उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।

जत्य दिप्पंति दिवोसही सुंदरा, गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥

जाइ कुंदु विहंसतो जं कुमुमिहि संकलु, दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडलु ।

मिलियनवलवलदिलदकुमुमझलहालिया, ललियमुरमहिवलयचलणतलतालिया ।

गलिययलकमलमयरंदजलकोमला, विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं समैला ॥ ५ ॥

मणहरपणवणगहणे रसिर हसिय किनरा, गेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिज्जिणेतारा ।

जत्य सिरिनेमिज्जिणु अच्छए अच्छरा, अमुरसुरउरगकिनरयविज्जाहरा ।

मउडमणिकिरणपिज्जरिय गिरियसेहरा, हेरसि आवंति बहुमत्तिभरनिभ्रमरा ॥ ६ ॥

सामियनेमिक्कुमारपयपंकयलंडिउ, धेर पूल वि जिण धन मन पूरइ बंडिउ ।

जो मयकोटाकोट्टि....., अलु सोवलु धणु दाणु जउ दिज्जए ।

सेवउ जडकम्मपणगंडि जउ विज्जए, तउ उज्जितसिहर पाविज्जए । ॥ ७ ॥

जम्भणु जेव[णु] जीविय तमु तहिं कयत्थू, जे नर उज्जितसिहर पेक्कनइ वरतिथू ।

आसि गुरज्जरधरय जेण अमरेसरु, सिरिजयसिघदेउ पवर पुहवीसरु ।

हणवि मोरलु तिणि राउ पंगारउ, ठविउ साज्जणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥

१ ऊलठ-कुम भावना ॥ २ पय-पराइ उतर चरका मटे पगयोसो कथिलो ररतो ॥ ३ मिट्ठि-जोवर
कगो ॥ ४ अ-अंगीनी वरव ॥ ५ रेहदल-वारसेको ॥ ६ मुग्गए-धुवने-गंमट्टय ठे ॥ ७ इय-मत्त
पाटी ॥ ८ हंवि-हरयो ॥ ९ श्रुवी अने पूठ पण ॥

अहिणवु नेमिजिणिद तिणि भवणु कराविउ, निम्मलु चंदरु विवे नियेनाउं । लिहाविउ,
योरेविकसंभवायंभरमाउलं, ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।

मंडपु दंड षणुतुंगतरतोरणं, धवलिय वज्झि रुणञ्जणिरिकिक्किणिघणं ।

इच्चारसयसहीउ पंचासीय, वच्छरि, नेमिभुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि

मालवमंडलगुहमुहमंडणु, भावडसाहु दालिधुखंडणु ।

आमलसार सोववु तिणि कारिउ, किरि गयणंगण सूरु अवयारिउ ।

अवरसिहर वरकलस झलहलइ मणोहर, नेमिभुयणि तिणि दिट्ठइ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

॥ द्वितीयं कडवं ॥

दिसि उत्तर कसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय । अजिउ रतन दुइ बंधं गरुय संधाहिव आविय ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिबि ति न्हवणु करंतह । गलिउ लेव सु नेमिविच जलधार, पडंतह ॥ २ ॥

संधाहिवु संधेण सहिउ नियमणि संतविउ । हा हा ! धिगु धिगु ! मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥

सामियसौमलधीरचरण मह सरणि भवंतरि । इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥

एकवीसि उपवासि तामु अंचिकदेवि आविय । पमणइ सैपसन्न देवि जय जय सदाविय ॥ ५ ॥

चट्टेविणु सिरिनेमिबिउ तुलिउ तुरंतउ । पच्छलु ममं जो ! सि वच्छ । तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥

णइवि, अंचि.....कंचणं.....धैलणइ ।विउ मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥

पडमभवणि देहलिहि छुडि पुडि आरोविउ । संधाहिवि हरिसेण ताम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥

टिउ निचलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो । कुसुमवुट्टि मिह्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥

वइसाहीपुत्तिमह पुत्तवंतिण जिणु थप्पिउ । पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतकपिउ ॥ १० ॥

न्हवण-विलेवणत्तणीय बंड भवियणजण पूरिय । संधाहिव सिरिअजित-रतनु नियदेसि पैराइय ॥ ११ ॥

सयल विचि कलिकालि कालकल्लसे जाणवि छाहिउ ।

झलहलंति मणिबिबकंति अंचिकुरुं आइय ॥ १२ ॥

समुहविजय-सिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु । जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥

राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु । पुत्तवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुमुंदरु ॥ १४ ॥

वस्तपालि वर मंति भुयणु कारिउ रिमहेसरु । अट्टावय-सम्मेयसिहरवरमंडपु मणहरु ॥ १५ ॥

कडडिजक्खु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ । पम्मिय सिरु धुणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु । कैल्याणउत्तउतुंगु भुयणु लंघिउ गयणंगणु ॥ १७ ॥

। १ मित्र नाम ॥ २ शरिद्रुतुंगु = शरिद्रुते दूर करार ॥ ३ नेमिनाथना मंदिरलो आगल्लारो ॥ ४ वग्गु = भाई ॥
५ सामियगामल = नेमिनाथ भगवान् ॥ ६ सुप्रसन्ना ॥ ७ नियधायक अव्यय ॥ ८ बलानक = मंदिरलो एक भाग ॥ ९ परागता = प्राप्ता आख्या ॥ १० कस्यागकययतुं भवन् = नेमिनाथ भगवानना दीक्षा केवलज्ञान अने निर्वाण ए अण कस्यागकने लगतुं विशाल मंदिर ॥

दीसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीतरणउ माले । इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसाले ॥१८॥
 अइरावणगयरायपायमुदासम टंकिउ । दिट्ट गयंदमुकुंड विमल निजसरसमलंकिउ ॥१९॥
 गयणगंग जं सयलतित्थअवयारु भणिज्जइ । पक्खालिवि तहि अंगु दुक्ख जलअंजलि दिज्जइ ॥२०॥
 सिंदुवार-मंदार-कुरबक-कुंदिहि सुंदरु । जाइ-जूइ-सयवचि-विचिफलेहि निरंतरु ॥२१॥
 दिट्ठय छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसाराधु । नेमिजिणेसरदिक्ख-जाण-निवाणइ ठाधु ॥२२॥

॥ तृतीयं कडवं ॥

गिरिगरुया सिहरि चडेवि, अंबे-जंवाहि बंबालिउं ए ।
 सँमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीडु रँमाउलं ए ॥ १ ॥
 वज्जइ ए ताल कंसाल, वज्जइ मद्दल गुहिरसर ।
 रंगिहिं ए नच्चइ बाल, पेत्तिवि अंबिकमुहकमल ॥ २ ॥
 सुमकरु ए ठविउ उच्छंगि, विमकरो नंदणु पासिक ए ।
 सोहइ ए ऊर्जिलसिंगि, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
 दावइ ए दुक्खहं मंगु, पूरइ वंछिउ भवियजण ।
 रक्खइ ए चउविहु सधु, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
 दस दिसि ए नेमिकुमारि, आरोही अवलोइउं ए ।
 दीजइ ए तहि गिरनारि, गयणंगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥
 पहिलइ ए सांयकुमारु, बीजइ सिहरि पजूअ पुण ।
 पणमइं ए पामइं पारु, भवियण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
 ठामि ठामि ए रगणसोवन्न, विव जिणेसर तहि ठविय ।
 पणमइ ए ते नर घन्न, जे न कलिकालि मेलमयलिया ए ॥ ७ ॥
 जं फल ए सिहरसंमेय, अट्टाचय नंदीसरिहिं ।
 तं फल ए भवि पामेइ, पेत्तेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥
 गहगण ए माहि जिम भाणु, पडयमाहि जिम मेरुगिरि ए ।
 त्रिहु मुयणे ए तेम पट्टाणु, तित्थमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
 घवल घय ए चमर भिंगार, आरचि मंगलपदेव ।
 तिलय मउड ए कुंडल हार, मेयादंबर जावियं ए ॥ १० ॥

दिग्धि ए नर जो पवर, चंद्रोयं नेमिजिणेसरवरभ्रुपणि ।

इहमवि ए मुंजवि भोय, सो तित्थेसरसिरि ल्हइ ए

॥ ११ ॥

चउविहु ए संघु करेइ, जो आवइ उज्जितगिरि ।

दिविसैवहू ए रागु करेइ, सो मुंचइ चउगइगमणि

॥ १२ ॥

अट्टविह ए ज्ञय(ज्ञय) करंति, भाठई जो तहिं करइ ए ।

अट्टविह ए करम हणंति, सो अट्टमवि सिज्झइ ए

॥ १३ ॥

अंविह ए जो उपवास, एगासण नीवी करइ ए ।

तसु मणि ए अठइं आस, इहभव परभव विविह परे

॥ १४ ॥

पेमिहि ए मुणिजण अन्नह, दाणु धम्मियवच्छल करइं ए ।

तसु कही ए नही उपमाणु, परभाति सरण तिणउ

॥ १५ ॥

आवइ ए जे न उज्जिति, धरधरइ धंधोलिया ए ।

आविही ए हियइ न संति, निष्फल जीविउ तासु तणउं

॥ १६ ॥

जीविउ ए सो जि परि धनु, तासु समच्छर निच्छणु ए ।

सो परि ए मासु परि धनु, वलि हीजइ नहि वासर ए

॥ १७ ॥

जहिं जिणु ए उज्जिलठामि, सोहगमुंदरु सामल ए ।

दीसइ ए तिहणसामि, नयणसल्लणउं नेमिजिणु

॥ १८ ॥

नीजर ए चमर ढलंति, मेपाडंवर सिरि धरीइं ।

तित्थह ए सउ रेवंदि, सिंहासणि जयइ नेमिजिणु

॥ १९ ॥

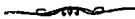
रंमिहि ए रमइ जो रासु, सिरिविजयसेणि सूरि निम्मविउ ए ।

नेमिजिणु ए तूसइ तासु, अंचिक पूरइ मणि रलीए

॥ २० ॥

॥ चतुर्थं कडवं ॥

॥ समस्तु रेवंतगिरिरासु ॥



१ आये ॥ २ चद्रवो ॥ ३ देवागना ॥ ४ परआगणे ॥ ५ धंधोलिया=धधामां रच्यापच्या रहनारा,
अथवा धांधलीया=रात दिवस धमाल करनारा ॥ ६ निर्जर=देव ॥ ७ रेवंगिरि ॥

पोडशं परिशिष्टम्

पाल्हाण पुत्र कृत

आवृत्तास्त

- ६० ॥ पैणमेविणु सामिणि वाएसरि, अभिननु कवितु रैयं परमेसरि ।
नंदीवरधनु जासु निवासो, पभणउ नेमिजिणंदह रासो ॥ १ ॥
- गूजरदेसह मज्झि पहाणं, चंद्रवती नयरि वक्खाणं ।
वावि सरोवर सुरहि सुणीजइ, बहुयारामिहि ऊपम दीजइ ॥ २ ॥
- त्रिग चौचरि चँउहट विषारा, प(म)ठ मंदिर पवलहर पगारा ।
छत्रिस्त राजकुली निवसेइ, धनु धनु पम्मिउ लोकु बसेइ ॥ ३ ॥
- राजु करइ तह(हि) सोमनरिंदो, निम्मल सोलकला जिम चंदो ।
द्विच बन्नउ गिरि पुहवि प्रसिद्धं, बहुयहं लोपहं तणउ जु तीयो ॥ ४ ॥
- षण वणरायहं सज्जु सुट्टाउं, तहि गिरिवर पुणु आवू नौउं ।
तसु सिरि वारह गाम निवासो (सी), राठी गूगलिया तहि तपसी ॥ ५ ॥
- तसु सिरि पहिल्लउ देउ सुणीजइ, अचलेसरु तसु ऊपसु दीजइ ।
वहि छइ देवत बालकुमारी, सिरि मा सामिणि कहउ विचारी ॥ ६ ॥
- विमल्लिहि ठवियउ पावनिकंदो, तहि छइ सामिउ रिसइजिणंदो ।
सानिनु सपह करइ संखेवी, तहि छइ सामिणि अंषाएवी ॥ ७ ॥
- पुरुष पच्छिम धम्मिय तहि आयहि, उतर दक्खिण संपु जिणवरु न्हायहि ।
पेसहि मंदिरु रिसइ मत्ता (रववा !), नाचहि धम्मिय बहु गुणवत्ता(का) ॥ ८ ॥
- धनु धनु विमल्लडि जेणि कराविउ, सप्तिमंडलि जिणि नाउ लिहाविउ ।
विहुं सइ वरिसइ अंतरु सुणीजइ, बीजउ नेमिहि भुवणु सुणीजइ ॥ ९ ॥

उवणि-

- नमिनि चिराणउ धु(पु) णि नमिनि, बीजा मंदिरनिवेसु ।
त पुहविहि माहि जो सल्लिहण, ऊत्तिम गूजर देसु ॥
त सोलंकिणकुलसंमिउं, सूरउ जणि जसवाउ ।
त गूजररातपुरासुधरणु, राजउं दणपसाउ ॥ १० ॥
- परिवउ दाउ जो आअण, जिणि पेलिउ सुस्ताणु ।
राजु करइ अत्तय ठणओ, जासु अमंजिउ माणु ॥

१. प्रणय ॥ २. रववा ॥ ३. वर ॥ ४. पीडा ॥ ५. गाम ॥ ६. आम्हो ॥ ७. संमिद्धि ॥ ८. विमल्लि ॥ ९. गूजररातपुरा ॥ १०. बहेकर ॥

लुण्ठापुत्रुं तु विरघ्वले, राणउ अरडकमल्ल ।

त चोर-चराडिहि आगलओ, रिपुगयह उरि साउं

॥ ११ ॥

भास-

वस्तुपालु तसु तणइ महंतउ, सहुयर तेजपाल उदयंतउ ।

अभिणवु मंदिर जेण कराविय, ठांवि ठावि जिणविं भराविय

॥ १२ ॥

महिमंडलि किय जेणि उद्वारा, नीरनिवाणिहि सत्तूकारा ।

सेत्तुजसिहरि तलावु खणाविउ, अणपमसरु तसु नामु दियाविउ

॥ १३ ॥

निउ निउ सुरसंध पूजा कीजइ, छहि दरिसणि धरि दाणु वि दीजइ ।

संध पुरिस पुहविहि सलहीजइ, रीतु घघेला बहु मानिजइ

॥ १४ ॥

अन्न दिवसि निय मणि चितीजइ, महतइ तेजपालि पभणीजइ ।

आबू भणिजइ तीथहं ठाउं, जइ जिणमंदिरु तह नीपावउं

॥ १५ ॥

ठाकुरु ऊदल ताव हकारिउ, कहिय यात कौन्हइ बइसारिउ ।

आबू रिखमह मंदिरु आछइ, महतउ तेजपालु इम पूछइ

॥ १६ ॥

बीजउ नेमिहिं भुवणु करेसहं, जइ जिणमंदिरु याँहर लहिसहं ।

पहिलउ सोमनरिंदु पूछीजइ, कटक माहि जाइवि विनवीजइ

॥ १७ ॥

ठवाणि-

महतिहिं जायवि भेटियओ धावलदेविमल्लारु ।

त कड(र) जोडेविणु वीनतओ, सोमनरिंद प्रमारु ॥

विनति अन्हहं तणीय, सामिय तुहु अवधारि ।

त मागउ थाहर मंदिरह, आधूयगिरिहि मझारि

॥ १८ ॥

त तूठउ धावलदिवितणउ, आगइ कहियउ एहु ।

त विमलह मंदिर आससउं, विजउं करावहु देव ॥

अग्नि धुरि गोठिय आबुयह, आगे अठह निवाणु ।

त करिज मंदिरु तिजपाल ! तुहुं, हियइ म धरिजहु काणि

॥ १९ ॥

भासा-

दिस(यः)इ आय(ए)सु तह सोमनरिंदो, वस्तुपालु तेजपालु आणंदो ।

जिण समिय मंदिरु वेगि निप्पजए, अइसु निरोपु दिव उडुलु दीजए

॥ २० ॥

अइसि ऊदल्लु चंद्रावती आवए, सयलु महाजनु धरि तेडावए ।

चालहु हिय आबुइ जाएसहं, जिणमंदिर थाहर भूमि जोएसहं

॥ २१ ॥

चलिउ ऊदल्लु महाजनि सहितउं, आयुय देवलवाढइ पहुतओ ।
 ठामि ठामि मंदिरभूमि जोयंतओ, मिलिउ मेलावओ आबुय लोमहं ॥ २२ ॥
 मंदिर धाहर नवि आपेसहं, प्राणिहिं भुवणु करण नवि देसहं ।
 आगए विमलमंदिर निप्पनओ, सिर मा भूमिहिं दीनउ दानु ॥ २३ ॥

ठवणि-

ऊदल्लु तिल्लु [त]पसीय बहु परि मंतावइ ।
 राठी वर भूगुलिया वस्तइं पहिरावइ ॥ २४ ॥

भास-

अग्नि धुरि गोष्ठिय दिव निमिनाथ, जिणभूमि आपहु ते इयु बाहा ।
 विमल मंदिर ऊतर दिसि जाम, लइय भूमि तिल(ज)पालु बघाविउ ॥ २५ ॥
 महतइ तेजपाल पभणीजइ, सोमनदिउ सुतहार तेदीवइ ।
 जाइज आबुइ तुहुं (मुहुतु) कमठाए, वेगिहि जिणमंदिरु निप्पाए ॥ २६ ॥
 चालिउ पइठ करिउ सुतहारो, भूमि भुवण इक्कार अहारो ।
 सोमनदिउ विगि आबुइ भावइ, कमठा मुहुतु आरंभु करावइ ॥ २७ ॥

भास-

मूलगा पावारधर, पूविउ कुरुम प्रवेसु ।
 भरिउ गढारउ तहिं ज पुरे, सरसिल हुमउ निवेसु ॥
 आसंनी तहिं ऊषटिय, पायरकेरिय स्वाणि ।
 निपनु गढारउ भूलिगओ, देउल्लु चडिउ प्रमाणि ॥ २८ ॥
 रूपा सरिसठ समतुल प, दसहिं दिसावरि जाइ ।
 पाहणु तहिं आरासणउं, आणिउ तहिं कमठाइ ॥
 सरवरु घाटु जो नीपजण, मंदिरु बहु विस्तारि ।
 त आतिसइ दीसइ रूवढउं, नेमिजिणिउ पयार ॥ २९ ॥

ठवणि-

सोमनदेउ सुतहारो कमठाउ करावइ ।
 सइ तउ मंत्रि तिजपालो जिणविनु भरावइ ॥ ३० ॥

भाम-

खंभापति वर नयनि बिनु निप्पजण, रयणमउ नेमिजिणु ऊपम दीजण ।
 दिगनि कंनि रयणकंनि सामल धीरा, बहु पंकति बहु मफति जाइ सरीरा ॥ ३१ ॥

निवसण विंदु जो साल्ह संठिओ, विजयसिणघूरि गुरि पढम पतीठिओ ।
 निपनु परिपूरनु सामलदेउ, धणु तिजपाल जिणि आवुय नेओ ॥ ३२ ॥
 घवलसुत सुरहि पुत ठविय तहि रहवरे, खडइ सुहडा सुमुहुआ आवुय गिरवरे ।
 नयरवर गामह भाहिहि आवण, सइत भवियहो जिण पहेरावण ॥ ३३ ॥
 आवुय तलवटे रत्यु पहतओ, तेणीय ऊवणीय पाज चढंतओ ।
 थडऊयडइ रहु पाज विसमी खरी, वेगि संपत्त अंबिक वर अच्छरी ॥ ३४ ॥
 सानिधि अंचाइय रत्यु चढंतओ देवलवाडण दिणि छठइ पढतओ ॥ ३५ ॥

ठवणि-

आवुय सिहरि संपत्त देउ पहु नेमिजिणेसरु ।
 वणसइ सवि विहसणहं लग्न आइउ तित्येसरु ॥ ३६ ॥
 उच्छंगिहि जुगादिजिणु जिणु पहिलउ ठविजइ ।
 तुहुं गरुयउ निमिनाथ विंदु तिजपालिहिं कीजइ ॥ ३७ ॥
 हक्कारहु वर जोइसिय पइठइ दिणु जोयहु ।
 तेडावहु चउविहहं संघु पुर-पाटण-नामहं ॥ ३८ ॥
 वार संवच्छरि छियासियण (१२८६) परमेसरु संठिउ ।
 चेत्रह तीजह किसिण पखि निमि सुवणिहि संठिउ ॥ ३९ ॥
 बहं आयरिहिं पयट्ट किय बहु भाउ धरंता ।
 रागु न(त) वद्धइ भवियजणाहं निमित्तिरत्यु नमंतह ॥ ४० ॥
 थावे हंडावडा तणे जिणु पहिलउ न्हवियउ ।
 पाछइ न्हवियउ सयल सवि तुम्हि पणमहु भवियहु ॥ ४१ ॥
 [.....] तासु कल्याणिकु कीजइ ।
 दसमि तित्यु नेमि जात रेसि संघ पासि मंगीजइ ॥ ४२ ॥
 संघु रहिउ जिणि जात करिवि नेमिभुवण विसाल ।
 पूरि मणोरह वस्तुपाल मंति तेजपाल ॥ ४३ ॥
 मूरति भैपु असराज तणी कुमरादि विमाया ।
 काराविय नेमिभुवणुमाहि विहु निम्मलकाया ॥ ४४ ॥
 काराविउ निमिभुवण फळ लयउ संसारे ।
 निमुणहु चरितु नदन्ते (ते ?) तिणि घंघुय प्रमारे ॥ ४५ ॥
 रिपममंदिरु सासणि जाणुं घुंघुय दिजउ डकढवाणिउं गाउं ।
 तिणि सुमसीहि उजालिउ नाउं नेमिहि दिन्नु डवाणिउ गाउं ॥ ४६ ॥

[भास]

[.....]

अनेक सपपति आबुइ आवहिं, कनक कपड निमिजिणु पहिरावहिं ॥ ४७ ॥

पूजहि माणिक मोतिय हूँले, किंवि पूजहि सोगधिहि फूले ।

केवि हु हियडय भावण भावहिं, केवि हु मनीणइ आराहहिं ॥ ४८ ॥

केवि चडावलि नेमि नमीजइ, रासु वयणु पाव्हण पुत्र कीजइ ।

बार सवच्छरि नवमासीय(१२८९), वसंत मासु रंमाउल दीहे ॥ ४९ ॥

पह राहु(सु !) विस्तारिहि आप, रापइ समय संघ जंभाई ।

राखइ जासु जु आछइ खेडइ, राखइ ब्रह्मसंति भूटेरइ ॥ ५० ॥

॥ आचूरासः समाप्तः ॥



परिशिष्टानि ।

सुकृतकीर्तिकलोलिनी-आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह ।

पद्यानुक्रमणिका ।

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०
अद्रावणमयराय	१९	अन्वयेन विनयेन	४३
अदसि ऋद्धि	२१	अन्न दिवसि	१५
अकारयन्माकारं	४०	अपास्य शौण्डीर्यमदं	१५
अगम्यपुण्योदय	३०	अपि चाप्यायिता	६
अगुण अंजण	१५	अप्राप्ततादृशगुणां	८४
अग्रे हर्षीरवीरश	६०	अमृदनुपमा पत्नी	५९
अचिन्त्यदातार	१७	अन्यर्थ्य देवान्	३१
अच्छिद्रो यदि तद्धृतः	९९	अन्विक्रामने येन	८८
अजनि रजनिजानि	३	अंविष्ट ए जो	१४
अजयदजयपाल	२७	अम्भोजेषु मराल	८
अट्टविह एजय	१३	अम्भोदभ्रममाजि	१२६
अणहिलपुरमस्ति	३	अभिष्ट धुरि	२५
अन्यदमुता सचिवपुङ्गव !	३०	अयं हि राकासु	८
अन्यदमुतैः कृत्यशतैः	१०२	अयमनुदिनदानो	६०
अत्रैव शत्रुजय	८२	अरिबलदलनश्री	३
अत्रैव शैले रचयाञ्चकार	७८	अरुन्धतीव कान्ता	४०
अनन्तप्रागन्मयः	२२	अर्कपालितकप्रामे	५९
अनुगन्मना समेतस्	१९	अर्चिपामयन	२६
अनुमोक्षयापि	८	अणोराजाङ्गजातं	३३
अनुपमदेवी देवी	५३	अर्थदानदलिता	६३
अनुपमदेव्यां पल्यां	१३	अर्थव्यर्थितदुस्थ	४२
अनुपमदेव्यास्तेन	८४	अर्हस्तनोतु भुवना	१
अनुसृतसज्जन	५१	अर्हतन्निजगद्	२
अन्तःकजलमञ्जुलि	२०	अवश्ययन्नाद्यु	२३
अन्तःक्षारं रिपूणां	२	असावाशाराजं	६
अन्तर्यर्कात्किंसासारं	२८	असौ कीर्त्तीः स्वका	१४१
अन्तर्व्योम श्रवन्ती	८३	असौ भुवनपालख्य	६१
अन्ये केचन	५२	अस्ति प्रदास्ता	१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
अस्ति स्वस्तिनिकेतन	४९	६३	आस्य कस्य न	९	९२
अस्थापयत् स्थिरमति	६३	३८	आहडस्तदजनि	२०	२
अस्मद्रौत्रैकमित्र	१३२	१२	इन्दुर्विन्दुरपा	७	५७
अस्मिनामिभुव	१६६	१५	इतरगुणकथाया	६	४२
अस्मिन्नुजतवेस्म	१३	२	इतधौलक्यवीराणा	२५	६०
अस्य त्रिकमविक्रमस्य	५३	५	इत्थं श्रीवस्तुपाल	९	९३
अहकृतिरुतायुध	२	९३	इत्यन्त स्मित	६९	३९
अहिण्वु नेमि	९	१०१	इत्युक्त्वा प्रीति	५१	३७
आकृष्टे कमलाकुलस्य	१३	५३	इत्युक्त्वा मम	६७	३९
आगो यदमुवारि	१७	३१	इद सदा सोदरयो	२१	६०
आजन्मत्रासहेतु	६८	६	इन्दु पत्रावलम्ब	१५८	१४
आत्मगुणै किरणैरिव	६	५९	इन्दु पत्रावलम्बं	१७	१९
आत्मा त्व जगत	८	४९	इन्दुर्निन्दति	११	४०
आदिम प्रशम	४१	८५	इन्दुर्विन्दुरपा	१२८	११
आदेशं देव । यथेव	६८	३९	इमा समयवैषम्याद्	१५	२२
आयेनाऽन्यपवर्जनेन	६	५२	इमामकृत सद्गुरोर्	१७८	१६
आनन्दचन्द्राऽमरचन्द्र	१५३	१३	इयमनुपमदेवी	५४	६३
आन दाऽमरसूरी	१००	२९	इह तेजपाल	७	४७
आनदाय मुदर्शना	३	३४	इह बालिगसुत	१	४७
आपणे प्रसृति	३०	३६	इह बालिगसुत	१	५०
आवुय तलवटे	३४	१०७	इहैवाष्टापदोद्धार	६५	२७
आवुय सिंहारि	३६	१०७	ईदृग्गुरुगुरुपदेश	१६२	१४
आयाता कति	५	४७	उच्छगिहि	३७	१०७
आयुर्वायुहोर्निवव	१६१	१४	उट्टेविणु सिरिनेमि	६	१०१
आवइ ए जे	१६	१०३	उत्कर्षप्रगुणा	४५	३७
आराग्न्यो नवपुण्य	२६	१९	उत्फुल्लमल्ली	५४	८६
आशाराज इति	१०७	९	उत्सेकितोत्सूत्र	१७	८०
आशाराज शस्यधी	२१	२५	उदग्रतेज मुहूर्तैक	१०	२४
आशाराजस्य पितु	९७	२८	उदार शूरो बा	४	४९
आधर्यै यमुरट्टिमि	१८	३१	उदधारानुजो यस्य	५२	२७
आसीद्दीप्तो दोम्नदा	१६	२	उदृत्य पद्मासर	३२	२६
आसीधडपर्मडिता	६९	६४	उद्भूत्य वैषनाथस्य	५८	२७
आरते तस्य मुपारहस्य	११६	१०	उद्भास्यद्विचविषा	४१	९०

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
उद्भूतप्रतिमा	१३०	११	कल्पद्रुमसवावतंस	६	४०
उद्भूतप्रतिमा	१३	१८	कल्पाविकरणादितो	१९	८०
उपार्जि विमुता	९७	८	कवीन्द्रपदवीस्रहा	५०	८५
उद्बल्लु तिलु	२४	१०६	कस्याऽपि कविता	४	५४
ऋग्वेदी च	११	८२	कान्तं ये वीक्ष्य	३९	४
ऋजुरोहित	२४	८३	कान्तस्वान्तसरो	१११	९
एकवीसि उपवासि	५	१०१	कान्ता जगन्त्रितय	१९	८९
एकाऽपि प्रमदां	१२	२	कान्ते कृष्णेऽभिभूते	४०	४
एकैकेन विमोह	१८	८०	काराविउ निमु	४५	१०७
एकोपत्तिनिमित्तौ	२३	६०	काले यत्त्वङ्गदण्डे	२१	२२
एतद्धर्मस्थानं	७२	६५	कान्येन नव्यपद	४९	८५
एतस्मादजनि	७	५९	किं च कारयता	५७	२७
एतस्मिन् मव	४	९१	किं चित्रं यदि	१६८	१५
एतस्मिन् वसुधा	१६	२२	किं वण्णो लवण	७८	७
एतस्मिन् वसुधा	७	५५	किञ्चित्तेन गुणैः	१४९	१३
एतस्य विकसद्धर्मा	१०६	९	किमिह कपाल	१	६७
एताः शमाभृतरसेन	११	९२	कीर्तिकम्पलित	४४	३७
एतेभ्यः प्रमुणा	३९	९७	कीर्तिस्तोममुधा	७	३४
एतेऽध्वराजपुत्रा	१८	६०	कीर्त्या सौरमसार	३८	९०
एह राहु	५०	१०८	कुण्डलप्रतिमित	९२	८
और्वाग्गिनाऽपतत	३०	९०	कुदेशना च या	८	९५
औपधीशसखः सत्यं	४	४०	कुन्दं मन्दप्रतापं	६	३०
कठडिजकलु	१६	१०१	कुमारपालस्य	२९	८४
कथ्यन्ते न महीभृतः	६१	५	कुमारपुत्रेण	६७	८७
कमठधनभृताम्भो	१	७८	कुर्वन् परार्थगणिते	१६	८९
करवर करपट	१६	९९	कुर्वन् मुहुर्विभल	३३	९०
करसरसिरुहं ते	५	४१	कुशोपशोभितैर्	२३	८३
करसरसिरुहं ते	९	४२	कुम्पाण्डि ! मण्डन	३	९४
कराम्भोजं मेजे	३४	३	कुतं पड्विषयजीवानां	३	९५
कराम्भोजं मेजे	१०	१८	कृत्वाऽघः कच्छपं	६	३४
कर्णायास्तु नमो	२८	३३	कृष्णीकृतास्त्रिवदना	४	८८
कर्णे खलप्रलपितं	१०	५०	के निधाय वसुधातले	६	४९
कर्मसाक्षिभवताप	१५१	१३	केचि चडावलि	४९	१०८

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
कोटीरैः कटका	१५	३१	गुरो[स्त]स्या[शि]पां	७१	६४
कोटीरैः कटका	२	५१	गूजरदेसह मन्त्रि	२	१०४
कोदण्डं स्वकरो	६४	६	गृहीतं कुप्यता	३७	८४
कोपाग्नि-वलिता	७७	७	गृह्णासि नाम परतोऽपि	४	४१
कोपाटोपपरैः परैश्	१३७	१२	गोप्रहप्रोज्झिता	३५	२६
कोपाटोपपरैः परैश्	२	५६	गोमयरसानुलिप्ते	६४	८७
कान्तशत्रुबलो	५४	५	गौरीवरश्चशुर	३०	६१
कामन्ति स्म यथा	१५	३५	ग्रामेऽर्कपालितक	६८	२७
क्रीडाकयासु सदसि	१३	८८	ग्रामे शासनदत्ते च	१७२	१५
कुक्षे युद्धेपु यस्मिन्	८७	७	घण वणरायहं	५	१०४
कोधेन ज्वलितो	८	९२	घोरारण्यविलङ्घनै	७६	७
क्वचिदिह विहरतीर्	३१	६१	चंडप्र[सा]दसं[ज्ञः]	५	५९
क्षीगत्वं दाक्षिणात्या	६३	६	चक्रे कोपश्च	६	९५
क्षीणे चक्षुषि	५६	८६	चक्रे च यो धवलके	१७०	१५
क्षीराम्बिर्दृढति	१३५	१२	चक्षत्पद्मम	४	८१
संभायति वर	३१	१०६	चण्डप्रसाद इति	१००	८
खेलस्वङ्गापडंद्दि	३१	३	चण्डप्रसाद इति	५	८८
ख्यातः सहप्रामसिद्धो	१३९	१२	चण्डप्रसादपुण्ये	९०	२८
गयणगीम जं	२०	१०२	चण्डांशोरपि चण्डता	२२	२३
गर्जन्तिर्जरकुञ्जरे	१२९	११	चत्वारस्तनया	११२	९
गर्जन्तिर्जरकुञ्जरे	१२	१८	चलियउ उन्दल्लु	२२	१०६
गर्वात् पूर्वे	१०	७९	चहुविहु ए संघु	१२	१०३
गहगण ए माहि	९	१०२	चान्दे कुळे	१६	८०
गार्गीये जलधिर्	१	७६-३	चालिउ पडि	२७	१०६
गाथास्ता खड्ड	८	७८	चित्रं चित्रं समुद्रात्	३२	३३
गामागर पुर	२	९९	चित्र विवग्नाभि	१७	२५
गिरिगरुया सिंहरि	१	१०२	चिन्तातीतफलप्रदः	१	१
गुणप्रामे रामे	८	४०	चिन्तातीतफलप्रदः	३	७८
गुणपननिधान	५७	६३	चिन्तारैः शकटवज्रस्य	३७	३३
गुणौपहंसादि	१९	२५	बूडामणीरुत	१०	८८
गुम्बरपरपुति	७	९९	चेतः कि कटिकाल !	३	२१
गुरुः कुष्ठेऽप्य	९९	२९	चेतः कि कटिकाल !	१	४७
गुरुः श्रीहरिमन्त्रेऽयं	८	७९	चेतः केनकगर्भ	२	१७

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
चौदक्यः सुकृती	२८	६१	त एव स्तूयन्ते	६२	८६
चौदक्य सितिपाल	५	४५	तजगत्यां च	६२	२७
चौदक्यचन्द्र	४	९५	तज्जन्मा वस्तुपालः	२	९७
छद्मोत्सेकितनो	५	१	त तूठउ	१९	१०५
न फल ए	८	१०२	ततोऽभवत् क्रीर्ति	९	२४
जगद्धन्यगन्यः	६५	६	तत्कामश्रीरजनि	३८	४
जगे हर्षपुरीय	१०४	२९	तत्कालं कलहे	२२	३५
जनन्यामोह	७	४२	तत् त्रैलोक्यनिभ	२०	३५
जम्बूद्वीपो जलधि		४३	तत्त्वोदिवर	२०	८०
जम्भयु जोव[ण]	८	१००	तत्पदे प्रथमः	६	७९
जयति विजयसेन	१५७	१४	तत्पदे विजयसेन	१०१	२९
जययसमसंयमः	१	९३	तत्पदे विजयसेन	१७	७६-३
जलदनालव्याले	४	१००	तत्पदे विजयसेन	९	७९
जहि जिण ए	१८	१०३	तत्र प्राग्वाटान्वय	४	५९
जाह कुंडु विहसंतो	५	१००	तत्र रैवतकाधीशः	७९	२८
जातः करिन्द्रोदुर	१७	२	तत्र लोलाकृति	५४	२७
जाना कृष्णपदात्	१३३	१२	तत्राऽऽत्मस्वामिनो	८१	२८
जाहू माऊ-साऊ	१७	६०	तत्रैकं राणक	६६	२७
जिणु तहि मंडल	३	९९	तत्रैव वीरघवल	१७६	१६
जिष्वा म्हेच्छपतेर	३८	८४	तत्रैवाकारयद्	७६	२७
जिम जिम बायइ	३	१००	तत्संभवलिमुवा	२१	८९
जीयाद् विजयसेनस्य	६	७८	तत्सत्यं कृतिमिर्	१०	३१
जीयामुः कवयो	८	१	तदन्तिके च नि.शेष	८६	२८
जीविउ ए सो	१७	१०३	तदन्वयाम्मोधि	३	२४
जुह्वन् पातरु	७०	३९	तदामज संयनि	६	२४
जैन धर्मपुरीचकार	२५	३६	तदिमं मौल्यिु मौलि	११८	१०
जेटउ जोइउ	१४	९९	तदीये शिखेर नेमि	८९	२८
शान-दर्शन-चारित्रं	९	९५	तन्नन्दनः कुमुद	१६	२५
ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः	२८	८३	तम.सर्वान्निने	१९	२२
जुवुरु उदुज	१६	१०५	तमहतमहं यद्वा	६९	६
जमि ठमि ए	७	१०२	तमेरुदा फरारोप	६४	३८
मिउ निधउ	९	१०१	तयोः प्रथमपुत्रो	८	५९
पद्वि मभि	७	१०१	तव यत्र शनपत्रं	४७	८५

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
तमु मुह दंसगु	५	९९	तेज पाल पालित	१५	६०
तमु सिरि पहिलउ	६	१०४	तेज पाल सरुल	६५	६४
तमु सिरि सामिउ	४	९९	तेज पाल सचिउतिलफो	२७	२५
तस्मात् कुमार.	२१	८३	तेज पाल ! वृपालधुर्य !	६६	३९
तस्मादरुमल	८	३४	तेज पालयशो	७३	३९
तस्मादनतर	२६	६०	तेज पालस्य विष्णोश्च	९	५५
तस्मादभूदजयपाल	११	२४	तेज पालस्य विष्णोश्च	१६	६०
तस्मादभूद	१२	३५	तेज पालेन पुण्यार्थ	६०	६३
तस्मान्नेत्रमुधाञ्जन	३३	३	तेज स्फूर्जितदीप	२५	३
तस्माद् भस्मीकृत	३५	३	तेजपालि निम्नविउ	१७	१०१
तस्माद् विस्मारित	१६	३५	तेजपालि गिरनार	९	९९
तस्मिन् काश्चनकोटिमि	२४	२३	तेजोवह्निहुताष्टदिग्	५१	५
तस्मै संयमिनामिनाय	५	८१	तेन भ्रातृयुगेन	६६	६४
तस्मै स्वरित चिर	५	७६-४	तेन मंत्रिद्वयेनाय	२९	६१
तस्य गर्भगृहोत्सङ्गे	४३	२६	तेना भुगेधर	७	९४
तस्य जगत्यां	५६	२७	तैस्तैर्येन जनाय	१६	३१
तस्य प्रिया प्रणय	२५	८९	तैस्त्रिभिः प्रथम	४३	८५
तस्य प्रिया मुद	११०	९	त्यजामि पापमाहार	१०	९५
तस्याऽऽजया	१४	७९	त्यागाराधिनि राधेये	१०३	२९
तस्यानुज	३१	९०	त्रिग चाचरि	३	१०४
तस्यानुजन्मा	५	२४	त्रिजगति यशसस्ते	३१	२०
तस्यानुजो विजयते	१३	६०	त्रिभुवनदेवी तस्य	५२	६३
तस्याऽभवजिर्मठ	२२	२५	त्वत्कीर्तिज्योत्स्नया	११	४२
तस्याऽभूतनया	९	७६-२	दत्ताल्लेकेऽर्थिलेके	१०९	९
तस्यैनाऽऽद्यमिमो	७४	२७	देते चेतसि सम्मद	७१	३९
तहि नयरद् उत्तर	१३	९९	दग्नेऽस्य वीरधरु	६	४७
तहि पुरि सोहिउ	१०	९९	दन्तौ धर्ममतङ्गजस्य	१५४	१४
तहि नयरद् पूरव	११	९९	दयिता ललितादेवी	९	४५
तादृक्कम्पन्यतिकर	३४	३६	दयिता ललितादेवी	४४	६२
तादृग्दानपरम्पराभि	२६	३६	दर्श दर्शमसद्य	६२	६
तीर्थेणा प्रणतेन्द्र	१	५०	दस द्रिसि प	५	१०२
मुझेभमीम	४	७८	दानं दुर्गनवर्गसर्ग	२६	२५
तेज पाल इनि	६१	६३	दानानि तानि	१९	८३

श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
दायादा कुमुदावलिरू	७	२१ देशोऽरण्यप्रदेशो	८०	७
दारिद्र्यदुर्दम	४	९४ दोषोऽनुष्णमुद्रितेऽपि	१६०	१४
दावद् ए दुक्खहं	४	१०२ द्वारे यत् किल	९८	२९
दास्यवर्त्तिन इवाऽऽस्य	५९	५ घंयुक-ध्रुव-भटा	३४	६१
दिग्यात्रोत्सववीर	१२१	१० धनमनवरत	५८	८६
दिग्यात्रोत्सववीर	११	१८ धनु धनु विमलडि	९	१०४
दिग्यात्रोत्सववीर	३	५६ धनु सु धवलह	२	१००
दिद्वय छत्रसिल	२२	१०२ धन्यः स वीरधवल	२८	२५
दियहि ए नर	११	१०३ धर्मध्यानमना	१२	९२
दिस(य ई) आय(ए)मु	२०	१०५ धर्मविधाने सुवन	११	५९
दिसि उत्तर कसर्मार	१	१०१ धर्मस्थानमिदं	८३	२८
दीपः स्फूर्जति	२६	२३ धर्मस्थानांकितामुर्वी	२४	६०
दीपः स्फूर्जति	४	४७ धर्माचिन्ति रुचित	३४	९०
दीप्तं दिसि दिसि	१८	१०२ धवल धय ए	१०	१०२
दुर्गः स्वर्गगिरिः	४	२१ धवलसुत सुरहि	३३	१०७
दुर्गः स्वर्गगिरिः	५	५४ धात्रीधुराण सुख	१५	२
दुविहि गुजरदेसे	१	१०० धाम्नां धाम	७४	६
दुष्टारिकोटि	३४	८४ धाम्नि स्वधाम्नैलं	१२४	११
दुर् दुर्ललितेन	८२	७ धाराधीशपुरोधसा	२०	८३
द्वयः कस्यापि	२३	१९ धाराधीरो विन्ध्यवर्म	३६	८४
द्वयः कस्यापि	२	४१ धारावर्षमुतोऽयं	४०	६२
द्वयते मगिमौक्तिक	१४	३१ धीराः सत्त्वमुगन्ति	१	७६-१
दृष्ट्या वपुश्च	११	९८ न किं स हरितुन्यता	८१	७
दृष्ट्या वपुश्च	११	५५ न कृतं सुदृतं	१	९५
देवः पङ्कजमूर्	३१	३३ नगराख्ये महास्थाने	४४	२६
देवः परं जिनयरो	१४	८९ नतारोमेपि	७९	७
देवः स वः	२	७८ नमस्ये निर्दृष्टाः	२५	२३
देव ! वप्रतिपन्थि	७	४० नमिवि चिरागड	१०	१०४
देव स्वनांय ! फटं	२७	३२ नन्नारीन्दुमुसी	२१	२
देव स्वनांय ! फटं	९	५२ न यस्य लक्ष्मीपति	११	३१
देवि ! त्वद्भिजित	८	९४ नरनारायणानन्दो	४०	९०
देवि ! प्रकाशयति	५	९४ न वदति परुषा	५७	८६
देवी सरोत्रासन	३९	६२ नागेन्द्रगच्छ	३२	९०

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
नाभुवद् कति	१४	७६-२	परमपदपुराण	४	१
नाभेयं नेमिनाथं च	३९	२६	परमेसर तिलेसरह	१	९९
नायलगच्छह	८	९९	परिवल्लु दल्ल	११	१०४
नितु नितु मुरसंध	१४	१०५	पर्यैपीदिसौ	३	७६
नियं शत्रुप्रवाद्रौ	१०	९८	पल्लव-कुल्ल	१९	१००
नियोगिनागेपु	१३	५०	पहिल्ल सांव	६	१०२
निर्गन्धप्रमे बोधारुप	४६	२६	पाण्डवः पास्तण्डिवेध	२६	३
निर्माप्याऽऽदिजिनेन्द्र	५	७६-२	पातालमूले पिहितं	४३	३७
निवसण विवु	३२	१०७	पाताले बल्लिनाज	३७	३७
नीजर ए चमर	१९	१०३	पापं पद्मजयन्	२	१
नीना वरां विपम	१२३	१०	पीनश्रीभुजयन्मो	२२	२
नीलनीलदकदन्वक	१२	६०	पीयूषसूर्य च	१	४६
शुक्लवा व्योमरक्षे	१७७	१६	पीयूषादिपि पेशला	१	१७
नृणां यपदप्रभयोर्	१५६	१४	पीयूषैः प्रणता	६५	८७
नेत्राणाममृताञ्जनं	२७	२०	पुण्यं प्रतार्पसिंहस्य	५९	२७
नेत्रव्यैरितिधीमवन्	८	९३	पुण्यश्रीभुवि	९	५७
नैवोत्तसमुट	८	८८	पुण्यस्य पापपटली	७	८८
नो चेद यथांति	१७	८९	पुण्यायाऽजयसिंहस्य	६४	२७
न्यग्यावत्यं गिरिति	४४	४	पुण्यासामः सकल	३३	३३
न्यास ध्यातनुनां	३	५२	पुण्ये गिरीशसिंहसि	१	९४
नृवग-त्रिदेवण	११	१०१	पुण्ये रंहेतु	६	१
पथानमेको न	२०	६०	पुरा कालमेध्रय	९४	२८
पद्य पौषशालाध	६३	२७	पुरा पादेन दैव्यारो	८	४५
पद्म भवमि	८	१०१	पुरुष पच्छिम	८	१०४
पद्मेवि सामिणि	१	१०४	पुरोत्तमे स्तम्भनका	३८	२६
पत्नी तारवाजायना	४	७६-१	पुण्यदन्ताविमौ	१३	९८
पद्मर्नदीनामिव	२०	२५	पुष्टार्त गूर्जर	१५	८९
पदं त्रिबयसाम्पदा	६६	६	पूजहि मागिक	४८	१०८
पद्मा पद्मपाथ	४३	४	पूज्यमेव सत्तवः स	९	५९
पद्माभिगमहृत्तेन	१४२	१२	टुलं कायनदिक्	१६९	१५
पद्माभिगमहृत्तेन	१८	१९	तमहि ए मुनिव्रज	१५	१०३
पद्मा पद्मादर्शना	१५२	१३	पोगे धारय	७	४९
परद्वेषेदभेनु	४	९५	पोगेपाउपुत्र	६	९९

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०
पौषशालाद्वितयं	३७	वाहिरी गढ	१२ ९९
प्रणमदमरप्रेङ्खन्	१	त्रिद्वैजसि गते	४७ ४
प्रतापतपनो यत्स्य	१०	विभ्राणं परितो	३४ २६
प्रतापस्याद्वैतं	८	वीजड नेमिर्हि	१७ १०५
प्रतिदिनमपि रौद्रेर्	८५	बोलावी संघट्ट	२० १००
प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशास्त्रं	१७१	मग्नः शङ्ख इति	१४० १२
प्रतीना नीतीना	१३६	मर्त्ता मोगमृतां	१० ४०
प्रत्याकारच्छगुरुदरी	९०	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	१३४ १२
प्रयादां प्रसरत्	३	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	९ १७
प्रथमं धनप्रवाहैर्	१५	भवति हि विभवो	१६ ४३
प्रथमादर्शे	१५	भवद्भुजभुजङ्गोऽसौ	३ ४०
प्रद्युम्नशिखरे सोम	९१	माग्यम् किमसावस्तु	१८ २२
प्रमूतमूतराजस्य	६०	मास्वप्रभावमधुराय	३५ ९०
प्रवर्तमानेऽत्र	६६	मित्रा भातुं	४ ४५
प्रसादाद्वादिनाथस्य	१७९	मित्रा भातुं	१७ ८२
प्राग्वाटगोत्रतिलकः	३	मृगच्छमस्तदनु	१० ३५
प्राग्वाटवंशव्यञ्ज	१८	मृमारोद्धृतिपुर्व	३५ ३६
प्राग्वाटान्वयमंडनं	१	मृमीमारमथो वमार	३१ ३६
प्राग्वाटान्वयमंडनै	५०	मृयांस एव	१४ २५
प्राग्वाटान्वयवारिधौ	५३	मृपा भूवोऽग्राहिल	११ २
प्रासादैर्गंगना	१	मृगुनगरमौलि	४२ २६
प्रीतो वस्त्रापथमुवि	९५	मेजे तेजोगगन	२७ ३
प्रेक्ष्यास्थैर्यं प्रनुप्रीति	२९	भैमीव नैयध	४८ ३७
प्रेयस्यपि न्यायविदा	९	भोगेन्द्रस्वदमुजेन	९ ४०
वदः सिन्धुवसुन्धरा	२२	भ्रमन्ती मृशमन्याय	१२ २२
वन्धुः कनीयान्	१२	धातः ! पातकिनां किमत्र	३ ४५
वन्धुः गोत्रैकगुरु	१५०	ध्राना वातायन इव	१०४ ९
वलि-कर्ग-द्वीपि	१२	धूमद्विप्रतिविम्ब	९६ ८
वहं धायरिहि	४०	मंदिर धाहर	२३ १०६
वाढे प्रौढयनि	९	मज्जन्तीमयनी	१६३ १५
वाने गीर्वांगमोष्टी	३२	मज्जन्तीमयनी	२१ १९
वार संवच्छरि	३९	मगद्वरपगवग	६ १००
वालः धीमूत्राजोऽयम्	२९	मत्तिरुत्पन्ना यस्य	४१ ३७

मन्थोर्व्यधिन	श्लो० २५	पृ० ८३	यः [क्षी]तिमा	श्लो० २	पृ० ५९
मन्दच्छदसि	५१	८५	यः प्रत्यर्थिक्षितिपति	१३८	१२
मन्येऽस्मिन्नमृता	७०	२७	यः शत्रुञ्जयशेखरं	५६	३८
मन्त्रदेव इति	११४	१०	यः शम्भुशिखरे	९२	२८
मन्त्रदेवसचिवस्य	५८	६३	यः शैशवे	४५	६२
मसृणधुसृणपद्मे	५	१७	यः शौचसयमपटुः	३२	८४
महतद् तेजपाल	२६	१०६	यः स्फुरन्मेदुरामोदे	५५	२७
महतिर्हि जायते	१८	१०५	यः स्वीयमातृ	३७	९०
महिर्मण्डलि किय	१३	१०५	यच्चाणक्याऽमरगुरु	४८	६२
माधुर्यधुर्यमधुलोम	१०२	९	यत्कीर्तिप्रसवैः	१२२	१०
मा भूमदभुवनेऽपि	१४५	१३	यत्कीर्तिः स्वैर	१३१	११
मा भूमदभुवनेऽपि	१९	१९	यत्कीर्तिः स्वैर	१४	१८
मालवमंडल	१०	१००	यत्खद्गक्षत	८८	८
मालिन्यं सुमुचे	१४४	१३	यत्खद्गदण्ड	७५	७
मुकुलितकमलोदय	१२	४२	यत्खद्गवल्ली	९	३५
मुक्तामयं शरीरं	२२	६०	यत्पद्मजुगुगं	९३	८
मुक्ता विप्रकरा	४१	६२	यत्प्रारिक्षमगोत्र	३६	४
मुष्णानि प्रसभं	१	५६	यथा प्रतिष्ठां	९	८२
मूर्ति वपु	४४	१०७	यद्भक्तपटनोत्सृष्टैः	१७	३५
मूर्ध्या विहितः	५	९५	यदाननसरोजने	३२	३६
मूर्ध्नामिह वृष्टः	६४	६४	यदानप्रभय	९४	८
मूर्ध्ना कर्तितल्लताततेः	७०	६	यदानोदकजात	१४	३५
मूलगा पापारध	२८	१०६	यदिस्तुम्भि-मुल्लादि	१४६	१३
मूलधुब्धुगिरि	१२७	११	यद् दुरीक्रियते रम	३०	३३
मेघैर् रचिमाननोति	३	९३	यदोर्मण्डल्युग्मडली	८९	८
मेघैर् पक्कम्पने	७०	३	यथात्रासु तुग्मा	२०	२२
मोहो मोहयिषा	७५	३९	यद्भक्तपुत्र	२	९४
मौनिकमुनि	४१	४	यद् वासन्ध	७	९५
यं मातृमणि	२२	८९	यन्निर्मापिनदेय	६२	३८
यं रिजुं वपुषः	२	४७	यत्तकार नवोदर	४१	२६
यं करोति स्व	१२	८२	यत्नीयानां प्रभय	१०८	९
यः कर्माणि च	३९	८४	यत्मादभुवने	१५९	१४
यं कानरहित	३६	९०	यन्निर्मा दाननिधान	९५	८

श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
यस्मिन् घर्म	२३	२३	येषां मूर्तिरसौ	६ ९३
यस्मिन्नुत्तर	५०	५	येषामशेषाधिपतिः	६ ८१
यस्मिन् पश्यति	६७	६	येनैन्द्राजित्चला	१५ १८
यस्मिन् विश्वजनीन	१३	३१	रंगिहि ए रमइ	२० १०३
यस्मै रश्मिमरो	२	३४	रक्षादक्षो दिवि	४ ३४
यस्य न्यत्रितचाप	८६	७	रक्ष्यां रक्षितुमक्षमे	४८ ४
यस्य भूः किमसा	३	५४	रणे वितरणे चात्र	१४ २२
यस्य सधनि सदा	५८	५	रक्तः सद्रतिमावभाजि	११५ १०
यस्याग्रजो	३	९७	रक्तः सद्रतिमावभाजि	५० ५७
य(त)स्याममूः समभवद्	४	२४	रादमई मगहरण	१४ १०१
यस्याऽऽजनं	२८	८९	राका ताण्डवितेन्दु	८ ३०
यस्यानीरुवधूमि	५	९३	राजा चामुण्डराज	१९ २
यस्या मुने	२६	८९	राजा श्रीवनराज	९ २
यस्यादीः प्रनिपादितो	१६	८२	राजु करइ तह	४ १०४
यस्यासिरम्भोद्	३८	३७	राहौ गृहीतोगकरै	३१ ८४
यस्योपदेश	११	७९	रिपुव्रजेग्रामो	७२ ६
यस्योर्वीतिलकस्य	७	३०	रिपुमर्षदिरु	४६ १०७
याचत्तपगोत्र	७२	३९	रूपा सरिसड	२९ १०६
यात्रापर्वणि रैवत	१४८	१३	रोद कन्दररति	३५ ६१
या प्रार्थना याचरु	२९	२०	रोदःक्षीगेदनीरैः	२९ ३
या श्रीः स्वयं	१०	४२	लक्ष्मी घर्माङ्गयोगेन	१५ ७६-३
युक्तः.....	२	७६	लक्ष्मीर्न्याचच्छ्रेष्ठ	८ ५५
युद्धं वारिधिरप	२३	३२	लक्ष्मामादृष्टि	१५ ४२
युद्धपर्वणि कदाऽपि	९१	८	लक्ष्म्या मानुषजन्म	१ ९१
युद्धपर्वणि कदाऽपि	६	१७	लभन्ते लोकनः	६१ ८६
युद्धोऽमरमण्डलाग्र	२८	३	लज्जितादेर्वीरान्ना	१० ५५
येन व्यधायित	५८	३८	लज्जितादेव्याः पन्याः	७२ २७
येन स्तम्भनकाधि	१७४	१६	लवणप्रसादमुत्र	७ ४५
येनाकारि तमोनिकारि	५५	३८	लान्त्यप्रवृत्त	१२५ ११
येनऽऽमनः स्वपन्यास	८७	२८	लान्त्यसिद्धमनय	५५ ६३
येनाऽत्रैव नियधुम्भि	६९	२७	लान्त्याज्ञ इति	११३ ९
येनाग्निर्गन्निगन्मा	११	२२	लान्त्याज्ञ इति	४ ५७
येनोऽयन्तगिरि	६०	३८	लान्त्याज्ञं च	५ ७८

	श्लो०	श्लो०		श्लो०	श्लो०
लक्षणसंख्या व	७	१	विद्या यथापि वैदिकी	९	४९
दृष्टिगः प्रथमस्तेषु	२२	१६	विद्येते ह्यविद्यौ	५०	३७
वेदे सारत्वती	१	५९	विधिवद् वाक्येयं	१०	८२
वेदग्रन्थौलिङ्गिभिरु	२४	२५	ब्रह्मैव पयोधि	१४	५०
वेदोऽयं प्रविनोऽति	९८	८	विमुक्ता-विक्रम	२	५४
वेदो विधितयविदितः	५	३४	विमुक्ता विक्रम	५	९८
वदसादी पुत्रिमह	१०	१०१	विमलिहि ठमियत	७	१०४
वक्त्रे निर्वासनाज्ञा	११	५३	विरचयति वस्तुपाल	१४	६०
वक्त्रा ए सत्त	२	१०२	विद्वत्ताया पाशे	४९	५
वदनं वस्तुपालस्य	३	७६-४	विद्वत्स्य दुष्कालवरोन	३३	८४
वरदे ! कल्पवन्ति ।	९	९४	विरोक्ते रैवतकस्य	८५	२८
वर्षायाम् परितुष्ट	३३	२०	विश्वस्मिन्नपि वस्तुपाल !	१७	२२
वृक्ष्म्यां पुण्यटन्वधी	७१	२७	विश्वस्योपवृत्तिवत्	२१	३५
वसिष्ठानिष्टाया	४८	८५	विश्वानन्दरुर सदा	१०५	९
वसुदेवस्येव सुत	४२	६२	विश्वानन्दकर सदा	१	७६
वस्त्रपात्रि वर	१५	१०१	विश्वेऽस्मिन् कस्य	७	५२
वस्त्रपात्रु तसु	१२	१०५	विश्वेऽस्मिन् क्रिड	३८	९७
वस्तुपात्रनिर्माण	१	५८	वीर दक्षिणत	७५	२७
वस्त्रापये जगयां	९३	२८	वीरधीवीरपाणि	५३	३८
वादेवतां यदि	२	८८	वेपथु वसुध	१७	९९
वादेवताचरण	४०	३७	वैदुष्य विपनाप्रये	५२	८६
वादेवतावदन	१९	७६-३	वैर विमूनि-भायो	३	४७
वादेवतावमतरस्य	४६	८५	व्यययन जयसिंह	१९	३५
वादेऽपि सदा	४२	३७	व्याघ्रोन्म्य(पन्थ)	४५	२६
वात्रध्वजिनवात्रि	४५	४	व्याघ्रान् पीपधराजालना	१७३	१५
वापं तस्य	३६	२६	व्यातचक्रमंरुद्र	१६७	१५
वसिष्ठ साधुसारेन	९	९८	व्योमो सङ्गरुध	२९	३३
वाक्पदं वस्तुपालस्य	४	५२	वीरो भगवानात्रानि	६७	६४
वाक्पदं वस्तुपालस्य	४	३०	वक्ति कात्रि न	५	७९
वाक्पदस्य मन्त्रेन	२	४६	वादे पद्वितीयेति	१३	४०
वाक्पदस्य मन्त्रेन	२	५५	वादे वाक्पदस्य	३५	१९
वाक्पदस्य मन्त्रेन	२	५८	वादे वाक्पदस्य	१८	४३
विनीतोऽयं स्य	३६	३६	वादे वाक्पदस्य	५२	५

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०
शङ्खं शार्ङ्गधरस्य	७	श्रीनेमेखिजगद्भर्तु	३
शत्रुघ्नयन्गोस्तक्षे	७३	श्रीनेमेखिजगद्भर्तु	३
शत्रुघ्नये भवपयोधि	१६५	श्रीनेमेखिजगद्भर्तु	३
शत्रुश्रेणीमाल	३६	श्रीप्राग्व्याटकुलेऽत्र	२
शास्त्रार्थवारिमर	६	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	६३
शिन्यस्तस्य च	१३	श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्ति	२
श्रीनांशुप्रतिवीर	१२	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	२५
शुभांशुर्मुनि	३७	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	१०
शत्येषु द्विपतां पुरेषु	५	श्रीमल्लदेव इति	४९
शरो रणेषु	१३	श्रीमल्लदेवः श्रित	१०
शैवेष्टेपविधायिनीमपि	५	श्रीमल्लदेवपौत्री	१०
शोभामिमूत	१	श्रीमद्विजयसेनस्य	१२
शोषः सैप जवाद्	४६	श्रीमांस्ततोऽजनि	१५५
शौण्डीरोऽपि	२	श्रीमालखेन्द्रमुमटेन	१७५
शौर्यगोर्जरिचतां	८	श्रीसुजनामा	१३
श्रावे हंदावडा	४१	श्रीयुगादिप्रभोर्	३३
श्रियं चौलुकयानां	१३	श्रीरङ्गमूर्धश	९
श्रिया प्रीतया	७	श्रीरैवते निर्मित	७
श्रीकुमारविहारेऽत्र	६७	श्रीवर्धमानः शमिनां	२
श्रीक्षेमराज इति	१८	श्रीवस्तुपाल ! कङ्किकाल	२२
श्रीगर्वाम्पमि	७	श्रीवस्तुपाल ! कङ्किकाल	३
श्रीमधंङ[प]संभवः	६२	श्रीवस्तुपाल ! क्षितिपालमुद्रां	२८
श्रीनैनाशासनवनी	७०	श्रीवस्तुपाल ! जितवाल	१४
श्रीनेत्रपालजनयस्य	५६	श्रीवस्तुपाल ! तप	७६
श्रीद-श्रीदयितेधर	२	श्रीवस्तुपालपुत्रः	४६
श्रीसुरराजः प्रथमं	३३	श्रीवस्तुपाल ! भवना	१६
श्रीनागेश्वरमुनीन्द्र	१६	श्रीवस्तुपालमन्त्रीदोर्	३
श्रीनागेश्वरकुले	४	श्रीवस्तुपालव्यशासा	३५
श्रीनामय ! मनोरथाः	२	श्रीवस्तुपाल संप्रति	४
श्रीनेमिर्नरनीउ	३	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	२४
श्रीनेमिरसिकायाध	७४	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	३
श्रीनेमिरसिकायाध	२	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	८
श्रीनेमेखिजगद्भर्तु	१	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	११

श्रीवस्तुपालस्य	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
श्रीवस्तुपालस्य	८०	२८	स एष नि शेष	३६	३३
श्रीवाससद्मकर	५५	८६	सङ्ग्राम क्रतुभूमि	२०	३२
श्रीवासान्बुजमानन	१८	८९	सङ्ग्रामसिंहवृत्तना	१	४१
श्रीवीरधवलमूर्तिर	१६	१८	सङ्ख्यादभुत	७	७८
श्रीवीरशासन	४९	२६	सद्गोऽधिरोहनिह	१४७	१३
श्रीवैद्यनाथगर्भ	३	७९	सच्चिप्रवर कश्चित्	३९	३७
श्रीवैद्यनाथवरवेत्मनि	५०	२६	सत्कर्मनिर्माणरते	२७	८३
श्रीगुणयशूङ्ग	४८	२६	सत्तीर्थस्य सुराश्रितेन	२	८१
श्रीशानुजयदौल	५७	३८	सय ब्रुवे	५९	८६
श्रीसङ्घमर्तुसचिवे	३९	९०	सयाभिधस्तदनुजो	२९	८९
श्रीसुव्रतपदाम्भोज	१०	९३	सदा यदाशी	१८	८२
श्रीसोमेश्वरदेवश्	७७	३९	सद्वशजातेन	१४	८२
श्रीसोमेश्वरदेवस्य	७३	६५	सन्तापशान्ति	१५	८२
श्रीसोलशर्मा विमले	३५	८५	सततन्तुप्रपञ्चेन	१८	३५
श्रुत्वेति मुदितहृदय	७	८१	ससलोकचरी	४७	३७
श्रेय श्रीमुनिसुवत	११९	१०	स मङ्गल वो	१	२४
श्रेय श्रेष्ठवशिष्ठ	१	३४	समजनि जिनसेवा	१०१	८
श्रेय स वीरधवल	३२	६१	समुद्रविजय सिवदेवि	१३	१०१
श्रेय सिन्धुरमुनया	२१	३२	समूल्सु मूलयितु	२	२४
संघाद्विषु संघेण	३२	३	सम्पूर्णं भुवने	५४	३८
संघु रहिउ	३	१०१	सयल वित्ति	१२	१०१
संज्ञे नृपतिराते	४३	१०७	सरस्वतीकलिकला	२५	२५
सताप यप्रतापस्य	५६	५	सर्वत्र भ्रान्तिमती	११	५०
सदिष्टं तव वस्तुपाल !	७१	६	सर्वत्र वर्तता कीर्ति	६८	६४
समेतादिशिर	२	४९	स व श्रेय शानुजय	१	२१
संयोजितन मणिमण्डित	१	५५	स वैनुष्ट वुष्ट	१३	२२
संल्लानामनुनटवन	१४३	१३	स श्रीजिनाधिपति	५	२१
संसारव्यग्रहरतो	७३	६	स श्रीजिनाधिपति	१	५४
संसारसर्वस्वमिदं	५	९१	स श्रीमानुदयाचलो	१०३	९
संसारवर्तिनपो	३	६७	स श्रीतेज पाल	६	४५
संसारं सुम्ह्यु	४	९३	स श्रीतेज पाल	४७	६२
संसारमाचरित	१०	९२	सा कुत्रापि युगत्रयी	५	४९
	२४	८९	साशाद मदा परं	१९	३१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
साक्षाद् ब्रह्म पदं	१२	५३	सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः	१२०	१०
सानिधि अंवाद्य	३५	१०७	सोऽयं मन्त्री	६	५४
सामंतसिंहसमिति	३८	६२	सोऽयं सूरवदेवी	१२	९८
सामियनेमिहस्मार	७	१००	सोलः सलील	८	८२
सामियसामल	४	१०१	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	४६
साम्राज्य चतुरर्णवी	७	९३	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५३
सिंदुवार-मंदार	२१	१०२	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५५
सिद्धक्षेत्रमिति	२	६७	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५७
सिद्धान्तोपनिष	७	७९	स्तम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे	५३	२७
सौसमि सिबलि	१८	९९	स्तम्भनपुर-रैवतगिरि	१६४	१५
सीताकुक्षिसरो	४६	३७	स्तोतव्यः खल	५	५२
सुतस्तस्मादासीद्	२७	६०	स्तोत्रं नामिनरेन्द्र	७७	२८
सुमकर ए ठविउ	३	१०२	स्तोत्रं श्रोत्रसायनं	१०	९४
सुरखीणां नेत्रं	१३	३५	स्थाने स्थाने	३०	८४
सुनतकमनमस्कृति	६५	३८	स्थापयन् सिंहलग्राम	४७	२६
सूनुस्तदीयोऽजनि	७	२४	सूर्जर्जर्जरेवस्म	१४	२
सूनुस्तयोरजनि	२७	८९	स्वकुलपुरु.....	१८	७६-३
सूरो रणेपु	४	१७	स्वक्रान्तसिन्धुपति	२४	३
सूर्याचन्द्रमसी	१०	२	स्वच्छन्द हरिशङ्करः	६	२१
सेषं सेषं स खल	३४	३३	स्वस्ति श्रीबलये	१२	३१
सेनानीर्विदधे	३५	८४	स्वस्ति श्रीनलये	१	५१
सेयं पुरे धवलके	२१	८०	स्वस्ति श्रीवल्लिसालाय	१	३०
सेगलन्ति पयः समुद्रति	३७	४	स्वस्ति श्रीवस्तुपालाय	१	४०
सेवालन्ति पयः समुद्रति	८	१७	स्वस्ति श्रीव्योमदेशा	७४	३९
सैन्यप्रकृप्तिनधरा	५७	५	स्वयं विनम्रेषु परेषु	११	३५
सोऽपि बळे	१२	५०	स्वर्गं यद्गुरुनैय	६१	३८
सोमनदेउ सुतहारो	३०	१०६	स्ववंश्यमूर्तिभिः	९६	२८
सोमामियस्तदनुजः	१२	८८	स्वविरोधिनीं शुचिर्	५१	२७
सोमेश्वरदेव इति	४२	८५	स्वलीयः श्रयति स्म	२३	२
सोमेश्वरदेवकवे	४४	८५	स्वामिन्! मृष्यहरे	६	९१
सोऽयं तस्य	६	५७	स्वैर भ्राम्यतु नाम	२४	३२
सोऽयं धानी	४०	९७	स्वैरेव प्रहर्तैर्	२४	३६
सोऽयं पुनर्दाशरथिः	३७	६१			

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
हंहो रोहण ! रोहति	२६	३२	हरिमण्डप-नन्दीधर	२	५३
हकारहु वर	३८	१०७	हर्षादसौ हस्ततु	२०	८९
हत्वाऽपि कान्तिलव	११	८८	हस्ताग्रन्यस्त	११७	१०
हन्तुं जनस्य दुरितं	६	९४	हस्ताग्रन्यस्त	८	५७
हरसवस्तिग	२	१०१	हुत्वा सदप्यरचितेषु	२३	८९
हरिमण्डप-नन्दीधर	२	५	हतनयनमुखैर्	३	८१
हरिमण्डप-नन्दीधर	२	४७	हृद्योऽभून्मुशालध्वजः	५५	५

विशेषनामानुक्रमणिका ।

	पृष्ठ		पृष्ठ
अंबय (मंजो)	१००	अम्बिका मयन (देवतामन्दिर)	२८
अङ्ग (रुपविशेष)	५	अरसीह (ग्राम्याट जा० महा० बारादेवनुन)	६६
अचलेश्वर (शिवमन्दिर)	६७	अर्कपालित (ग्राम)	१५
अचलेश्वर (अचलेश्वर, शिवमन्दिर)	१०४	अर्कपालितक	२७, ३८
अजयपाल (चौलुक्यवृत्ति)	६, २४, ३६, ८४	अर्जुनमडी (स्थलविशेष)	६
अजयसिंह	२७	अर्णोराज (स्थापत्यविशेष)	५, ३६
अजित (सपाधिपति)	१०१	अर्णोराज (चौलुक्यवृत्तीय)	६, ७, २५, ३६, ६०
अजित (अजित, सपाधिपति)	१०१	अर्जुन (पर्वत)	६१, ६२, ६७
अष्टावय (अष्टावयपर्वत)	१०१, १०२	अर्जुनगिरि	७६-१
अणमसर (अनुपमा सरोवर)	१०५	अर्जुनचल	२६, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६५, ६७, ६८, ७२, ७३, ७६-१
अणहिलपत्तन (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	७५	अवलोकनाशिश्वर (रत्नगिरि शिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
अणहिलपाटक (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	२, ६५, ८८, ९६	अवलोकनाशिश्वर (अवलोकनाशिश्वर)	१०२
अणहिलपुर (गूर्जर राजधानी)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६५, ७५, ७६-१, ७६-३	अश्वराज (आशाराज, मनी)	१० १८, २१, ३७, ५७, ५९, ६०, ६४, ७६-२, ८६, ८९
अणहिलपुर (अणहिलपुर)	६८, ६९	अश्वघातारतीय	१५
अनुपमदेवी (तेजमालपत्नी)	२८, ६३, ६५, ७१, ७४, ७६-१, ७६-२	अष्टापदमासाठ (स्थापत्यविशेष)	५८
अनुपम सरोवर	४७	अष्टापद महातीय (स्थलविशेष)	४४, ४६, ४९, ५१, ५४, ५६
अनुपमा (अनुपमदेवी, तेजमालपत्नी)	६३	अष्टापदशैल (पर्वत)	५१
अनुपमासर (सरोवर)	२८	अष्टापदोद्धार (जिनमन्दिर)	२७
अन्ध (रुपविशेष)	५	अन्नराज (अन्नराज)	१०७
अमरकुमार (साहु राहल्लुन)	६९	अह्मणादेवि (पूर्वसिंहपानी)	६३
अमरसुरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४	आमिग (ग्राम्याटजा० महाजन)	६६
अमरचन्द्रसुरि	१३, ६५, ७६-३, ७९, ९०	आंनुय (ग्राम० जा० धं०)	६७
अमरेश्वर मण्डप (इन्द्रमण्डप, स्थापत्यविशेष)	१५	आखण्डलमण्डप (इन्द्रमण्डप)	२८
अम्पड (राणक)	२७	आखीग्राम	६८
” (महामन्त्री)	३८	आमिग (विद्वान्)	८३
” (मण्डलेश्वर)	३९	आणंदसुरि (नागेन्द्रगच्छीय आनन्दसुरि)	४५, ४८, ५१, ५४, ५६, ६५
अम्बाशिश्वर (रत्नगिरि शिखरविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	आनंदसुरि (आणंदसुरि)	२०, ४६, ६४, ७६-३, ७९
		आनन्दचन्द्रसुरि	१३

	४४		४४
कान्हडदेव (राजकुमार)	६७	खोम्यसीह (प्रा० शा० धे०, देवगुप्त)	६६
कामंदकि (नीतिशास्त्रकार)	६३	खेडा (साहु, बरहुडिया)	६८
कायस्थ (वंश) ४६, ४७, ५०, ५३, ५५, ५७, ७६-३, ९६		गउरदेवि (खणसीदमुता)	७२
कालमेघ (क्षेत्रपाल)	२८	गह्ना (नदी)	८४
कालमेघतर (स्थानविशेष)	१००	गयंद (वृद्ध)	१०२
कालिदास (कवि)	२०	गया (तीर्थ)	८४
काल्हण (ओझवाल्ला० धे०)	६७	गागा (ग्रामाटकारी)	६३
कासहद्द (ग्राम)	२७, ६६	„ (प्रा० शा० ठुर)	६५
काँर (उपविशेष)	३, ६	गाजण (श्रीमाल शा०)	६६
काँसरउली (ग्राम)	६६	गाणउलि (ग्राम)	७६-३
कुङ्कण (देश)	३६	गाणेभरदेव (शिवमंदिर)	७६-३
कुमरादिवि (कुमारदेवी आशाराजपत्नी)	१०७	गिरनार पर्वत)	९९, १००, १०२
कुमरपाल (कुमारपाल, राजा)	१००	गुज्जर (देश)	१००
कुमरविहार (जिनमंदिर)	६८	गुणचंद्र (प्रा० शा० धे०, वीरगुप्त)	६६
कुमरसरोवर	९९	„ (श्रीमाल शा० धे०)	६६
कुमरसिंह (घनधार)	७६-३	गुणपाल (भाण्डगारिक)	७६-३
कुमार (कुमारधर्मा, विद्वान्)	८३, ८४, ८५, ८७	गुरजर (देश)	९९, १००
कुमार देवी { (आशाराज पत्नी) २५, ३७		गुर्जर (देश)	७६-१ ८२ ८७
{ (ठडुराणी, आशाराज पत्नी) ४४,		गुर्जेरभर पुरोहित (सोमेश्वरदेव)	४५, ५०
४६, ४८, ५१, ५३, ५५, ५९,		गुलेचा गोत्रविशेष)	८१
६५, ७२, ७३, ७४, ७५,		गूगलिया { (ज्ञातिविशेष)	१०४, १०६
७६-२, ७६-३, ७६-४, ८९		गूगुलिया }	
कुमारपालदेव (चौडव्यवृत्ति)	५, ६, २४, ३६,	गूजर (देश)	१०४
	६१, ८४	गुजरात (देश)	१०४
कुमारविहार (जिनमंदिर)	२७, ६९	गूजेर (देश)	२२, ३७, ६२, ८८, ८९, ९०, ९२, ९४
कुमारसिंह (घनधार)	४६, ५५, ५८	गूजेरकर्णिका (गूजेर राजपानी)	१५
कुरु (उपविशेष)	५६	[गूजे] रत्ना (मङ्गल)	६५
कुलधर (श्रीमाल शा०, बयडुराण)	६६	गूजेरमङ्गल	४४, ४६, ५१, ५४, ५६
कुणराज (परमार वृत्ति)	६२	गूजेरराजधानी (अणहिल पाटक)	२, ३७
केली (आशाराज मगिनी)	७६-२	गोगस्थान (ग्राम)	८४
केल्हण (घनधार)	६५	गोसल (प्रा० शा० धे०)	६६
कोङ्कण (देश)	६१	„ (ओझ० शा० धे०)	६७
कोला (ग्रामाट शा० धे०)	६६	„ (साहु बरहुडिया)	६८
कोङ्कण (कुङ्कणपति रुप)	८४	गौड (उपविशेष)	५
कोङ्कणपति (उपविशेष)	६	चंडप (मंत्री)	८, २१, २५, २८, ३७, ३९, ४०
कोङ्कणी (स्त्रीविशेष)	६	चंडप (मंत्री, ठुर)	४४, ५९, ६४, ६५, ६९, ७०,
कोटिल्य (चाणक्य)	७६-४	७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१,	
क्षेमराज (चाणक्य रुप)	२	७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	
खैमायति (नगरी)	१०६	चंडपाल (चडप)	४६, ४८, ५१, ५३, ५५
खांराण (प्रा० शा० धे०, जेजाण)	६६	चडपसाद (मंत्री, चडपण)	८, २१, २५, २८, ३७
खोम्यसिंह (प्रा० शा० ठुर)	६५		

पृष्ठ

पृष्ठ

चंडप्रसाद (मन्त्री, ठकुर)	५४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६, ५९, ६४, ६५, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	जयसिंहदेव (चौलुक्यवृषति)	४, २४, ३५
चंडेश (चण्ड)	७५	जयसिंहसूरि (वनि, जैनाचार्य)	३८, ३९
चंडेश्वर (सुनवार)	६५	जयदिव्य (रूपविशेष)	७६-४
चंद्रावती (पुर, पुरी, नगरी)	७, ६३, ६५, ६७, १०४, १०५	जसकर (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७
चंडावलि (चन्द्रावती नगरी)	१०८	जसहय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
चाणन्य (कौटिल्य)	६२, ६३	जसदेव (ओइसवाल ज्ञा० श्रे०)	६७
चान्द्र कुल (गच्छ)	८०	जसरा (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आम्बुयपुत्र)	६६
चापलदेवी (मह, चण्डपत्नी)	७४	जसवीर (शम्भाट ज्ञा० श्रे०)	६६
चापोत्कट (राजवंश)	२	जाङ्गल (देस)	५, ६
चामुण्डराज (चापोत्कट रूप)	२	जाङ्गली (स्त्रीविशेष)	६
चामुण्डराज (चौलुक्यवृषति)	३, २४, ३४, ८२	जाला (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, जिणदेवपुत्र)	६६
चारोप (ग्राम)	६९	जालू (वस्तुपाल तेजपालभगिनी)	६०
चाहिणि (साहु जिणचन्द्रभार्या)	६९	जावडि (ग्रामराटवक्षीय)	१५
चौलुक्य (चौलुक्य, राजवंश)	२४, ३६, ५९, ६०, ६५, ७६-४, ८३, ८४, ९३	जावालिपुर	६८, ६९
चौड (रूपविशेष)	५	जिणचंद्र (साहु राहवपुत्र)	६९
चौलुक्य (राजवंश)	२, ६, २५, ३४, ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६, ६०, ६१, ६४, ६५, ८२, ८३, ९७	जिणदेव (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
चौलुक्यपुर (अणहिलपुर)	२६	„ (प्रा० ज्ञा० श्रे०, पाहुयपुत्र)	६७
जगदेव (ध्रीमाल ज्ञा० श्रे०, आसलपुत्र)	६३	जिणदेवसूरि (आचार्य)	९६
जगदीह (ग्राम्भाट, ठकुर)	६५	जीदा (ग्राम्भाट श्रेणी)	६६
„ (ओइस० ज्ञा० महा०, आवोपनपुत्र)	६६	जिगण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, जसहयपुत्र)	६६
जगम, (ग्राम्भाट ज्ञा० श्रे०, जसवीरपुत्र)	६६	जेजा (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
जङ्गल (रूपविशेष)	६	जेजदेवी (वीरभवलपत्नी)	१६
जयंतिसिंह (वस्तुपालपुत्र)	४५, ४६, ४७, ५१, ५३, ५६, ६२	जैत्रसिंह (जयंतिसिंह, वस्तुपालपुत्र)	५५, ५७, ६२, ६४, ७६-२, ९८
„ (कायस्थ)	९६	„ (धुव, कायस्थ)	४६, ५३, ५५, ५७, ७६-३
जयतलदेवी (वीरभवलपत्नी)	२६	जोगा (मह, ओइसवाल ज्ञा० श्रे०, सलवणपुत्र)	६६
„ (जयतिसिंहभार्या)	७२, ७४	झालहणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	७२
जयतिसिंह (मह, वस्तुपालपुत्र)	४४, ५५, ७४, ७६-३	झालहण (छुडर, भोलकातील)	७४
„ (रामपुरीय, धुव)	४७, ५०	झकाउवाणि (ग्राम)	१०७
जयतसीह (मह, वस्तुपालपुत्र)	६९, ७०	झवाणि (ग्राम)	१०७
जयदेव (साहु, वरदुधिया)	६८	झवाणी (ग्राम)	६६, ६७
जयथी (चण्डप्रसादपत्नी)	८, ७६-१, ८८	तारंगक (पर्वत)	७५
जयसिंघ (चौलुक्यवृषति)	१००	तारंगमठ	६८
		तिजपाल (तेजपाल)	१०५, १०६, १०७
		तिहुणदेवि (ठकुराणी, धरणिगभार्या)	६५
		नुरष्क (रूपविशेष)	३
		नुरस्क (रूपविशेष)	६
		तेजपाल (मन्त्री, आशाराखपुत्र)	१०, १३, १४, २१, २५, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ३९

पृष्ठ		पृष्ठ
तेजःपाल (महं) ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ६०, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ८६, ९०, ९६, ९७	घणदेव (भीमाल ज्ञा० श्रे०, सुमित्रपुत्र)	४४
तेजपाल (महामात्य, महं) ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ९६, ९९, १०१, १०५, १०७	घणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	६६
तेजलपुर (ग्राम)	घनदेवी	७२
त्रिपुरप्रासाद (शिवमंदिर)	"	६०
त्रिभुवनदेवी (ग्राम्वाट, धरणिगपत्नी)	घणपाल (ओइस० ज्ञा० श्रे०, महेश्वरपुत्र)	६७
त्रिभुवनपाल (अध्वराजभ्राता)	घणिया (श्रा० ज्ञा० श्रे०, जमकपुत्र)	६७
थिरदेव (भीमाल ज्ञा० श्रे०)	घणेश्वर (साहु राहुवसुत)	६१
दक्षिण (रूपविशेष)	घरणिग (ग्राम्वाट, गागावसुत)	६३
दर्मवती (नगरी) १६, २६, ४४, ४६, ४८, ५४, ५१, ५६	" (श्रा० ज्ञा०, ठकुर)	६३
दाक्षिणात्या (स्त्रीविशेष)	घर्कट (ज्ञाति)	६६
दामोदरहृद (स्थानविशेष)	घर्मदासगणी (आचार्य)	७८
दुर्लभ (चौलुक्यरूपति)	घर्माभ्युदय (महाकाव्य)	७९, ९६
दुगसरण (श्रा० ज्ञा०)	घवल (चौलुक्यवंशीय)	६७
देउलवाडा (ग्राम)	, (मनी)	१००
देदा (भीमाल ज्ञा० श्रे०)	घवलक (नगर)	१५८०, ९९
देपाल (मनी)	घवलक "	२६
देल्हण (श्रा० ज्ञा० श्रे०)	घवलकक "	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
" (ओइस० ज्ञा० श्रे०, सीलपुत्र)	घांघल (सुधार)	६५
देल्हा (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	घांघा (रूपस० ज्ञा० महा०)	६६
देल्हुय (श्रा० ज्ञा० श्रे०, सातुयपुत्र)	घांघलदिधि (घावलदेवी, सोमनरेन्द्रमाला)	१०५
देवईयार (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	घांघलदेवि	"
देवकुमार (साहु जयदेवपुत्र)	घारा (भाण्डागारिक)	७६-३
देवचंद्र (साहु जिणचंद्रपुत्र)	" (नगरी)	८३, ८४
देवधर (भीमाल ज्ञा० श्रे०, गुणचंद्रपुत्र)	घारावर्य (परमार रूपति)	६१, ६३
देवप्रभसूरि (हर्षपुरगन्धीय आचार्य)	घीरण (श्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
देवयोध (विद्वान्)	धुवभट (परमारवंशीय रूपति)	६१
देवलवाट (ग्राम)	धूमराज (परमारवंशीय रूपति)	६१, ६५
देवानन्दसूरि (आचार्य, हर्षपुरगन्धीय)	नदीश्वर { (स्थापत्यविशेष)	२८, ४७
देसल (श्रा० ज्ञा० श्रे०)	नंदीसर }	६८
देसीनाममाला (ग्रन्थ)	नगर (रुद्रनगर, स्थानविशेष)	८१
धंधुक (परमारवंशीय रूपति)	नगरवर (महास्थान)	७६-४
धंधुय "	नगरारय "	२६
धंधुय "	नयचन्द्रसूरि (कृष्णार्जिगन्धीय)	६७
धडलिग (धर्कट ज्ञा०)	नरचन्द्रसूरि (हर्षपुरगन्धीय)	२९
धडली (ग्राम)	" (मलपारी)	४७, ५५
घणचंद्र (ग्राम्वाट ज्ञा० श्रे०)	नरनारायणानन्द (काव्य)	९०
	नरेन्द्रसूरि { (मलपारी)	५३
	नरेन्द्रप्रभसूरि }	२४
	नागदेव (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	६७
	नागपुर	६८

	पृष्ठ		पृष्ठ
नागेन्द्रगच्छ १३, २९, ४१, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ५७, ६४, ६५, ६९, ७२, ७५, ७६, ३, ७९, ९०		पाहुय (प्रा० शा० धे०)	६७
नायलगच्छ (नागेन्द्रगच्छ)	९९	प्राग्वाट, कुल, वक्ष) ८, १५, २१, २५, ३७, ३८, ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६३, ६५, ६६, ६७, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	
निरिन्द्रग्राम	२६	पुंडरीक (पर्वत, शतुजय)	६७
नृपविक्रम संवत् ६९, ७०, ७१, ७३, ७६-१		पुनसीह	७०
नेमड (साहु, बरहुडिया)	६८	पुण्यसिंह	५७, ७६-२
नेहा (धर्कट श्रेणी)	६६	पुनसीह (मलदेवसुत)	७१, ७६
पञ्ज (प्रयुग्मशिखर)	१०२	पूर्णसिंह	६३
पञ्चासर (जिनमंदिर)	२, १५, २६	पुरुषोत्तम (सुनधार)	४७, ५०, ५३
पत्तन (अणहिलपुर)	६९, ७४, ७५, ७६, ७६-४	पूनचंद्र (प्राग्वाट शा० धे०, पासचंद्रपुत्र)	६६
पद्मला (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	७३	पूनड (प्राग्वाट शा० महाजनी, आमिगपुत्र)	६६
पद्मसिंह (प्रा० शा० धे०, बालपुत्र)	६७	पूनदेव (प्रा० शा० धे०, बोसरिपुत्र)	६७
परमलदेवी (वस्तुपाल तेलपालभगिनी)	६०	पूनदेवी (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुलभार्या)	७३
परमार (राजवश)	६१	पूनपाल (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुल)	७३
प्रतापदेवी (मालदेववत्नी)	७४	पूना (प्राग्वाट शा०)	६६
प्रतापमल्ल (राजपुरुष)	८४	" (धीमाल शा०)	६६
प्रतापसिंह (जयतसिंहपुत्र, वस्तुपालपौत्र) २७, २८, ९८	७७	" (प्रा० शा० धे० बोहडिपुत्र)	६६
प्रतीहार (राजवश)	७७	" (श्रेणी)	७६-३
प्रयुग्मशिखर (रैवतगिरि शिखरविशेष) २८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	८०	पूनिग (ओइस० शा० धे०)	६७
प्रयुग्मसूरी (आचार्य)	६७, १०५	पूनुय (प्रा० शा०, पासिलपुत्र)	६६
प्रमार (राजवश)	८१, ८४	पृथ्वीसिंह (पूर्णसिंहपुत्र)	७३-२
प्रयाग (तीर्थस्थान)	६२	पेथड	६३, ७१, ७६
प्रह्लादन (परमार रुपति)	८६	पोरवाड (वक्ष)	९९
" (पण्डित, कुमारशर्मशुभ)	६८	फोिलिणी (ग्राम)	६६
प्रह्लादनपुर (पालपुत्र)	३	बकुलस्वामी (सुनधार)	४७, ५०, ५३
पाण्ड्य (रूपविशेष)	७०	यदरूप (ग्राम)	२७
पाट (मालदेवभार्या)	३८	वर्जर (देश्य)	५
पादलिप्तनगरी	६६	यलदेवि (तेजपालपुत्री)	७१
पालहण (प्रा शा० धे०, जीदापुत्र)	१०८	य घोलाल (मालवचपति)	६१
" (ऊएस० शा० धे०, सोहिपुत्र)	६८	ग्रहदेव (प्राग्वाट शा०)	६६
" (प्रा० शा० महा०)	६६	ग्रहसंति (ग्रहसन्नि यक्ष)	१०८
" (कवि)	६६	ग्रहसरणु (प्रा० शा० धे०, देवलपुत्र)	६७
पाहविविहार (जिनमंदिर)	६६	ग्रहाण (ग्राम)	६६
पाह्ला (प्रा० शा० धे०, धीरणपुत्र)	६६	घाण (कवि)	२०
पासचंद्र (प्राग्वाट शा० धे०)	६६	बोहडि (प्रा० शा० धे०, बावुपुत्र)	६७
पासदेव (धीमाल शा० महा०, बोसरिपुत्र)	६६	भद्रवाटु (आचार्य)	७९
पासधार (प्रा० शा० धे०, साजणपुत्र)	६६	भाडा (ग्राम)	६७
पासिल (प्रा० शा०)	६६	भामा (तेजपालमातुलपुत्र)	७३
पासु (परंत श्रेणी)	६६		

	पृष्ठ		पृष्ठ
मालि (ग्राम)	६७	मालवपति (रूपविशेष)	२४
मायड (साधु)	१०१	मालवभूप (रूपविशेष)	३
मास (कवि)	५२	मालवी (स्त्रीविशेष)	६
मीम (चौलुक्यनृपति, प्रथम)	३, २४, ३५, ८२	मालवेन्द्र (रूपविशेष)	३
" (" , द्वितीय)	६२४ ३६, ३७, ६५, ८५, ९०	" (गुप्त रूप)	१६
मीम (पद्मपति)	६	मुंज (रूपति, धाराधीश)	४१
मीमसिंह (मुराष्ट्रापतिरूपति)	१३	" (विद्वान्)	८२, ८३, ८५
मीमेश्वर (शिवमन्दिर)	२७	मुंडस्थल (ग्राम, महातीर्थ)	६६
मुयनपाल (रूपविशेष)	२७	मुनीन्दुप्रभु (मुनिचन्द्रादि, हर्षपुरगच्छाद्य)	२९
भूतेशवेदम (शिवमन्दिर)	२७	मुमाकीय (छुर ?)	७२
भूमट (चापोक्तनृप)	२	मुरल (रूपविशेष)	५
भृगुकच्छ (भृगुनगर, भृगुपुर)	२७, ९६	मूढेर (ग्राम)	१०८
भृगुनगर (भृगुकच्छ, भृगुपुर)	२६	मूलराज (चौलुक्यनृपति, प्रथम)	२, २४, ३५, ८२
भृगुपुर (भृगुकच्छ, भृगुनगर)	३८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	" (चौलुक्यनृपति, द्वितीय)	६, २४, ३६, ८४
भोज (रूपति, धाराधीश)	३५, ४५	मेदपाट (रूपविशेष)	६
भोला (प्रा० ज्ञा० श्रे०, साजनपुत्र)	६६	" (देश)	५
[म]डाहट (ग्राम)	६७	मोड (ज्ञाति)	७
मयघर (श्रेष्ठी)	७६-३	यशोधवल (परमारवंशीय रूपति)	८२
मय (रूपविशेष)	५	यशोराज (रूपविशेष)	६१
मलघारि (गच्छ)	४७ ५३, ५५	योगराज (चापोक्त रूप)	८३
मल्लदेव (आशाराजपुत्र) १०, १६, २१, २५, २६, २७, २८, ३७, ५७ ५९, ६०, ६३, ६४		रतन (संघाविपति)	३
" (मह. आशाराजपुत्र) ६५, ७६-२ ८६, ८९, ९७		रत्नसिंह (ग्रामाट, ठकुर)	१०१
महधरा (ओहस० ज्ञा० श्रे०)	६७	रत्नादित्य (चापोक्त रूप)	६५
महाक (सं० पेयडमुत)	७६	रत्नादेवी (जयादित्यदेवपत्नी)	३
महादेव (विद्वान्, सोमेश्वरपुरोहित आला)	८५	रथणादेवि (लूथसीहभार्ग)	७३४
महेन्द्रप्रभसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९	राजदेव (श्रेष्ठी)	७१
महेन्द्रप्रभु " ७६-३, ७९		राजपाल (तेजपालमातुलमुत)	७६-३
महेन्द्रसूरि " १३ ६४, ६५		राज्य (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	७३
" (भट्टारक) ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६		राठी (ज्ञातिविशेष)	६६
माउ } (वस्तुपाल-तेजपालमणिनी)	७२, ६०	राणभट्टारक	१०४, १०६
माल } २०		रागिग (प्रा० ज्ञा०, मह)	६३
माघ (कवि)	६६	राणु (ठकुराणी, कलितदेवी माता)	६५
माणिमद्र (ग्रामाट श्रेष्ठी)	३८	रामचंद्र (ग्रामाट ज्ञा० श्रे०, कपचमुन)	४१, ४२, ४८, ५१, ५४, ५६, ७६, ७७
मारव (रूपविशेष)	३८	रामदेव (परमारवंशीय रूपति)	६३
मालदेव (मह) ४४, ४६, ४८, ५१ ५३, ५५, ६९, ७०,		राबडा (ग्रामाट ज्ञा०, मल्लदेवपुत्र)	६३
" (छुर) ७१ ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१, ७६-३		राष्ट्रकूट (राजराज)	६६
मालव (देश) ६१, ८३ ८४, १०१		रासल (ग्रामाट श्रेष्ठी)	८८
मालवनृप (रूपतिनिर्णय)	३५	राहड (साहु, नेमड्युन)	६६
		" (साहु)	६८, ६९

	पृष्ठ		पृष्ठ
रूपादेवि (अथर्वसिंहमार्ग)	७०	लूणवसहिका (जिनमदिर)	७६-१
" (लावण्यसिंहमार्ग)	७५	लूणासिंह (लावण्यसिंह, तेजपालपुर)	६३, ६५
रेवत (रेवत पर्वत)	९९, १०२	लूणासीह (")	७१, ७२, ७६, १, ९६
रेवद (")	१०३	लूणासिंहवसहिका (जिनमदिर)	६५
रेवत (पर्वत)	१५, ७६-२, ७७	लूणासीहवसहिका (")	६७, ७२, ७३
रेवतक (")	२८, ६७, ९०	लूणासीह (मह, लोलासुत)	६५
रेवताग्रि (")	१३	लूणादेवी (लूणिगपत्नी)	७४
रोहडी (ग्राम)	२७	लूणिग (लावण्याग, आशाराजपुर)	२१, २५, ५९
लक्ष्मी (उमारदार्म-पत्नी)	८५		६४, ७५, ७६, ७६-३, ८९
लक्ष्मीघर	२७	लूणिगदेव (")	७४
लक्ष्मण (श्रीवाल जा० धे०)	६६	वधेला राजवरा	१०५
" (शा० शा० धे०)	६६	वड्ड (नृपविशेष)	५
ललितसर (सरोवर)	२७	घटसावित्रीसदन (देवतामन्दिर)	२७
ललितादेवी (वस्तुपालपत्नी)	२७	घनराज (चापाकट)	२, २६
" (मह, वस्तुपालपत्नी)	४४, ४५, ४६, ४८ ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५८, ६२, ६९, ७४, ७६, २, ७६, ४, ९८	घयजुका (वस्तुपाल-तेजपालमणिली)	६०, ७३
ललुचर्मा (विद्वान्)	८२	घरदेव (लूणवाल जा० महा०, साटापुर)	६६
लवणप्रसाद (चौलुक्यकवीय)	६, ७, २५, ६०	घरहुडिया (चौलुक्यविशेष)	६८
" (महाराजाधिराज)	४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६	वलभी (नगरी)	२७
" (महामण्डलेपर, राजक)	६५	वलालदेवि (पूनीहयुता)	७१
लवणसिंह (लावण्यसिंह, लूणासिंह, तेजपालपुर)	४५	वल्लभराज (चौलुक्यवृत्ति)	३, २४, ३५
लवणमादेवि (लूणासीहमार्ग)	७१	वसिष्ठ (ऋषि)	८१
लासण (ओडसवाल जा० धे०, बोहियपुर)	६७	वसिष्ठकुंड (भर्तृदेवित्त कुंड)	६१
लाट (नृपविशेष)	५	वसिष्ठ (स्थानविशेष)	६७
लाटापली (ग्राम)	६८, ६९	" (ऋषि)	८२
लावण्यप्रसाद (लवणप्रसाद, चौलुक्यकवीय)	३६	वसिष्ठ, छत्रकुंड (भर्तृदेवित्त कुंड)	६५
लावण्यसिंह (लूणासिंह, तेजपालपुर)	५७, ६३, ६४, ७५, ७६, २	वसन्तपाल (वस्तुपाल)	९०
लावण्याग (लूणिग, आशाराजपुर)	७, ५७	वस्तुपाल (वस्तुपाल)	१०१, १०५
लापाराम (स्थानविशेष)	१००	वस्तुपाल (मन्त्री, आशाराजपुर)	१०, १२, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३
लाहड (साहु राहडमुत)	६९	" (महामात्र)	४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ६०, ६२, ६३, ६४
लीला (प्राजापत्यशालीय मह)	६५	" (मह)	६५, ६८, ६९, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ७६-४, ७७, ७८, ८६, ८७, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९६, ९७, ९९, १००, १०५, १०७
लीलादेवी (मालदेवमार्ग)	७४	वस्तुपालसर (सरोवर)	२७
लीलुका "	६३		
लीलू "	७०, ७६-२		
लूणिग (लूण, लावण्याग)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५		
लूणसा (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	१०५		
लूणपसाव (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	१०४		
लूणप्रसाद (लवणप्रसाद, चौलुक्य)	९७		

	पृष्ठ		पृष्ठ
बलापय (स्थानविशेष)	१३, २८	बीजापुर	६८
महडा (ओइसवाल ज्ञा० धे० गोसलपुत्र)	६७	वीर (वीरधवलराजा)	८०
बहुदा (ओइसवाल ज्ञा. धे०, सीलपुत्र)	६७	वीरदेव (प्राग्वाट ज्ञा० महा०)	६६
बहुदेव (धर्कट थेछो)	६६	वीरदेव (साहु, जयदेवपुत्र)	६८
बाग्भट (महामंत्री)	१५	वीर्य (श्रीमाल ज्ञा० धे० धिरदेवपुत्र)	६६
भावा (ओइसवाल ज्ञा० धे०, पुनिगपुत्र)	६७	वीर्य (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७
वाजड (कायस्थ)	४६, ४७, ५३, ५३, ५५, ५७	वीसल (श्रीमाल ज्ञा० महा०)	६६
वापल (श्रीमाल ज्ञा०)	६६	" (श्रीमाल ज्ञा० धे० देरापुत्र)	६६
धामलदेवी (मह, चंडप्रसादपत्नी)	७४	वीसलदेव (रूपति)	९६
घालण (ऊएयवाल ज्ञा० धे०, सलखणपुत्र)	६६	वेजलदेवी (वस्तुपालपत्नी)	७४
घाला (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७	वेला (व्यवहारी)	७६-३
घालिग (कायस्थ)	४७, ५०	घैयनाथ (शिवमंदिर)	१६, २६, २७
वालीनाथ (यक्षविशेष)	२६	वेरिसिंह (चापोकटरूप)	२
वाहड (सूत्रधार)	४६, ५५, ५८	घेरिसिंह	२७
" (ओइसवाल ज्ञा० धे०, जसदेवपुत्र)	६७	चोडाग्य (वालीनाथयक्ष)	२६
विक्रम संवत्	४३, ४६, ४८, ५३, ५५, ५८, ६५, ७५	घोसरि (प्रा० ज्ञा० धे०)	६७
विक्रमनृप संवत्	७३	घोहडि (प्रा० ज्ञा० धे०)	६६
विक्रमार्क संवत्	५१	घोहिय (ओइसवाल ज्ञा० धे०)	६७
विजय (सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	व्यास (कवि)	२०, ५२
विजयसिणसुरि (विजयसेनसुरि)	१०७	व्याघ्ररोलि (ग्राम)	२६
विजयसेन (विजयसेनसुरि)	९९, १०३	शकुनीविहार (जिनमंदिर)	३८
विजयसेनसुरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४, १६, २९, ४५, ४७, ४९, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ६९, ७२, ७४, ७५, ७६-३, ७८, ७९, ९०	शङ्ख (संप्रामसिंह रूपति)	१२
विन्ध्यवर्मा (धाराधीन रूप)	८४	शङ्खजय (पर्वत)	१५, २१, २७, ३८, ७७, ९२
विमल (मन्त्री)	१०४, १०५	" (पर्वत, महातीर्थ)	४४, ४७, ४८, ५१, ५३, ५४, ५६, ६८
विमल (शत्रुजय पर्वत)	९०	" (पर्वत, तीर्थ)	७६
विमलउ (मन्त्री)	१०४	" (धवलकस्थित जिनमंदिर)	२६
विमलमंदिर (जिनमंदिर)	१०६	शङ्खजयशैल	९०, ९१
विमलान्नल (शत्रुजयपर्वत)	४६	शङ्खजयमहातीर्थयावतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
विमलाद्रि (शत्रुजयपर्वत)	१५, ७७, ९९	शङ्खजयाद्रि	९८
विरघवल (वीरधवल)	१०५	शङ्खजयावतार (स्थापत्यविशेष)	५८
वीरघवल (त्रैलोक्यवंशीय, रूपति)	७, ८, १०, १३, १६, १८, २५, २६, २८, ३२, ३६, ३७, ३८, ६०, ६१, ६४, ९९, ९९	शान्तिपुरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१३, २९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ७६-३, ७९
" (महाराज)	४४, ४६, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६	ग्राम्भशिसर (रैवतगिरिशिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
" (राणक, महामण्डलेश्वर)	६५	शालिग (प्राग्वाटज्ञातीय, ठरुर)	६५
श्रीकल (व्यवहारी)	७६-३	शालिगमिनालय	२७
बीजा (थेछी)	७६-३	हार (सर, चंडप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	८८

	पृष्ठ		पृष्ठ
शैलादित्य (रूप)	१५	साजण (साधु)	६८
श्रीधांधलेध्वरदेवीयकोटडी (स्थानविशेष)	६७	, (दहाधिर)	१००, १०१
श्रीपाल (ग्रामाटथेष्ठी, सावलपुत्र)	६६	साजन (श्रा० ज्ञा० थ्रे०)	६६
श्रीमाल (शक्ति)	६६	साटा (ऊएसवाल ज्ञा० महा०)	६६
श्रीमातामहबुग्राम	६७	सादा (धर्कटथेष्ठी, पासुपुत्र)	६६
प(पं)गार (सोरठपति)	१००	, (श्रा० ज्ञा० थ्रे० आसलपुत्र)	६६
संग्रामसिंह (बाख, सिन्धुराज)	१२, ४१	सामंतसिंह (रूप)	६२
संतोपा (ठकुराजी, मोढ ज्ञा० ठकुर आसा-पत्नी)	७३, ७४	सालग्राम	६७
संमेतमहातीर्थ (महानीर्थ)	४८	साब्हा (धर्कटथेष्ठी, नेहापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थवातारप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	४५, ५४	, (श्रा० ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थवातारप्रधानप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	४७	, (श्रीमाल ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतशिखरप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५८	सावड (ग्रामाटथेष्ठी)	६६
संमेतावतार (स्थापत्यविशेष)	५१	सावदेव (ग्रामाटशासीय, ठकुर)	६५
संमेतावतारमहातीर्थप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५६	सावदेव (श्रा० ज्ञा० थ्रे०, राडुबपुत्र)	६६
संमेष (समेतशिवर पर्वत)	१०१, १०२	साहणीय (श्रा० ज्ञा०, दूगसरणपुत्र)	६६
सत्यपुर (नगर)	१५, २७, ६८	साहिलवाडा (ग्राम)	६७
सत्यपुरावतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	सिंहण (बहुवर्णयव)	३८
सदमल (मालदेवसुता)	७०	सिंहाराज (सधपति, सरवणपुत्र)	६८
सपादलक्ष (देश)	८३	सिंहलग्राम	२६
सरवण (सधपति)	६८	सिद्ध (सिद्धराज) }	७६
सर्वदेव (निदान)	८३, ८४	सिद्धसुप (,) }	८३
सलराज (ऊएत० ज्ञा० थ्रे०)	६६	सिद्धराज (चौलक्यरूपति)	९, ३७, ८९
, (ओइस० ज्ञा० थ्रे०)	६६	सिद्धपि (आचार्य)	७८
सलखणदेवी (सुहृदवीहृपत्नी)	७५	सिद्धाधिप (सिद्धराज)	४
सहजल (मालदेवसुता)	७०	सिद्धेश (सिद्धराज)	३७
सहजिग (बायस्थ)	४७, ५०	सिद्धेशिता (सिद्धराज)	७९
सहदेव (साहु, बरहुडिया)	६८	सिन्धु (देश)	८३
सहसा (सधपति)	६८	सिन्धुराज (बाय, सम्राजसिंह)	१२
सहसाराज (स्थापत्यविशेष)	१०२	, (बच्छपति)	३४
संतुय (ग्रामाट ज्ञा० थ्रे०)	६६	सिरिमाल (श्रीमालकुल)	१००
सांयकुमार (ग्रामाटशिवर)	१०२	सिद्धग्राम	६७
साइदे (सं० सहसापत्नी)	६८	सीता (सोमपत्नी)	९, ७६, ७६-२, ८९
साउदेवी (वस्तुपाल वेंजगल भूमिनी) }	७२	सीतादेवी (मह, सोमपत्नी)	७४
साऊ (,) }	६०	सीलण (ओदसवाल ज्ञा० थ्रे०)	६७
सागर (ग्रामाटशासीय, ठकुर)	६५	सुकुतकीर्तिकल्लोलीनी (कृतिकविशेष)	१६
सागर (ऊएसवाल ज्ञा० महा० धांपपुत्र)	६६	सुनयय (सं० सहसापुत्री)	६८
साग्रण (ग्रामाट ज्ञा० थ्रे०)	६६	सुमट (वति)	८५
		सुमटवर्मा (रूप)	२६
		सुमतीह (सोमतिह)	१०७
		सुरठ (देश)	१००
		सुराप्पपति (भीमसिंहनृपति)	१३

सुरिताण (सुत्तान)	१०४	सोलंकि (राजवंश)	१०४
सुवन्धरेह (नदी)	९९	सोल (सोलशर्मा)	८२
सुहृदसीह	७५	सोलशर्मा (विद्वान्)	८१
सुहृदादेवी (मह वेजपाल द्वितीयभार्या)	७३, ७४	सोहगा (वरतुपाल-वेजपाल-भगिनी)	६०, ७३
„ (सुहृदसीह पत्नी)	७५	सोहि (ऊएसवाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सुमिग (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	सोहिय (प्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६
सुर (मन्त्री, चण्डप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	९७६ १	सौवर्णगिरि (पर्वत)	६९
सुहृवदेवि (जयतमिहभार्या)	७०, ९८	स्तम्भतीर्थ (पुर नगर, स्थान)	१२, २७ २८, ४४, ४६, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ७६ ३, ९६
सेचुज (शत्रुजय)	१०५	स्तम्भनक (ग्राम)	१६, २६
सोखु (मह वरतुपाल द्वितीयभार्या)	५८	स्तम्भनकतीर्थ (स्तम्भतीर्थ)	४८
सोखुका (, ,)	४६, ४८, ५०, ५१, ५८ ६९	स्तम्भनकपुर (ग्राम)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४ ५६
सोभनदिउ (सोभनदेव, सुनधार)	१०६	स्तम्भनपुर (स्थानविशेष)	१५
सोभनदेउ („ „)	१०६	स्तम्भपुरीय ध्रुव (जयतमिह)	४७, ५०
सोमा (माण्डगारिक)	७६-३	स्त्राजण (प्रा० ज्ञा० श्रे०, वीर्यपुत्र)	६७
सोम (मन्त्री चण्डप्रसाद-द्वितीयपुत्र)	९, २१, २५ २८, ३७	ढंडाउद्र (ग्राम)	६६
„ (मन्त्री, ठकुर)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६४	ढंडावडा (ग्राम)	१०७
„ (मह)	६५, ६९ ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६ १, ७६ २, ७६-३, ७६ ४, ८६, ८८	दधीयावापी	६८
सोम (धर्कटश्रेष्ठी बहुदेवपुत्र)	६६	हम्मीर (नृपविशेष)	५, ६
सोम (नरेंद्र)	१०४ १०५	हरिभद्रसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४, २९, ३७, ६४, ६५, ७६-२, ७६-३, ७९, ८९, ९०
सोमदेव (सुनधार)	४७, ५०, ५३	„ (मठारक)	४५, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६
सोमशर्मा (विद्वान्)	८२	हरिमण्डप (स्थापत्यविशेष)	४७
सोमशर्मा (सोमेश्वरदेव, पुरोहित)	८५ ९०	हरिया (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६
सोमसिंह (नृपति, धरावर्षेष्ठ)	६२	हरिहर (कवि)	८५ ९०
सोमसिंहदेव (महामण्डलेश्वर)	६५, ६७	हर्षपुरीयगच्छ	२९
सोमेश्वरदेव (ठकुर, गूजरेश्वर पुरोहित)	४५, ५०, ६५, ८५	हान्दय (साहु जयदेवपुत्र)	६९
सोरठ (देव)	९९, १००	हृणी (ज्ञोविशेष)	६
		हेटडंजीग्राम	६७
		हेमचन्द्र (आचार्य)	८६
		हेमा (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, हरियपुत्र)	६६